श्रीः

प्रयोग-साहस्री ।



(१००० अनुभूत प्रयोगों का संग्रह)

(उत्तर खण्ड)

तैस्तैर्वैद्यवरैः प्रोक्ताँस्तत्र तत्र प्रकाशितान् ।
सुप्रयोगानाकलय्य साहस्रीयं प्रकाशिता ॥

संकलनकर्ता—

रामदेव त्रिपाठी

भिषक् (आ० वि० स०) वैद्य शास्त्री ।



पूर्व खण्ड १॥)	}	✲	{ सम्पूर्ण पुस्तक
उत्तर खण्ड १॥)	}		{ का मूल्य ३)

श्रीधन्वन्तरये नमः ।

प्रयोग-साहस्री ।



(१००० अनुभूत प्रयोगों का संग्रह)

(उत्तर खण्ड)

संकलनकर्ता—

रामदेव त्रिपाठी

भिषक् (आ० वि० स०) वैद्यशास्त्री ।



१९८६ वि०

१९२९ ई०

प्रथम संस्करण] [इस खंड का मू० १।)

पूरी पुस्तक (दोनों खण्ड) ३)

वैद्यक की उत्तमोत्तम बातें

बताने वाला

संसार के नये तजुर्बों के समाचार देने वाला

 **चिकित्सक** 

 **वैद्यक मासिक पत्र** 

१—आश्विन शुक्ला १० सं० १९८६ से इसका मूल्य २) से घटकर १।) हो गया है।

२—उपहार में सिर्फ छः आने डाक खर्च देने पर १९७५ का चिकित्सक का पूरा फ़ाइल मुफ्त मिलता है।

३—पुराने फाइल सब नहीं हैं। जो बाक़ी हैं उनके पूरे दाम देने होंगे।

४—नमूना मुफ्त मिल सकता है।

पत्रव्यवहार का पता—

व्यवस्थापक—चिकित्सक,

नवाबगञ्ज-कानपुर।

प्रयोगसाहस्री के उत्तर खण्ड की

(रोगानुसार)

प्रयोग-सूची।



क्षय रोग।

चर्म रोग।

छर्दि रोग (कय होना)

ज्वर (बुखार)

दन्त रोग।

धातुरोग (कमजोरी)

नपुंसकता (नामर्दी)

नासिका रोग।

नेत्र रोग।

पित्त विकार।

प्रमेह रोग।

फुटकर औषधियाँ।

प्रयोग-सूची समाप्त ।

  

प्रयोग-साहस्त्री ।

(दश प्रयोगशतकों का संग्रह)

[उत्तर खण्ड]

छठा शतक ।

५०१—केशरञ्जन फाड़ा ।

चौकिया सोहागा २॥ तो० कपूर १। तो०

विधि—एक सेर गरम पानी में दोनों को पीसकर डाल दे, फिर पानी को गरम करे। खूब उबलने लगे तब ठंढा करके शीशी में भर ले।

सेवनविधि—इस जल को तैल की तरह बालों में लगाना। थोड़ी देर बाद सिर धो लेना।

रोग—बालों का पकना। बालों का कड़ापन। बालों का कम बढ़ना।

नोट—इसके ५ शतक पूर्व खण्ड में हैं।

५०२—गूलर का मुरब्बा ।

गूलर के कच्चे फल १ सेर   शकर २॥ सेर

विधि—१ सेर पानी में फलों को उबाले। कुछ पक जाने पर इसी जल में शकर मिलाकर चाशनी बनावे। शहद की तरह चाशनी बन जाने पर गूलर के फलों को इसी चाशनी में मिलादे। ८ दिन के बाद काम में लावे।

मात्रा—१ से ३ तोला तक।

समय—सुबह शाम।

रोग—पेट की जलन, मूत्रकृच्छ्र, पेशाब की जलन।

५०३—अजीर्णहरीवटिका ।

मूली का स्वरस	ऽ। सेर	नवसादर	१ सेर
छोटी हरड़	ऽ।	जीरा	ऽ।
अजवायन	ऽ।	अजमोद	ऽ।
पकी इमली का गूदा	ऽ।	कौड़ी की भस्म	ऽ।
कालीमिर्च	ऽ।	सेंधा नमक	ऽ।
अमलवेत	ऽ।	भूनी हींग	ऽ-

विधि—सबको महीन पीसकर मिट्टी की हांडी में भरदे। ऊपर से आक का दूध इतना भरदे कि सब दवा भीग जाय। इस हांडी को धूप में रखकर दवा सुखा ले और पीस कर कपड़े से छान ले। इतना हो जाने पर मूली की जड़ का स्वरस निकाले। इस स्वरस में नवसादर डालकर अग्नि

पर पकावे। कुछ गाढ़ा होने लगे तब सूखी दवा का चूर्ण मिला दे। गोली बनाने लायक पाक हो जाने पर ठंढा करके मूंग बराबर गोली बनाले। यह दवा लौह की कड़ाही में पकाना चाहिये।

मात्रा—१।२ गोली।

समय—जब आवश्यकता हो।

रोग—अजीर्ण, शूल, अजीर्ण से होने वाले रोग, बवासीर, हैजा, मंदाग्नि, कासश्वास।

विशेष—यह गोली खाने में बड़ी स्वादिष्ट होती है। नियमित रूप से सेवन करने में साधारण रोगों का आक्रमण सहसा नहीं होने पाता।

५०४—प्लीहा की अव्यर्थ दवा।

उपरोक्त अजीर्णहरी वटिका २० तोला गोमूत्र ५ सेर
ऊँटनी का मूत्र १० सेर

विधि—एक चीनी के पात्र में सबको भर कर रख छोड़े। गोलियों को पीसकर मिलावे। ७ दिन के बाद इसे हिलाकर बोतलों में भर ले। बोतल हिलाकर ही रोगी को दवा पीने के लिये दे।

मात्रा—२ तोला।

समय—प्रातःकाल।

रोग—प्लीहा, उदरव्याधि, कब्ज।

५०५—कासांतक अवलेह ।

काकड़ासिंगी	२ तो०	कतीरा गोंद	२ तो०
मौरेठी का सत	३ ,,	बबूल का गोंद	३ ,,
खसखस	२ ,,	कालीमिर्च	१ ,,

विधि—सबको पीसकर शहद में मिलाकर रख लेना ।

मात्रा—३ से ६ माशा तक ।

समय—दो दो घंटे में ।

रोग—सूखी खांसी ।

५०६—यवक्षारादिवटी ।

यवक्षार	३ माशा	अकरकरहा	३ माशा
लौंग	३ ,,	अफीम	३ ,,
बहेड़ेकाबकला	३ ,,	भुना सोहागा	३ ,,

विधि—सबको महीन कूट कर अदरख के रस के साथ पीसकर गोला बनावे। इस गोले को धतूरे के फल के भीतर रखकर कपड़े से बांध दे। उसके ऊपर एक अंगुल मोटा गूंधा हुआ गेहूं का आटा लगा दे। आटे के ऊपर से एक अंगुल मोटी मिट्टी का लेप करे। इस गोले को सुखाकर अग्नि में तपावे। जब ऊपर की मिट्टी पककर लाल हो जाय तब निकाल ले। ठंढा होने पर दवा और धतूरा का फल सब पीस ले। काली मिर्च के बराबर गोली बनावे।

मात्रा—१।२ गोली ।

समय—सुबह शाम ।

अनुपान—दूध ।

रोग—खांसी, श्वास, अतिसार ।

५०७—सिंदूरादि चूर्ण ।

रससिंदूर	२ तो०	कूठ	२ माशा
सोंठ	२ माशा	नागरमोथा	२ ,,
मिर्च	२ ,,	पीली सरसों	२ ,,
छोटी पीपल	२ ,,	इन्द्रयव	२ ,,
कुटकी	२ ,,	सोहागा	२ ,,
नीम की छाल	२ ,,	लाल चन्दन	२ ,,
सिंगरफ	२ ,,		

विधि–पहले रससिंदूर और सिंगरफ को अलग पीस ले। इसी में बाकी चीजों का महीन चूर्ण करके मिला दे।

मात्रा—२ रत्ती ।

अनुपान—ताजा जल या कोई ज्वरनाशक काढ़ा ।

समय—सुबह शाम ।

रोग—हर प्रकार का ज्वर । यह विषमज्वर में विशेष लाभप्रद है ।

५०८—अमृताद्यवलेह ।

हरी गिलोय	१ सेर	अनन्तमूल	१ सेर
भिलावां	१ सेर	वाकुची	ऽ।
धनियां	ऽ।	सौंफ	ऽ।
नीम की छाल	ऽ।	त्रिफला	ऽ।
हलदी	ऽ।	मँजीठ	ऽ।
पंवार के बीज	ऽ।	पित्त पापड़ा	ऽ।
काले तिल	ऽ।	खैर की छाल	ऽ।
चिरायता	ऽ।	विजय सार की छाल	ऽ।

विधि—सबको कुचल कर ३० सेर पानी में पकाना। जब पांच सेर पानी बच रहे तब छान कर काढ़ा ले लेना और कीट फेंक देना। पांच सेर शकर मिलाकर इस काढ़े को लोह की कढ़ाई में पकाना। पकाते समय नीचे लिखी औषधियां डाल देना।

तज	२ तोला	पत्रज	२ तोला
नाग केशर	,,	छोटी इलायची	,,
सफेद चन्दन	,,	लाल चन्दन	,,
सोंठ	,,	मिर्च	,,
छोटी पीपल	,,	सौंफ	,,

गाढ़ा हो जाने पर उतार कर मिट्टी के पात्र में रख छोड़ना

मात्रा—१ तोला।

समय—प्रातःकाल शौचके बाद ।

परहेज—दण्ड कसरत करना, धूप या अग्नि से तपना, खटाई, मांस, दही, छाछ, स्त्री संग, मार्ग चलना, तेल लगाना मना है । रात्रि को जागरण दिन को शयन भी करना न चाहिये ।

पथ्य—दूध, घी, गेहूं की रोटी ।

रोग—हर प्रकार के कुष्ठ, वातरक्त, उपदंश, सुजाक के विकार, बवासीर, विसर्प, खुजली, श्वास, कफके विकार ।

५०६—लिसोडापाक ।

लिसोडा के सूखे फल	१ सेर	मिश्री	१ सेर
दालचीनी	१ तोला	इलायची	१ तोला
कायफल	१ तोला	लौंग	१ तोला

विधि—सबको महीन पीस कर शहद में सान कर अव-लेह बनाले ।

मात्रा—१ से ३ तोला तक ।

समय—सुबह शाम ।

रोग—श्वास, कफ की खुश्की, कमर का दर्द, वीर्य का पतलापन, शारीरिक निर्बलता ।

५१०—पीपलीचूर्ण ।

पीपल वृक्ष के फलोंको छाया में सुखाकर पीस ले । कपड़े से छान कर बराबर की मिश्री मिला ले ।

मात्रा—१ तोला ।

अनुपान—दूध और शहद ।

रोग—पीपली पाक की भांति । इस चूर्ण में पुत्रोत्पादिनी शक्ति होती है ।

५११—पित्तघ्नअवलेह ।

पीपल वृक्ष की कोमल फुनगी २० तोला ।

मिश्री २० तो० श्वेत इलायची के बीज १ तोला

विधि—पीपल की फुनगियों को आधा सेर पानी में मिलाकर पकाना । पाव भर पानी शेष रहने पर छान लेना । इस काढ़े में मिश्री मिलाकर चाशनी करना । चाशनी हो जाने पर सीझी हुई फुनगियां डाल देना । इलायची का चूर्ण उतारते समय अवलेह में मिलाना ।

मात्रा—१ से २ तोला ।

समय—प्रातःकाल ।

अनुपान—खाकर ऊपर से दूध पी लेना ।

रोग—पित्त के विकार, दिल दिमाग की कमजोरी, ज्वर ।

विशेष—यह अवलेह पीपली पाक की भांति छोटे बड़े, स्त्री और पुरुष सभी के लिए लाभप्रद है ।

५१२—कृमिघ्नचूर्ण ।

नागरमोथा	१ तो०	विलासपापड़ा	१ तो०
छोटी पीपल	१ ,,	अजवायन	१ ,,
पीपलामूल	१ ,,	सोंठ	१ ,,
वायविडंग	१ ,,	कपूर	१ माशा

विधि—सब को एक साथ पीसकर कपड़े से छान ले ।

मात्रा—६ माशा या एक तोला ।

अनुपान—जल ।

समय—सुबह शाम ।

रोग—पेट के कृमि (पटोर) ।

५१३—तंदुलादिवटिका ।

चावल	१ तोला	चूना कलई	१ तो०
गंधक	१ ,,	नवसादर	१ ,,
मूली के बीज	१ ,,	भुनी हींग	१ माशा

विधि—सबको पीसकर घीग्वार के रस में खरल करे । चने बराबर गोली बनावे ।

मात्रा—१ गोली ।

अनुपान—ताजा जल ।

समय—सुबह शाम ।

रोग—पित्त की खट्टी कै होना, पेट का दर्द, उबकाई आना, छाती की जलन ।

५१४—विषमज्वरांतकचूर्ण ।

कालीमिर्च १ तो० तुलसी पत्र का रस ५ तो०

विधि—दोनों को एक में मिलाकर ८ प्रहर घोटना ।

मात्रा—१ रत्ती ।

समय—ज्वर आने से ३ घंटा प्रथम । प्रति घंटा में एक मात्रा जब तक ज्वर आने की आशंका रहे खाता रहे ।

अनुपान—मधु और तुलसी का रस ।

रोग—ज्वर, पारी का ज्वर, गर्भिणी स्त्री का ज्वर ।

५१५—द्रोणपुष्पीयोग ।

गूमा के पत्ते १ तोला कालीमिर्च १ तोला

विधि—दोनों को घोटकर मटर बराबर गोली बनावे ।

मात्रा—१ गोली ।

समय—अनुपान—ऊपर की भांति ।

५१६—करंजादिवटी ।

करंजा की मींगी	२ तो०	बबूल की पत्ती	२ तो०
नीम की पत्ती	१ ,,	सफेद जीरा	६ माशा
अफीम	४ माशा	कालीमिर्च	१ तो०

विधि—तुलसी के पत्तों के स्वरस के साथ सबको पीस कर चना बराबर गोली बनावे । ज्वर रोकने के लिए पारी आने के ४ घंटे पहिले से प्रति घंटा १ गोली जल से दें ।

५१७—आमलक्यादिवटी ।

सूखा आंवला	२ तोला	कंजा के पत्ते	१ तो०
सेंधा नमक	६ माशा	भुनी हींग	१ माशा

विधि— सबको नींबू के रस में घोट कर छोटे बेर के बराबर गोली बनावे ।

मात्रा—१ गोली ।

समय—ज्वर आने से प्रथम ४ घंटे तक हर घंटे में १।१ गोली पानी से दे ।

५१८—पीपली पाक ।

पीपल वृक्ष के फल	१ तो०	घी	१ तो०
मिश्री	२ ,,	दूबकी पत्ती	१ ,,

विधि—पीपल के फलों को महीन पीसकर चूर्ण करे और घी में भून ले । दूब की पत्ती को भंग की तरह सिल पर पीस कर एक छटांक पानी में घोलकर छान ले । मिश्री मिलाकर थोड़ा गरम करके भुने हुये पीपली के चूर्ण के साथ मिलाकर हलुवा बना ले ।

मात्रा—यह एक मात्रा है ।

समय—प्रातःकाल ।

रोग—प्रमेह, प्रदर, कमर का दर्द, मुंह के छाले, बालकों और गर्भवती स्त्रियों के लिये यह पाक बहुत लाभप्रद है ।

५१६—सिरस क्वाथ।

सिरस की छाल १ तोला जल आध सेर

विधि—दोनोंको पकाना। १ छटाँक रहने पर छान लेना।

मात्रा—यह एक मात्रा है।

समय - प्रातःकाल।

रोग—पेट के कीड़े, जलोदर।

५२०—हुचकी की दवा।

उड़द १ माशा हींग ४ रत्ती

विधि—दोनों को मिलाकर चिलम में रख कर इनका धुवां पीवे। इससे हिचकी फौरन बन्द होगी।

५२१—करील का लेप।

करील की मुलायम फुनगी ऽ- बकरी का दूध ऽ-

विधि—करील को दूध में पीस कर पकालो। हलकी गरम पुल्टिस अंडकोष में चढ़ाकर कपड़े से बांध दो।

समय—सुबह शाम। एक घंटा बाद लेप खोल कर गरम पानी से धो दे और घी लगादे।

रोग—अंडकोष का बढ़ना और दर्द करना।

५२२—विड़ंगादि क्वाथ।

वायविडंग	१ तोला	चिरायता	१ तोला
दंती	,,	बड़ी हरड़ का छिलका	,,

बहेड़े का छिलका	१ तोला	सूखा आंवला	१ तोला
निशोथ	,,	इन्द्रायण की जड़	,,
हलदी	,,	दारु हलदी	,,
चीत	,,	पलास का बीज	,,

विधि—सबको जवकुट करके ६ मात्रा बनावे । एक मात्रा को आध सेर पानी में औटा कर काढ़ा बनावे। एक छटाँक जल शेष रहने पर छान कर पिये ।

समय—प्रातःकाल ।

रोग—पेट के कीड़े, ज्वर, वमन ।

५२३—शिलादि तैल ।

मैनसिल	१ तोला	गंधक	१ तोला
हलदी	१ तोला	सरसों का तैल	३२ तो०
धतूरेकेपंचांगका स्वरस	३२ तोला	सादा जल	१२८ तो०

विधि—तीनों दवा पीसले । तैल, स्वरस और जल मिलाकर कड़ाही में पकावे ।

सेवन विधि—कान को नीम की पत्ती के काढ़े से धोकर ४।५ बूंद तैल कान के भीतर डालना । यह तैल सायंकाल सूर्यास्त के बाद कान में डालना ।

रोग—कान के भीतर का नासूर ।

५२४—खांसी की चटनी।

गेहूं का निशास्ता	६ माशा	बहेड़ा का छिलका	६ माशा
		मौरेठी	,,
बबूल का गोंद	,,	वंशलोचन	,,
गुल गाजवां	,,	शकरति गाल	,,
गुलवनफसा	,,	गुर्च का सत	,,
अनार का छिलका	,,	खतमी	,,
उन्नाव	,,	चांदी के वर्क	,,

विधि—औषधियों का चूर्ण करके कपड़े से छानले। चांदी के वर्क घोट ले। फिर शहद में सान कर अवलेह जैसा बनाले।

मात्रा—३ माशा से १ तोला।

समय—दिनमें ४।५ बार।

रोग—हर प्रकार की खांसी, ज्वर, जुखाम।

५२५—खुजली की दवा।

नैनिया गंधक	१० तोला	चूना कलई	२० तोला

विधि—चूर्ण करके तीन सेर जलमें पकाना। पकाने का पात्र कलईदार हो। आधा पानी जल जाने पर उतार लेना। १२ घंटे रख कर निर्मल जल निकाल कर शीशी में भर लेना।

सेवन विधि—दाद और खाज को साफ धोकर यह अर्क लगाना।

रोग—हर प्रकार की खुजली, दाद।

५२६—धातु संजीवनी बटिका।

सोने के वर्क	१ तोला	चांदी के वर्क	३ तोला
कस्तूरी	२ तोला	केशर	४ तोला
इलायची के बीज	५ तोला	जायफल	६ तोला
वंशलोचन	[illegible] तोला	जावित्री	८ तोला
शुद्ध कुचला	१० तोला	गुर्च का सत	४ तोला

विधि—पत्थर की खरल में केशर, कस्तूरी और चांदी सोने के वर्क डाल कर पीस ले, अन्य औषधियां महीन पीस कर खरल में डालदे। अर्क गुलाब में तीन दिन तक घोटकर १।१ रती की गोली बनावे।

मात्रा—१ या २ गोली।

अनुपान—कमजोरी, क्षय और प्रमेहमें दूध से, शिथिलता में पान के साथ।

समय—सुबह शाम। ८० दिन तक खाना चाहिये।

रोग—शुक्रदौर्बल्य। प्रमेह। क्षय। शिश्नेन्द्रिय की शिथिलता।

५२७—नया केशकल्प।

चाकसू	१ तोला	मुरदासंख	१ तोला

विधि—दोनों को अलग अलग पीस छान कर एक में मिलावे। गरम जलसे घोल कर सफेद बालों पर लगावे या बालों को उस्तरे से बनवाकर दवा को लगावे।

रोग—बालों का सफेद होना।

५२८—कंकुष्ठवटी ।

मुरदा संख	२ तोला	सोंठ	२ तोला
आमा हलदी	१ तोला	अकर करहा	१ तोला

विधि—मुरदा संख को अदरख के रस से तीन वार घोट कर सुखाले । इस प्रकार यह शुद्ध हो जायगा । अन्य दवाइयों को महीन पीस कर इसी में मिलाले, फिर शहद से सान कर मटर बराबर गोली बनावे ।

मात्रा—१ गोली ।

समय—सुबह शाम ।

अनुपान—जल के साथ गोली निगल जाय ।

रोग—उपदंश ।

पथ्य—चना की रोटी, घी ।

परहेज—नमक, खटाई, तैल, गुड़, लालमिर्च, दही न खाय ।

५२९—दुद्धी का प्रयोग ।

दुद्धी का पंचांग	६ माशा	शकर	२॥ तोला

विधि—आध पाव गाय के दूध में पीस कर शकर मिलाकर पिये । जहां ताजा दुद्धी न मिले वहां छाया में सूखी हुई दुद्धी ३ माशा लेना चाहिये ।

समय—नित्य प्रातःकाल । ४९ दिन तक ।

रोग—निर्बलता, धातु क्षीणता, कास और श्वास, प्रमेह।

विशेष—इसके सेवन से धातु पुष्ट होता है। यह रसायन है।

५३०—वासादिकाथ।

वासामूल	१ तोला	नागरमोथा	१ तोला
कुटकी	१ ,,	हरी गिलोय	१ ,,
नीम की छाल	१ ,,	परवल के पत्ते	१ ,,
लाल चन्दन	१ ,,	सफेद चन्दन	१ ,,
कुड़ा की छाल	१ ,,	इन्द्र जौ	१ ,,
आंवला	१ ,,	चीत	१ ,,
चिरायता	१ ,,	सोंठ	१ ,,
गोरखमुंडी	१ ,,	त्रिफला	१ ,,

विधि—सबको जबकुट कर के आठ पुड़ियां (मात्रा) बना लेना। एक मात्रा आध सेर पानी में पकाना। एक छटाँक शेष रहने पर छान कर पीना।

समय—प्रातःकाल।

रोग—आंखों का दुखना, रतौंधी आना, आंखों की खुजली, पानी बहना, आखों के प्रायः सभी रोगों पर इसके सेवन से लाभ होता है।

५३१—मृदुविरेचन चूर्ण ।

निशोत	१ तो०	सनाय	१ तो०
मिश्री	१ ,,	सफेद मूसली	१ ,,
सोंठ	१ ,,	पुदीना सूखा	१ ,,

विधि—सबको महीन पीस ले ।

मात्रा—६ माशा ।

अनुपान—जल ।

समय—सोते समय ।

रोग—कब्ज ।

५३२—रक्तातिसार की दवा ।

अफीम ३ माशा खाने का ताजा चूना ३ माशा

विधि—दोनों को घोटकर १।१ रत्ती की गोली बनावे ।

मात्रा—१ गोली ।

समय—सुबह, शाम ।

रोग—आंव के दस्त आना । खून मिला दस्त आना ।

५३३—हिंग्वादिवटी ।

हींग भुनी	३ माशा	शुद्ध अफीम	३ माशा
सफेद कत्था	३ ,,	कालीमिर्च	३ ,,

विधि—सबको नीबू के रस से घोटकर मूंग बराबर गोली बनावे ।

मात्रा—१ गोली।

समय—दिन में ३।४ वार।

अनुपान—ताजा जल।

रोग—रक्त मिले हुए दस्त आना। पेट का शूल।

५३४-कम्पिलाद्यवलेह।

कबीला	१ तो०	सोंठ	१ तो०
सौंफ	१ ,,	जीरा	१ ,,
पुराना गुड़	८ ,,	कपूर	१ माशा

विधि—सबको एक साथ जलमें पीसकर छोटे बेर बराबर गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली।

अनुपान—जल।

समय—प्रातःकाल।

रोग—पेट के कीड़े।

५३५—वातघ्नतैल।

तिल का तैल	३॥ तो०	लहसुन	१ तो०
अजवायन	१ ,,	छोटी पीपल	६ माशा
कड़ुवा कूट	१ ,,	अफीम	१ ,,

विधि—सबको छोटे छोटे टुकड़े कर के तिल के तेल में

डाल के पकावे। पक जाने पर छान ले। इस छने हुए तेल में अफीम डालकर थोड़ा पकाले। दर्द की जगह में इस तैल की मालिश करे। ऊपर से महुआ के पत्ते गरम करके बांधे।

रोग—शिरदर्द। वायु की पीड़ा।

५३६—सफेदसुरमा।

फिटकरी ऽ। शोरा ऽ।

विधि—दोनों को एक में मिलाकर कड़ाही में रखकर मंदी आंच से पकावे। निर्धूम हो जाने पर उतार ले। पकाते समय लकड़ी से चलाता रहे। यह सफेद रंग की भस्म होगी। रात्रि को सुरमें की भांति सलाई से आंखों में लगावे।

रोग—माड़ा, फूली।

५३७-बालकों के चुन्ने की दवा।

अखरोट की मींगी ३ माशा सुबह शाम खिलाना।

५३८—लकवा की दवा।

अखरोट की मींगी का तैल लकवा मारे अंग में रात्रि को मर्दन करे।

५३६—पौष्टिकचूर्ण।

अजवायन ५ तोले खसखस ५ तोले

विधि—दोनों को एक में पीसकर चूर्ण बनावे ।

मात्रा—१ माशा ।

समय—सुबह, दोपहर, शाम ।

अनुपान—शहद में मिलाकर चटाना ।

रोग—श्वास, कास, मगज की कमजोरी, गर्भिणी स्त्री की सूखी वमन ।

५४०—निम्बादिवटी ।

नीम की पत्ती	२ तो०	सोंठ	१ तो०
कालीमिर्च	१ ,,	छोटी पीपल	१ ,,
सेंधानमक	१ ,,	काला नमक	१ ,,
सफेद जीरा	१ ,,	काला जीरा	१ ,,
भुनी हींग	६ माशा	कपूर	३ मासा

विधि—सबको कागजी नीबू के रस में पीसकर झरबेरी के बेर के समान गोली बनावे । गोलियों को छाया में सुखाना ।

मात्रा—१ गोली

अनुपान—ताजा जल ।

समय—सुबह शाम ।

रोग—इसके नित्य के खाने से प्लेग रोग का आक्रमण नहीं होता ।

५४१–तुलस्यादिवटी ।

काली तुलसी के बीज	१ तो०	अर्क पुष्प	१ तो०
भरवा की पत्ती	१ ,,	लटजीरा की जड़	,,
सफेद मिर्च	,,	नीम की कोंपल	,,
कचनार की छाल	,,	कपूर	,,

विधि—पानी के संयोग से सबको पीसकर मूंग बराबर गोलियां बना ले।

मात्रा—२।२ गोली।

समय—सुबह शाम।

अनुपान—जल।

रोग—प्लेग। निरोगी पुरुष इसका सेवन करता रहे तो उसे प्लेग होने का भय नहीं रहता।

५४२–दशमूलादिक्वाथ ।

दशमूल	१ तो०	भारंगी	१ तो०
सोंठ	,,	पोहकरमूल	,,
ब्राह्मी	,,	चिरायता	,,
नागरमोथा	,,	गज पीपल	,,
काकड़ासिंगी	,,	कच्चूर	,,
चीत	,,	बनफसा	,,
रासना	,,	वच	,,
छोटी पीपल	,,	देवदारु	,,

पीपलामूल	१ तो०	कुड़ा की छाल	१ तो०
बासाकी जड़	,,	कायफल	,,
लौंग	,,	अर्कमूल की छाल	,,

विधि—दो तोला दवा को आधा सेर पानी में काढ़ा पकाना। एक छटांक शेष रहने पर छानकर पिलाना। शाम को इसी दवा को दुबारा औटाना।

समय—सुबह, शाम।

रोग—सन्निपातज्वर, पीतज्वर, वातभ्रम, शून्यता, अपस्मार, सम्पूर्ण वातविकार।

५४३—दाद की दवा।

फिटकरी	१ तो०	साबुन	२ तो०
गंधक	१ तो०	सुहागा	३ मासे

विधि—तीनों चीजों को पानी के साथ खरल में महीन पीसकर मरहम जैसा बनाले। इसको दाद में लगाने से दाद अच्छा होता है।

५४४—अपरस की दवा।

बावची	आबा हलदी

विधि—दोनों को पानी में पीसकर लेप करे। इससे अपरस (चर्मरोग) जाता है।

५४५ · खुजली की दवा ।

सेंदुर	१ तो०	गूगल	१ तो०
राल	१ ,,	तूतिया	१ ,,
मोम	१ ,,	सरसों का तेल	१० ,,

विधि—सरसोंके तेलमें मोम गूगल डालकर पकावे । तूतिया पीसकर डाल दे । बाद में राल सेंदुर डाल दे। सबको घोटकर एक जीव करके खाज पर लगावे ।

५४६—प्रमेहारि चूर्ण ।

केवाँच के बीज	२ तोला	सफेद मुसली	२ तोला
ताल मखाने के वीज	२ ,,	मोचरस	२ ,,
उटंगन के वीज	२ ,,	ऊट कटारे की जड़	२ ,,
बीज बन्द	२ ,,	शतावर	२ ,,
समुद्र शोष	२ ,,	कमरकस	२ ,,
सूखा सिंघाड़ा	२ ,,	आमला	२ ,,
कायफल	२ ,,	गुर्च का सत	२ ,,
शिलाजीत	४ ,,	गोदंती हरतालभस्म	२ ,,
ईसबगोल	२ ,,	मिश्री	३६ ,,

विधि—सबको महीन पीस कर चूर्ण बनाले ।

मात्रा—६ माशा ।

अनुपान—गाय का ताजा अथवा गरम किया हुआ दूध ।

समय—सुबह शाम ।

रोग—प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, धातु की निर्बलता ।

५४७—कामला की दवा ।

अनंत मूलकी जड़	२ माशा	कालीमिर्च	११ दाना

विधि—एक छटाँक पानी में पीस छान कर प्रातःकाल पी जावे । यह एक मात्रा है । इसी प्रकार शाम को पीवे ।

समय—सुबह शाम ।

रोग—आँख और शरीर का पीलापन, कामला रोग से उत्पन्न होने वाली अरुचि और ज्वर ।

५४८—कटफलादि काढ़ा ।

कायफल	१ तोला	पोहकर मूल	१ तोला
जायफल	१ ,,	भारंगी	१ ,,
सोंठ	१ ,,	छोटी पीपल	१ ,,

विधि—सब दवाइयां कुचल कर रखले । १ तोला दवा को २० तोला पानी में पकावे । ४ तोला शेष रहने पर छानले और गुन गुना पिये ।

समय—प्रातःकाल ।

रोग—कास, श्वास, हृदय की पीड़ा ।

५४९—बालकों की खांसी की दवा ।

विधि—लटजोरा के बीजों को तवे में डाल कर जलाले । निर्धूम हो जाने पर पोसले ।

मात्रा—२ से ४ रत्ती तक ।

अनुपा न—शहद ।

समय—दिनमें ३।४ बार

रोग—बालका की हर प्रकार की खाँसी ।

५५०—सोमलादिसत्व ।

संखिया	ऽ-	रस कपूर	ऽ-

विधि—दोनों चीजों को एक बोतल शराब में घोटे । शराब सूख जाने पर एक हाँडी में बन्द करे । ऊपर से दूसरी हांडी औंधी मूंद कर डमरूयंत्र बनाले । इस यंत्र के नीचे धीमी धीमी आंच देकर सत्व उड़ाले । ३।४ घंटे की आंच से ऊपर की हांड़ी में सत्व उड़कर चिपक जायगा । ठंढा हो जाने पर इस सत्व को निकाल कर शीशी में भर लेना ।

मात्रा—आधा चावल ।

समय—सुबह शाम ।

अनुपान—मलाई या हलुवा में रख कर इस प्रकार खाना जिसमें दाँतों में न लगे ।

रोग—उपदंश, वात व्याधि, श्वास, कास, कुष्ठ ।

पथ्य—चना की रोटी, अरहर की दाल, घी ।

५५१—ज्वरघ्न पिप्पली।

विधि—छोटी पीपल को पीस कर तुलसी के पत्तों के रस, गिलोय के स्वरस और बंगला पान के स्वरस की सात सात भावना दे (सात सात बार घोट घोट कर सुखावे) तीन बार वासा के पत्तों के काढ़े में घोट घोट कर सुखावे। २४ दिन तक बराबर घुटाई करता रहे।

मात्रा—१ माशा।

अनुपान—वासा पत्र रस और शहद।

समय—सुबह शाम। ६१ दिन तक।

रोग—पुरानाज्वर, मन्दज्वर, क्षयज्वर।

५५२—क्षय केशरी रस।

ज्वरघ्न पिप्पली	१ तो०	मोती की भस्म	६ माशे
मकरध्वज	१ तो०	स्वर्ण भस्म	३ माशे
सितोपलादि चूर्ण	८ तो०	गुर्च का ताजा सत्व	१ तो०

विधि—सबको एक में मिलाले।

मात्रा—२ रत्ती से ६ रत्ती तक।

अनुपान—शहद।

समय—सुबह, दोपहर, शाम और रात्रि को सोते समय।

रोग—क्षय, कास, श्वास, पित्त के विकार।

५५३—द्राक्षादि चूर्ण ।

मुनक्का	१ तो०	छोहारा	१ तो०
छोटी पीपल	१ तोला	धान की खील	१ तो०

विधि—सबको पीस कर चूर्ण बनावे ।

मात्रा—३ माशा ।

अनुपान—६ माशा घी और ३ माशा मधु मिलाकर ।

समय—सुबह शाम ।

रोग—पित्त की खांसी ।

५५४—अमृतविन्दु घृत ।

सफेद संखिया	१ तोला	सींगिया	१ तोला
कुचला	१ ,,	अफीम	१ ,,
नैनियागंधक	१ ,,	आवलासार गंधक	१ ,,
दोनों हरताल	२ ,,	दोप्रकारकीमैंनसिल	२ ,,
छोटी इलायची	१ ,,	बड़ी इलायची	१ ,,
वंशलोचन	१ ,,	लौंग	१ ,,
अजवायन	१ ,,	जायफल	१ ,,
जावित्री	१ ,,	तज	१ ,,

गाय का घी आधसेर

विधि—दवाइयों को पीस कर गाय के घी में मिलावे और दो दिन घोटे । बाद में एक गज मलमल के साफ कपड़े में घी में घुटी हुई दवाइयां लेप करदे और तहाकर एक लोहे की

सीक में लपेट कर बाँध दे। इसमें आग लगादे। इसके जलने से जो घी टपकेगा उसको संग्रह करने के लिये मसाल के नीचे काठ का कठौता रखना और उसमें पानी भर देना। मसाल के ऊपर से एक सेर घी को महीन धार से धीरे २ रुक रुक कर छोड़ते जाना। जब मसाल सब जल जाय तब घी डालना बन्द कर देना। बची हुई मसाल की राख को घोटकर ताजा घी में मलहम बना लेना। पानी में टपके हुये घी को हथेली से पोंछ कर किसी बर्तन में रख लेना।

मलहम का उपयोग—नासूर, कुष्ठ, सड़े घाव, हथियार से कटे घाव पर लगावें।

घी के खाने की मात्रा—१ बूंद।

अनुपान—मलाई या मक्खन।

समय—सुबह शाम। भोजन में घी दूध खूब खाना।

रोग—कास श्वास, नपुंसकता, शूल, संग्रहणी, हैजा।

शिश्नेन्द्रिय पर इसकी मालिश करने से गई हुई जवानी फिर मिलती है। शिश्नेन्द्रिय पर मक्खन के साथ मिलाकर लगाना चाहिये।

५५५—नागवल्लीअवलेह।

बंगला पान का रस	ऽ।	मिश्री	ऽ।
सोंठ	६ माशा	दालचीनी	६ माशा
अतीस	६ ,,	नागकेशर	६ माशा

तुलसी की मंजरी	६ माशा	कालीमिर्च	६ माशा
कायफल	६ ,,	मौरेठी चूर्ण	६ माशा

विधि—पान का रस और मिश्री कड़ाही में पकावे, गाढ़ा होने पर अन्य सब औषधियां पीसकर मिला दे और उतार ले।

मात्रा—२।३ माशा।

समय—दिन में ३।४ बार।

रोग—खांसी, श्वास, कफ के विकार।

५५६—अलसी का प्रयोग।

विधि—६ माशा अलसी को कुचल कर एक छटांक पानी में शाम को भिगोदे। सुबह छान कर जल को पी ले। इसी प्रकार सुबह भिगोकर शाम को पी ले।

रोग—श्वास और कास।

५५७—अश्वगंधादिक्वाथ।

असगंध	६ माशा	विधारा	६ माशा
मौरेठी	६ माशा	मुनक्का	१० दाना

विधि—आध सेर पानी में पकावे। पानी के साथ आधा सेर गाय का दूध मिला दे। पानी जल जाने पर छान ले। मिश्री मिलाकर दूध पी जाय।

समय—सुबह शाम।

रोग—श्वास, खांसी।

पथ्य—रात्रि को भोजन न करे।

५५८—वासादि शरवत।

वासा के पत्ते	ऽ।	कुम्हड़े का गूदा	ऽ।
अलसी	ऽ।	मुनक्का	ऽ।
खस	ऽ।	सफेद चन्दन	ऽ।
धनिया	ऽ।	मौरेठी	ऽ।
बड़ी इलायची	ऽ।	शक्कर	ऽ।।=

विधि—काष्ठादिक औषधियों को कुचल कर दस सेर पानी में पकाना। सवा सेर रहने पर छान लेना। शक्कर मिलाकर इस काढ़ा को पकाना। शहद की तरह गाढ़ा हो जाने पर उतार लेना। इसमें (ठंढा हो जाने पर) आधा सेर उत्तम शहद मिलाकर इसे बोतल में रख लेना।

मात्रा—१ तोला से ३ तोला तक।

अनुपान—दूने पानी में घोलकर।

समय—श्वास के दौरे के समय दिन में ३ या ४ बार।

रोग—रक्तपित्त, श्वास, खांसी।

५५६—द्राक्षाद्यवलेह ।

मुनक्का	१ तो०	जवासा	१ तो०
तज	,,	छोहारा	,,
पीपर	,,	सोंठ	,,
कालीमिर्च	,,	लौंग	,,
बहेड़े का बकला	,,	कत्था	,,
छोटी इलायची	,,	मौरेठी	,,
बनफसा	,,	बबूल की पत्ती	,,
कचूर	,,	भटकटैया की जड़	,,
कायफल	,,	धनिया	,,
नीम की छाल	,,	चन्दन चूरा	,,
त्रिफला	,,	शकर	४० तोला

विधि—सब दवाइयों को जवकुट करके एक सेर पानी में औटाना। आधा सेर रह जाने पर उतार लेना और मल कर छान लेना। इसी पानी में शकर डालकर चाशनी बनाना। अवलेह के समान गाढ़ा हो जाने पर एक छटांक वंशलोचन खूब महीन पीस कर मिला देना और उतार कर मिट्टी के पात्र में रख छोड़ना।

मात्रा—१ तोला।

समय—दिन में ३।४ बार।

रोग—वातकफज्वर, जोखाम, खांसी, श्वास।

५६०—अश्वगंधादिगुग्गुलु।

असगंध	१ तो०	चोपचीनी	१ तो०
सेमर का मूसला	,,	गिलोय	,,
शतावर	,,	गोखरू	,,
रासना	,,	कचूर	,,
अजवायन	,,	सोंठ	,,
छोटी पिप्पली	,,	शुद्ध गूगुल	,,

विधि—गूगुल को गाय के घी में मिलाकर लौह खरल में कूटना। नरम हो जाने पर सब दवा महीन पीस कर इसी में मिला देना। इसकी खूब कुटाई करना। बाद में त्रिफला के काढ़े में पकाना। गोली बनाने लायक गाढ़ा हो जाने पर बेर बराबर गोली बना लेना।

मात्रा—१ या २ गोली।

समय—सुबह शाम।

अनुपान—गरम दूध अथवा गरम पानी।

रोग—वायुविकार।

५६१—शर्कराञ्जन।

शकर १ तोला सहजन के बीज १ तोला

विधि— दोनों चीजें खूब महीन सुरमा की भांति पीसले।

सिलाई से सुरमे की तरह इसे नेत्रों में लगावे ।

रोग—आंख का फूला, तिमिर, धुन्ध आदि ।

५६२—वियादिकाहरलेप ।

सेंदुर	१ तो०	कालोमिर्च	१ तो०

विधि—तिल के तेल में दोनों चीजें पीस कर मिलावे । इससे पैरों में फटने वाली बिवाई नष्ट हो जाती है ।

५६३—ज्वरघ्नतैल ।

घी	१० तोला	तिल का तैल	१ सेर
गाय का दूध	४ सेर	असगंध	५ तो०
शतावरी	५ तोला	सफेद चन्दन चूरा	५ ,,
कड़ुवा कूट	१ ,,	कपूर	१ ,,

विधि—काष्ठादिक औषधियों को दूधके साथ चटनी की तरह पीसकर दूध में घोल दे । तैल उतारते समय कपूर मिलावे । घी, दूध और तैल एक में मिलाकर पकावे । तैल मात्र शेष रहने पर ठंढा करके छान ले । यह तैल मालिश के काम में आता है ।

रोग—विषमज्वर ।

५६४—शिर शूलांतक लेप ।

उत्तममोम	२ तोला	नारियल का तेल	२० तोला
पिपरमेन्ट	१॥ ,,	दालचीनी का तेल	६ माशा
कपूर	३ माशा	लौंग का तेल	३ ,,
नीबू का तैल	३ ,,	इलायची का तेल	१ ,,

विधि—नारियल के तेल को कढ़ाही में डालकर गरम करो इसी में मोम मिलाकर गला दो ठंढा करके एक कांच के खरल में अन्य सब चीजों को मिलाकर घोट लो चौड़े मुख वाली शीशी में भरलो। इसे मस्तक पर लेप करने से दर्द मिटता है।

५६५—कर्पूरादि मरहम ।

कपूर	२॥ तोला	सफेद मोम	५ तोला
बादाम का तेल	१२॥ ,,	भुना सोहागा	६ माशा
चन्दन का तेल	२ माशा	अलसी का तेल	१० तोला

विधि—बादाम का तेल और मोम मिलाकर गरम करो, पिघल जाने पर और चीजें पीसकर मिला दो और घोट दो। फिर चन्दन का तेल मिलाकर घोट दो। चौड़े मुंह को शीशी में बन्द करके रख छोड़ो। यह लगाने के काम आता है।

रोग—हथेली का फटना, मुंह और ओठों का फटना। पैरों में बिवाई फटना।

५६६—श्वास की दवा।

काले धतूरे के पत्तों का रस	५ तोला	अफीम	१ माशा
छोटी पीपल	२ माशा	कत्था	२ माशा
कायफल	१ माशा	कालीमिर्च	१ माशा

विधि—औषधियों को पीस कर रसमें मिलावे और आग पर गरम करके गाढ़ा करले। इसकी मिर्च समान गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली।

समय—सुबह शाम।

अनुपान—घी मिश्री मिलाकर दूध पीना।

रोग—श्वाश, कास।

५६७—खांसी की गोली।

कलमी शोरा	३ माशा	लौंग	१ तो०
मुलेहठी	१० तोला	कत्था	४ ,,
कालीमिर्च	६ माशा	कस्तूरी	३ माशा
छोटी इलायची	६ ,,	जायफल	३ ,,
केशर	१ ,,	वंशलोचन	१ ,,

विधि—सबको पीस कर चूर्ण करे। कस्तूरी केशर और वंशलोचन को गुलाब के रस के साथ खरल में अलग घोट ले। इसी में चूर्ण मिलाकर बबूल की छाल के काढ़े में

घोटकर मटर बराबर गोली बनावे। कस्तूरी केसर गोली बाँधने के समय मिलाना।

मात्रा—१ गोली।

समय—सुबह शाम या जब जरूरत हो।

अनुपान—लगा हुआ पान। पान में रखकर गोली चबाना।

रोग—खांसी, श्वास, नपुंसकता।

५६८—अम्लपित्तान्तचूर्ण।

निशोथ	२० तोला	लौंग	१० तोला
त्रिफला	६ ,,	त्रिकुटा	३ ,,
नागरमोथा	१ ,,	तेजपात	१ ,,
बायबिडंग	१ ,,	शकर	४५ ,,

विधि—सबको चूर्ण करके शकर मिलावे।

मात्रा—३ माशा।

अनुपान—शहद और घी।

समय—भोजन के पहले और पीछे।

रोग—अम्लपित्त, अर्श, कोष्ठबद्ध।

५६६—प्रदर की दवा।

अशोक की छाल	१० तो०	आंवला	५ तो०
हलदी	१ ,,	गुलकन्द	१६ ,,

विधि—सूखी दवाइयों को महीन कूटकर गुलकन्द के साथ मिलाकर रखना।

मात्रा—४ तोला दवा रात्रि को मिट्टी के पात्र में डालकर आधपाव पानी में भिगो देना और सवेरे मल कर छान लेना। इसमें आधपाव गाय का ताजा दूध मिलाकर पीना।

समय—प्रातःकाल।

रोग—हर प्रकार का प्रदर रोग।

५७०—पिप्पल्यादिकाढ़ा।

छोटी पीपल	१ तोला	अजवायन	१ तोला
जीरा	१ ,,	अजमोद	१ ,,

विधि—सबको कुचल कर रख ले। १ तोला दवा को पाव भर पानी में पकावे। एक छटांक रहने पर छान कर पिये।

समय—सुबह शाम।

रोग—ज्वर, मन्दाग्नि।

५७१—पौष्टिकमोदक।

बबूल का गोंद	ऽ।	गेहूं का रवा	ऽ।
गाय के दूध का खोया	ऽ।	शकर	ऽ१।
घी	ऽ१	बादाम की गिरी	ऽ-
पिस्ता	ऽ-	असगंध	१ तो०

विधि—गोंद को चलनी से छान करके घी में भून लेना। रवा को घी में भून लेना। खोवा घी में भून लेना। फिर सबको एक में मिलाना। असगंध को कपड़छान चूर्ण करके रवा के साथ ही भून लेना। बादाम पिस्ता कतर लेना। शकर की चाशनी करके सब चीजें मिलाकर लड्डू बना लेना।

मात्रा—२ या ४ तोला।

समय—सुबह शाम।

अनुपान—गरम किया हुआ दूध।

रोग—निर्बलता।

५७२—खांसी की गोली।

कत्था	१ तो०	हलदी	१ तो०
लौंग	१ "	सुहागा भुना	१ "
बहेड़ा की छाल	१ "	आक के फूल	१ "
मुरेठी का सत	२ "	बड़ी इलायची	१ "

विधि—धतूरा के फल के कांटे और बीज दूर करके फल के भीतर ऊपर की दवाइयों की पिट्ठी भर दे। इसे पुट पाक की विधि से पका ले और पीस कर मटर बराबर गोली बनावे। मुख में रख कर इसका रस चूसे।

रोग—खांसी, श्वास।

५७३—कासघ्न चूर्ण ।

भारंगी	सोंठ
कटैया को जड़	कुलथी
पिपरा मूल	छोटी पीपल

विधि—सब का महीन चूर्ण करके रखलो ।

मात्रा—१ से ३ माशा तक ।

अनुपान—शहद ।

समय—दिनमें ३।४ वार ।

रोग—कफ, खांसी, श्वास ।

५७४—कुष्ठघ्न चूर्ण ।

बड़ी हरड का छिलका	ऽ–	नीम के फूल	ऽ–
कूड़ा की छाल	ऽ–	चोक की जड़	ऽ–
गिलोय	ऽ–	चाल मोगरा के बीज	ऽ।=

विधि—पांच दवाइयां एक साथ मिलाकर पीस ले। चाल मोगरा अलग पीसले। फिर सब को एक में मिलाकर घोटले।

मात्रा—३ माशा ।

समय—सुबह शाम ।

अनुपान—ठंढा जल ।

रोग—वातरक्त, कुष्ठ, चर्म की सुन्न बहरी ।

५७५—गुञ्जादि लेप ।

सफेद गुंजा	१ तोला	वाकुची	१ तोला
गेरू	,,	बरगद की जटा	,,
कच्चा सिंगरफ	,,	जमाल गोटा	१ बीज

विधि—सबको ठंढे पानी में पीस कर लेप करना।

समय—दिनमें १ बार लेप करना। एक सप्ताह में लाभ होने लगेगा। छाला होने पर दवा लगाना बंद करना और छाले की जगह घी मलना।

रोग—श्वेतकुष्ठ ।

५७६—कुष्ठघ्न तैल ।

सफेद गुंजा	ऽ।	भिलावा	ऽ।
वाकुची	ऽ।	हलदी	ऽ।
कालेतिल	ऽ।	चालमोगरा	ऽ।

विधि—सबको एक में मिलाकर पाताल यंत्र की विधि से तैल निकाल ले। इस तैल में वाकुची और सफेद गुंजा का चूर्ण मिलाकर मरहम जैसा बनाले। ताम्र पात्र में रख छोड़े। श्वेतकुष्ठ पर इसे लगावे।

रोग—श्वेतकुष्ठ, गलितकुष्ठ, दाद, खाज, चर्मरोग ।

५७७—सुगंधित नस्य ।

बढ़िया तमाखू	२० तोला	नकछिकनी का पंचांग	२० तोला
अजवायनकासत	१ माशा	गुलाब का बढ़िया अतर	१ माशा
चन्दन का तेल	१ माशा	कायफल	५ तोला

विधि—पहले तमाखू को कपड़छान चूर्ण बनावे। कायफल और नकछिकनी महीन पीसकर मिलादे। फिर सब चीजें मलकर मिलादे। शीशी या डब्बी में भरले।

रोग—इसके सूंघने से छींकें आती हैं। बलगम निकल जाता है। सिर हलका हो जाता है। जुखाम और सिर का दर्द जाता है।

५७८—सिर दर्द का मरहम ।

बढ़िया काले तिलका तैल	५ तोला	सफेद मोम	१ तोला
पिपरमेंट सत	४ माशा	शीतलचीनोकातैल	१ मा०
कपूर	४ माशा	अजवायन का सत	४ मा०

विधि—तैल और मोम को गरम करके ठंढा कर लेना। जम जाने पर अन्य चीजें मिला देना। खरल में घोट कर चौड़े मुखवाली शीशी में भर लेना। दर्द की जगह में मालिश करना।

रोग—वायु का दर्द, सिर का दर्द।

५७६—वधिरत्वनाशकतैल।

विषगर्भ तैल १० तोला अफीम १ तोला

विधि—तैल में अफीम डाल कर तैल को गरम करे। अफीम जल जाने पर तेल उतार ले। इसे छान कर शीशी में भरले।

सेवन विधि—रात्रि को कान में २।३ बूंद तेल डाल कर कपड़े या रुई से कानों के छिद्र बन्द करदे। प्रातःकाल नीम की पत्ती के काढ़े में थोड़ी सी फिटकरी डाल कर उससे कान धोवे। कान धोने का कार्य छोटी पिचकारी द्वारा करे। धोने के बाद कपड़े की बत्ती से कान के भीतर का पानी पोंछ डाले। इसके बाद पीतल की बड़ी पिचकारी (जिसकी टोंटी मोटी हो) लेकर कानके छिद्र में उसकी टोंटी (चोंच) का थोड़ा सा हिस्सा जाने दे। टोंटी के आस पास जो संधि रहे उसे कपड़े से मजबूती के साथ बन्द करदे जिसमें सांस न रहने पावे। फिर धीरे धीरे पिचकारी का डंडा अपनी ओर खींचे। इससे कान के भीतर का वायु पिचकारी में खिच आता है। रोगी पिचकारी को अपने कान के छेद से न हटने दे। हवा खींचने से शब्द बाहिनी नाड़ियों का मुख खुल जायगा। एक बार वायु खींचने पर कान से पिचकारी हटाकर ठीक करले और (पिचकारीका डंडा पिचकारी में डालदे) और फिर उसी तरह कान में लगाकर कान के भीतर की वायु खींचे। प्रति दिन तीन वार वायु खींच कर सायंकाल कान में

दवा डालदे । दवा डाल कर रुई के फाहे से कान का छिद्र बन्द करदे । कान को प्रति दिन धोने की आवश्यकता नहीं है। तीसरे दिन धोवे । धोने का पानी गुनगुना रहना चाहिये। एक सप्ताह के बाद लाभ होने लगेगा । जब तक पूर्ण लाभ न हो इस क्रिया को करता रहे । विना धोये भी कान को भीतरी वायु निकालते रहने की जरूरत है । पर यह क्रिया होशियार मनुष्य ही अच्छी प्रकार कर सकता है ।

५८०—महा सुगंधिततैल ।

तिलका तैल	४० तोला	इलायची की रूह	२॥ तोला
कपूर	२ तोला	संतरे की रूह	२॥ तोला
पानड़ीकी रूह	१ तोला	खस की रूह	६ माशा
गुलाबकी रूह	६ माशा	कस्तूरी की रूह	३ माशा

विधि—"×" इस निशान वाली चीजों को एक बोतल में डालकर डाट लगादे । एक घंटा के बाद यह सब तैल के रूप में हो जायँगी । इसके बाद उस बोतल में तिलका तेल भरदे । डाट बन्द करके रखदे । ३ घंटे बाद फलालैन के कपड़े से तैल छान ले और बोतल में भरले । फिर अन्य चारों चीजों को मिलादे । बोतल का काक बन्द करके रखदे । सात दिन तक (दिन भरमें दो चार बार) प्रति दिन बोतल को हिला दिया करे, बाद में काम में लावे । इस तैल को सिरमें लगाने और नाक में टपकाकर सूघने के काम में लावे ।

रोग—सिर का दर्द, दिमागी कमजोरी, सिरकी खुश्की ।

५८१ – तीक्ष्णनस्य ।

छोटी पीपल	१ तोला	सेंधा नमक	१ तोला
कायफल	१ तोला	नकछिकनी	१ तोला

विधि—चारों चीजों को महीन पीस कर अर्क दुग्ध के साथ पत्थर को खरल में तीन बार घोट घोट कर सुखावे। यह सूंघने के काम आती है। इसको खूब महीन पीस कर शीशी में रखना। मूर्छा वाले रोगी को नाक में इसे कागज की नली की सहायता से फूंक कर मगज में चढ़ा देना चाहिये।

रोग—सिर का दर्द चाहै जैसा हो। जुखाम, मूर्छा, विष या सांप के जहर की बेहोशी।

५८२—ठंढा मरहम ।

नीम का तेल	ऽ॥	अलसी का तेल	ऽ॥
कवाबचीनी का तेल	५ तोला	लौंग का तेल	५ तोला
सफेद राल	२० ,,	गंधाविरोजा	५ ,,

विधि—१ सेर चूना को ३० सेर पानी में गलाकर निर्मल पानी नितार ले। इस पानी को मिट्टी की नाँद में भरे। ऊपर की दवाइयां और तेल को मिलाकर कड़ाही में पकावे। तेल खूब गरम हो जाने पर कड़ाही को आग पर से उतार कर सब तेल पानी भरी नाँद में डाल दे। थोड़ी देर में ठंढा हो जाने पर मरहम पानी के ऊपर तैरने लगेगा। यह तैरता

हुआ मरहम निकाल कर एक कपड़े में रखना और इसे दबा कर मरहम छान लेना। इस छने हुए मरहम को साफ पानी से कई बार धोना। जब उसका रंग सफेद हो जाय तब एक मिट्टी के पात्र में रख लेना यह मरहम लगाने के काम में आता है। बहुत शीतल है।

रोग—हाथ पैरों का फटना और जलन। चमड़े की जलन। आग से जल जाने पर भी इसका प्रयोग करना। सड़े हुये घावों की सड़न दूर करके यह घाव को जल्दी भरता है। गरमी और बरसाती फुड़ियाँ, खाज, उपदंश के घाव।

५८३—खुजली का तैल।

पारा	५ तो०	नैनिया गंधक	१० तो०
हलदी	५ ,,	धतूरा के पत्तों का रस	१ सेर
अर्क दुग्ध	५ ,,	कालीमिर्च	५ तो०
सरसोंका तेल	१ सेर	कलमी शोरा	२ ,,

विधि—पारा गंधक को एक में घोटकर कज्जली बनावे। हलदी और मिर्च का कपड़छन चूर्ण इसीमें मिला दे। धतूर पत्र रस, शोरा, अर्कदुग्ध कज्जली आदि एक में मिला दे। सबको तैल में मिलाकर पकावे। कल्क में नमी रहते हुये तैल उतार ले। लोहे के मुसले से घोटकर कल्क और तैल को एक जीव करले। इस तैल को शरीर में मालिश करके त्रिफला के काढ़े का वफारा ले और सो जाय। प्रातःकाल गरम जल से

नहा ले। यदि किसी अंग विशेष में ही रोग हो तो सर्वांग में वफारा न लेकर उसी अंग में वफारा ले।

वफारा लेने की विधि—एक सेर त्रिफला का दरदरा चूर्ण छै सेर पानी में मुंह बंद करके पकाना। सेर भर पानी जल जाने पर रोगी के खाट के नीचे काढ़ा का पात्र रख देना। रोगी को चारों ओर से ढक देना जिसमें भाप बाहर न निकलने पावे। इस काढ़ा के पात्र में ३।४ टुकड़ा पकी ईंट के भी खूब तपाकर डाल देना चाहिए। वफारा न लिया जा सके तो त्रिफला के गरम गरम काढ़ा से खुजली के स्थान को धोना भी अच्छा है।

रोग—दाद, खाज, कुष्ट की प्रारम्भिक दशा।

५८४—अर्ककुसुमवटी।

आक के ताजे फूल	५ तोला	सेंधा नमक	२॥ तोला
कालीमिर्च	१ तोला	काला नमक	१ तोला

विधि—सबको सिल पर पीस कर मटर बराबर गोली बनावे। इन गोलियों को मुखमें रख कर चूसना चाहिये।

रोग—खांसी, मंदाग्नि, ज्वर।

५८५—चित्रकादिवटी।

चीत की जड़	५ तोला	भुना सोहागा	५ तोला
हलदी	५ तोला	गुड़	५ तोला

विधि—सबको बारीक पीस कर पानी के साथ बहेड़े की बराबर गोली बनाले ।

सेवन विधि—इस गोली को पानी के साथ पत्थर पर घिस कर (चन्दन की तरह) एक पत्ते पर रख कर शौच जाते हुये ले जाना । आबदस्त लेने के बाद यह दवा बवासोर के मस्सों पर चुपड़ कर मस्सों को अन्दर कर देना । इस लेप के लगाने से कष्ट नहीं होता ।

रोग—बवासीर ।

५८६—प्रदरांतक चूर्ण ।

माजूफल	१० तोला	बबूल की पत्ती का चूर्ण	५ तोला
वंग भस्म	१ तोला	मोती भस्म	३ माशा

विधि—माजूफल और पत्तियों का कपड़छन चूर्ण करके भस्म में मिलाले ।

मात्रा—१।२ माशा ।

अनुपान—शहद ।

समय—सुबह शाम ।

रोग—रक्त और श्वेतप्रदर, योनि से पानी बहना, योनि की दुर्गंध और उसका ढीलापन ।

नोट—यह दवा ४ रत्ती प्रमाण में योनि में भी रखी जा सकती है ।

५८७—संकोचक चूर्ण।

छोटी माई	१ तो०	माजूफल	१ तोला
समुद्र शोष	,,	फिटकरी	,,
धतूराके बीज		अजवायन	,,

विधि—सब का महीन चूर्ण बनावे। कपड़े से छान कर सुरमे की तरह इसको महीन घोट ले। सेमर के पत्र के रस के साथ तीन वार घोट कर सुखा ले और फिर पीस ले।

मात्रा—१ माशा चूर्ण योनि के अन्दर रखना।

समय—रात्रि को सोते समय।

रोग—योनि का ढीलापन और प्रदरादि योनि के रोग।

५८८—स्तम्भनवटी।

कस्तूरी	१ माशा	कटेरी के बीज	१ तोला
नकछिकनीका पंचांग	१ तो०	बहेड़े की मींगी	१ ,,
केशर	६ माशा	अफीम	२ माशा
रूमीमस्तगी	१ तो०	जावित्री	१ तो०
जायफल	१ ,,	अकरकरहा	१ ,,
सफेदराल	१ ,,	उटंगन के बीज	१ ,,

विधि—काष्ठादिक औषधियों का महीन चूर्ण करले। केशर, कस्तूरी और अफीम को शहद के साथ घोटै। घुट-

जाने पर औषधियों का चूर्ण डालकर फिर घोटे । ४।४ रत्ती की गोली बनावे ।

मात्रा—१ गोली ।

अनुपान—गरम दूध ।

समय—सोने के एक घंटा प्रथम ।

रोग—शीघ्रपतन, स्वप्नदोष ।

५८६—तिला ।

सफेद कनेर की जड़	६ माशा	जमालगोटा की मींगी	६ माशा
लौंग	६ ,,	तज	६ ,,
जायफल	१ तो०	बीरबहूटी	१ तो०
सूखे केंचुवा	१ तो०	बड़ी इलायची	६ माशा
मालकांगनी	६ माशा	महुआ की शराब	१० तो०
गाय का दूध	२॥ सेर	अकरकरहा	१ ,,

विधि—काष्ठादिक औषधियाँ महीन कूटकर एक कपड़े में बाँध कर पोटली बनावे । दूध और शराब में यह पोटली डाल कर पकावे । आधा दूध जल जाने पर दूध का दही जमादे । इसको मथकर घी निकाल ले ।

सेवनविधि—सोने के समय इस घृत को शिश्नेन्द्रिय में मलकर बँगला पान सेंक कर बांध दे । २१ दिन यह प्रयोग करे ।

रोग—इन्द्री का टेढ़ापन, नसों की कमजोरी ।

५६०—कन्दर्पनायक चूर्ण।

शतावरी	२ तोला	भुइँकुम्हड़ा	२ तोला
बाराहीकंद	,,	गोखरू	,,
मुलेहटी	,,	असगंध	,,
मोचरस	,,	चिरौंजी	,,
शुद्ध भिलावा	,,	गरी गोला	,,
काले तिल	,,	घमिरा की पत्ती	,,
गोंद	,,	शकर	२६ तो०

विधि—दवाइयों को महीन पीसकर शकर में मिला के रखले।

मात्रा—६ माशा से १ तोला तक। शक्ति के अनुसार।

अनुपान—दूध मिश्री।

समय—सोते समय।

रोग—वीर्य की कमी, वीर्य का पतलापन।

५६१—नासूर का तैल।

साबुत चने	१ तोला	पीली कौड़ियों की भस्म	१ माशा
मीठा तेल	५ ,,	कपूर	,,
छोटी इलायची	१ माशा	अफीम	,,

विधि—चनों को तवे पर रखकर जला ले, निर्धूम कोयला करले। इसी में कौड़ी भस्म मिला दे। फिर तेल में मिलाकर

कड़ाही में लोह पात्र से खूब घुटाई करे। बाद में अन्य तीनों चीजें पीस कर मिलावे और घोटे। यह मिश्रण एक एलूमीनियम की कटोरी में रखकर आग पर गरम करे। कटोरी का मुँह किसी बर्तन से ऐसा बन्द करे कि उसकी भाप न निकलने पावे। आंच मन्दी रहे। आध घंटे बाद तेल उतार ले और छान ले। तौल में तेल कम हो जायगा। इसे शीशी में भर ले।

नासूर में—इस तैल को कपड़े की बत्ती में लगाकर नासूर के भीतर ३।४ बूंद टपकावे और फाहा भिगोकर घाव के मुंह पर रख दे। सुबह शाम दोनों समय तेल लगावे। तेल लगाने के पहले घाव को धोकर मवाद साफ कर ले। घाव में फाहा रख कर पट्टी बांध देना।

रोग—नासूर। आंख के नासूर पर भी इस तैल का प्रयोग विशेष लाभप्रद हुआ है।

५६२—दशाङ्गवटी।

चन्दनचूरा	८ तोला	शुद्ध गूगुल	८ तोला
कालाअगर	८ ,,	धूप	४ ,,
खस	३ ,,	देवदार	२ ,,
मीठाकूट	२ ,,	जायफल	६ माशा
जावित्री	१ ,,	कपूर	६ ,,
कस्तूरी	३ माशा	केशर	१ तो०

विधि—सबको महीन पीसकर शहद में सानकर बड़े मटर बराबर गोलियां बनावे।

मात्रा—१ गोली मुख में रखकर चूसना।

रोग—मुख की दुर्गन्धि, खांसी।

५६३—दद्रुघ्नतैल।

नारियल की नरेली ऽ। फटकरी ऽ॰

विधि—नरेली को जवकुट करके एक बोतल में भरे बीच में फिटकरी रख दे। मुह बन्द करके पातालयन्त्र की विधि से तैल निकाले। इस तेल को रुई के फाहे से दाद पर लगावे।

समय—दिन में ३।४ बार।

रोग—दाद।

५६४—खुजली की दवा।

नैनिया गंधक	६ माशा	सेंदुर	६ माशा
पारा	३ ,,	तूतिया	१॥ ,,
कालीमिर्च	३ ,,	मैंनसिल	३ ,,

विधि—सबको एक साथ घोटकर आधपाव कड़ुवे तेल में मिलाकर शरीर में मालिश करै। एक घंटे बाद गरम जल से स्नान करे।

रोग—हर प्रकार की खाज।

५६५—पुनर्नवादिवटिका ।

पुनर्नवा की जड़	१ तोला	गंगेरन	१ तोला
असगंध	,,	शतावर	,,
गोखरूबड़ी	,,	सफेद मूसली	,,
रससिंदूर	,,	सेमर की जड़	,,

विधि—सबको महीन पीसकर शहद के साथ एक एक रत्ती की गोली बनावे ।

मात्रा—२ गोली

अनुपान—दूध ।

समय—शयन के समय रात्रि को ले ।

रोग—शीघ्रपतन, स्वप्नदोष ।

५६६—भृङ्गराजवटी ।

घमिरा की पत्ती	१ तोला	गुर्च का सत	१ माशा
लटजीरा की पत्ती	१ माशा	करंज की मींगी	६ ,,
आक की जड़ का बकला	१ ,,	कालीमिर्च	३ ,,
फिटकरी भुनी	६ ,,	नीम की पत्ती	२ ,,

विधि—सबको पानी से पीसकर मटर बराबर गोली बनावे ।

मात्रा—१ गोली ।

अनुपान—जल ।

समय—ज्वर चढ़ने के ३ घंटा प्रथम से हर घंटे में १।१ गोली देना, जब तक ज्वर चढ़ने की आशा रहे तब तक देते रहना।

रोग—पारी से आने वाला विषमज्वर।

५६७—भारंग्यादिचूर्ण।

भारङ्गी	४॥ तो०	तज	८ तोला
मुलहठी	३ ,,	कालीमिर्च	४ ,,
पीपल	३ ,,	लौंग	२ ,,
बड़ी इलायची	१॥ ,,	सीतलमिर्च	१ ,,
सोंठ	१ ,,	शकर	२३ ,,

मात्रा—१ माशा से ३ माशा तक।

अनुपान—जल।

समय—सुबह शाम और सोते समय।

रोग—खांसी, श्वास।

५६८—कर्पूरादिचूर्ण।

कपूर देशी	१ तोला	नागरमोथा	१ तोला
भारङ्गी	१ ,,	हरी धनिया की पत्ती	१ ,,
त्रिकुटा	३ ,,	त्रिफला	३ ,,
देवदारु	१ ,,	काला जीरा	१ ,,

सफेदजीरा	१ तो०	सौंफ	१० तो०
सेंधा नोन	१ ,,	मिश्री	३० ,,

विधि—सबको पीसकर कपड़छन चूर्ण करे ।

मात्रा—१॥ से ३ माशा तक ।

समय—दिन में ३।४ बार ।

रोग—श्वास, खांसी ।

५९९—कंटकार्यादितैल ।

भटकटैया के फल	५ सेर	अजवायन	८ छटांक
लौंग	८ तो०	बहेड़ा की गिरी	८ तो०

विधि—पातालयंत्र से सबका तैल निकाल ले ।

मात्रा—२ बूंद । सुबह शाम ।

अनुपान—मिश्री ।

रोग—श्वास, कास ।

६००—कटे घाव का मरहम ।

मोम	१ तोला	राल	१ तोला
गंधक	१ तोला	घी	७ तोला

विधि—घी में मोम डालकर गरम करो । मोम के गल जाने पर गंधक और राल मिलालो । सबके गल जाने पर अर्जुन की छाल का महीन चूर्ण मिला दो ठंढा होने पर डिबिया में भर लो । घाव पर इसे लगाना ।

सप्तम शतक ।

६०१—उपदंश की दवा ।

कस्तूरी	१ तोला	कपूर हलदी	१ तोला
दारु हलदी	१ तोला	कत्था	१ तोला
शुद्ध मुरदा संख	१ तोला	वाकुची	१ तोला

विधि—सबको महीन पीसकर भृंगराज के रससे घोट कर एक एक रत्ती की गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली ।

अनुपान-जल ।

समय—सुबह शाम ।

रोग—उपदंश । धातु का पतलापन, घाव, फोड़ा, चर्मरोग ।

६०२—बालामृत वटी ।

अनार का फूल	६ माशा	छोटी इलायची के बीज	६ माशा
		चाकसू	१ तोला
रसोत	१ तोला	नर कचूर	१ ,,
सफेद जीरा	१ ,,	हलदी	१ ,,
नीम की छाल	१ ,,	बकायन की कोंपल	१ ,,
बबूल की कोंपल	१ ,,		

विधि—रसौत को पानी में घोल देना। इसी पानी से अन्य औषधियों के महीन चूर्ण को पीस कर मूंग बराबर गोली बना लेना।

मात्रा—१ या २ गोली।

अनुपान—माता का दूध।

समय—सुबह शाम।

रोग—बालकों का सूखा रोग, ज्वर।

६०३—अजमोदादि चूर्ण।

अजमोद	१ तोला	मोचरस	१ तोला
अदरख	१ तोला	धाय के फूल	१ तोला

विधि—सबको एक साथ महीन पीस कर रखले।

मात्रा—३ माशा।

अनुपान—पानी निचोड़ा हुआ दही।

समय—दिनमें ३ बार।

रोग—आमातिसार, मरोड़।

६०४—किसमिस पाक।

किसमिस	४० तोला	मूसली सफेद	२ तोला
काली मुसली	२ ,,	मोचरस	२ तोला
सालम मिश्री	२ ,,	समुद्र शोष	२ ,,

बादामगिरी	२ तो०	शतावर	४ तो०
कुलींजन	६ माशा	मिश्री	१ सेर

विधि—किसमिस को बीन कर पानी से धोना और सुखा लेना। बादाम की मींगी को पानी में भिगोकर छील लेना और चाकू से कतर लेना। अन्य औषधियों का महीन चूर्ण करके इसी में बादाम और किसमिस मिला देना। मिश्री की चासनी करके उसी में सबको डाल कर २।२ तोला के लड्डू बनाना।

मात्रा—१ लड्डू।

अनुपान—दूध।

समय—सुबह शाम।

रोग—धातु का पतलापन, शीघ्र पतन। इसके सेवन से वीर्य बढ़ता और पुष्ट होता है।

६०५—सूखा की दवा।

जहर मोहरा खताई को कोयलों की अग्नि में रख कर सफेद भस्म करले।

मात्रा—१ रत्ती।

समय—सुबह शाम।

अनुपान—१॥ माशा घी के साथ खाने को दे और ४ रत्ती दवा घी में मिलाकर शरीर में मालिश करै।

रोग—बालकों का सूखा रोग।

६०६—शकरकंदादि पाक ।

शकरकंद	खरैंटी के बीज
सफेद मूसली	सफेद चिरमठी
असगंध	गोखरू
ताल मखाना	काले उड़द
बीज वन्द	सिंघाड़ा
सफेद तिल	विनोले की मींगो
शतावरी	सालम मिश्री
नागकेशर	इमली के बीज
कँवाच के बीज	बंशलोचन
लहेसवा	आंवले के बीज
मैदा लकड़ी	ईसब गोल
सेमर का मुसला	बाराही कन्द
कमलगट्टा	गंगेरन
सोंठ	बिहीदाना
बादाम	अरारोट
इलायची	पिस्ता
केसर	खसखस
घी ४० तोला	मिश्री ४० तोला

विधि—सब औषधियों को १। तोला लेकर महीन पीस कर घी में भून लेना मिश्री मिलाकर रख छोड़ना।

मात्रा—२ तोला।

अनुपान—दूध ।

समय—सोते समय ।

रोग - धातु की कमजोरी, स्वप्नदोष ।

६०७—प्रमेह की दवा ।

तुख़्मरेहा	३ माशा	अकर करहा	२ माशा
मिश्री	५ माशा	वंगभस्म	१ रत्ती

विधि—दवाइयों को पीस कर मिश्री और वंग मिलाले । यह एक मात्रा है ।

समय—सोते समय । एक मास तक ।

अनुपान—दूध मिश्री ।

पथ्य—घी, दूध, खीर, गेहूँ की रोटी ।

विशेष—पहले हलका सा जुलाब लेकर पेट साफ कर लेना चाहिये । इसके बाद औषधि का सेवन करना चाहिये ।

रोग—प्रमेह, स्वप्नदोष, धातु की कमजोरी ।

६०८—शिलाजित्वादि वटी ।

शिलाजीत	१॥ तोला	वंगभस्म	१ तोला
लौह भस्म	१ तोला	अकरक़रहा	२ माशा
छोहारा	१ तोला	केशर	४ माशा
बादाम	६ माशा	जायफल	१ तोला
मिश्री	३ तोला	गोलाकी गिरी	१ तोला

विधि—काष्ठादिक औषधियों को पीसकर उनमें भस्म मिलादे । शिलाजीत को खरल में डालकर आंवले के स्वरस से घोटे फिर उसी में सब औषधियां डालकर घाटले । ३।३ माशा की गोली बनावे ।

मात्रा—१ गोली ।

समय—सुबह शाम । एक मास तक ।

अनुपान—मिश्री मिला दूध ।

रोग—प्रमेह, प्रदर, बहुमूत्र ।

६०९—कान की दवा ।

तमाखू की हरी पत्ती ५ तोला आक के पीले पत्ते ५ तोला

विधि—आधा सेर जलमें इनको उबाल लेना । एक छटांक रहने पर छान लेना यही जल कान में टपकाना । इससे कान की हर प्रकार की पीड़ा शांत होती है ।

६१०—ज्वरघ्नपेय ।

नवसादर	१० तोला	बिना बुझा पत्थर का चूना	१० तो०
सिरका	४० ,,	पानी	४ सेर

विधि—नवसादर चूना और सिरका मिलाकर एक चीनी मट्टी के पात्र में डाले । तीनों के मिलने से उफान आवेगा । उफान मिट जाने पर गरम पानी डाल दे । रात्रि भर भीगने

के बाद निर्मल जल का अंश निकाल ले। इसमें बराबर का सौंफ का अर्क मिलाकर बोतल में भर ले।

मात्रा—२ तोला से ४ तोला तक।

समय—ज्वर आने के एक घंटा पूर्व से ३।३ घंटे में।

रोग—फसली बुखार, कफज्वर।

नोट—इसके सेवन से पसीना खूब आता है। पेशाब उतरता है। खून साफ होता है। हाज़मा दुरुस्त होता है।

६११—स्वप्नदोषहररसः।

खूनखराबा	१ तोला	शुद्ध गुग्गुल	१ तोला

षड्गुण बलिजारित मकरध्वज ३ माशा।

विधि—खूनखराबा और गुग्गुल को गाय के घी में घोट कर बारीक कर लेना। बाद में मकरध्वज मिलाकर घोटना। और चने बराबर गोलियां बना लेना।

मात्रा—१ गोली।

समय—सुबह शाम।

अनुपान—गाय का दूध।

पथ्य—घी, दूध, पौष्टिक और हलके पदार्थ।

६१२—नेत्रबिन्दुद्रव।

रसोत	६ माशा	भुनी फिटकरी	६ माशा
अफीम	६ ,,	छोटीहरड़	२ ,,
पठानी लोध	६ ,,	गुलाब का अर्क	१ बोतल

विधि—थोड़े से गुलाब के अर्क में सबको पीसकर कपड़े से छान ले। बाद में सब गुलाब का अर्क मिलाकर बोतल में भर ले।

प्रयोग—दुखती हुई आखों में दो चार बूंद दवा डालना।

रोग—आंख की पीड़ा, लाली, पानी बहना आदि सभी विकार दूर होते हैं।

५१३—रक्त शोधक शरबत ।

मजीठ	४ तोला	उन्नाव	५ तोला
उसवा	४ ,,	गोरखमुंडी	२ ,,
नीम की छाल	४ ,,	जवासा	२ ,,
सोसम का बुरादा	२ ,,	लाल चन्दन	२ ,,
सुफेद्चन्दन	२ ,,	बनफशा	२ ,,
गुल वनफशा	२ ,,	हंसराज	२ ,,
चिरायता	२ ,,	शाहतरा	२ ,,
पित्तपापड़ा	२ ,,	आकाश बेल	२ ,,
बबूल की छाल	२ ,,	दारु हलदी	२ ,,
मुनक्का	१० ,,	नीम के फूल	२ ,,
गुलाब के फूल	२ ,,	निशोथ	५ ,,
सनाय	१० ,,	गुल नीलोफर	२ ,,
गिलोय	२ ,,	खस	२ ,,
बड़ी हरड़ की छाल	५ ,,	आलू बुखारा	५ ,,

चोप चीनो	५ तो०	अनंतमूल	५ तो०
सौंफ	२ ,,	गुल खैरू	२ ,,
बावची	४ ,,	चोक की जड़	२ ,,
		धनिया	४ ,,
सफेद कत्था	१ ,,	लाल चन्दन	५ ,,

विधि—१२॥ सेर जल में सब औषधियां जवकुट कर के भिगो देना। रात्रि भर भीगनेके बाद इनको औटाना। तीन सेर पानी शेष रहने पर उतार लेना। छान कर जल ले लेना, दवाइयाँ फेंक देना। इस काढ़े में २ तोला लौह भस्म और तीन सेर शक्कर डालकर चाशनी बनाना। शहद के समान गाढ़ा हो जाने पर बोतलों में भर लेना।

मात्रा—५ तोला।

अनुपान—२० तोला पानी मिलाकर।

समय—सुबह शाम।

रोग—वातरक्त, उपदंश के विकार, फोड़ा, फुन्सी।

६१४—अर्क पुष्पादि चूर्ण।

आक के ताजे फूल	७ तोला	काला नमक	१ तोला
अजवायन	१ तोला	त्रिकुटा	१ तोला
गिलोय	१ तोला	चित्रक	१ तोला
काला जीरा	१ तोला	सफेद जीरा	१ तोला

विधि—एक में सब को पीसकर चूर्ण बनाले।

मात्रा—६ माशा ।

अनुपान—गरम जल ।

समय—सुबह शाम ।

रोग—शूल, कास, श्वास, आमातिसार, अजीर्ण, मंदाग्नि, वायु विकार, पेट के कृमि, कब्ज ।

६१५—हरीतकीयोग ।

छोटी हरडों को गो मूत्र में पीसकर सुखाले। कड़ाही में रखकर आग सें भून ले ।

मात्रा—१० रत्ती से २० रत्ती तक ।

अनुपान—१ रत्ती बबूल का गोंद और शहद के साथ चाटना ।

समय—जब आवश्यकता हो ।

रोग—कास, श्वास ।

६१६—जीरा मिश्री योग ।

सफेद जीरा १० तोला मिश्री ८ तोला

विधि—जीरा को कपड़े की पोटली में बांध कर सेर भर दूध में डाल देना और पकाना। पक जाने पर छाया में सुखा कर पीस लेना और मिश्री मिलाकर शीशी में रख लेना ।

मात्रा—३ माशा से ६ माशा तक।

समय—सुबह शाम और रात्रि को सोते समय।

अनुपान—गाय का धारोष्ण दुग्ध।

रोग—जीर्णज्वर।

६१७—ज्वर उतारने की दवा।

सफेद कुम्हड़ा की जड़	४ माशा	नीम के पत्ते	४ माशा
नागरमोथा	४ माशा	पित्तपापड़ा	४ माशा

विधि—पानी के साथ खूब महीन पीस कर आँखों पर गाढ़ा लेप करना।

रोग—पारी से आने वाला ज्वर।

६१८—ज्वर उतारने की दूसरी दवा।

इमली के फूल	१ तोला	मौरेठी	१ तोला

प्रयोगविधि-ऊपर की भांति।

६१९—अर्क मूलादि क्वाथ।

आक की जड़ की छाल	१ तोला	पिपरामूल	१ तोला
देवदारु	१ तोला	सेमर की जड़	,,
चव्य	१ तोला	संभालू की जड़	,,
छोटी पीपल	१ तोला	रासना	,,
घमिरा	१ तोला	पुनर्नवा	,,

चित्रक	१ तोला	वच	१ तोला
चिरायता	१ तोला	सोंठ	,,

विधि—इनको जवकुट करके ७ खुराक बनाना। एक खुराक रात्रि को पाव भर पानी में भिगोकर काढ़ा करना और एक छटाँक शेष रहने पर छान कर रोगी को पिलाना।

समय—सुबह शाम। सुबह काढ़ा छान कर वही दवा फिर भिगो देना और शाम को उसी का काढ़ा बनाकर पिलाना।

रोग—सन्निपातज्वर।

६२०—शतपुष्पादिचूर्ण।

सौंफ	४ तोला	मिश्री	५ तोला
बेलगिरी	१ तोला	धुली हुई भांग	१ तोला
धाय के फूल	१ तोला	मोचरस	१ तोला
सोंठ	१ तोला	धनियां	२ तोला

विधि—मिश्री को अलग पीस लेना अन्य दवाइयां महीन पीस कर कड़ाही में मंदी मंदी आंच से सेंक लेना बाद में मिश्री मिला देना।

मात्रा—३ माशा।

समय—दिनमें तीन बार सुबह शाम और रात्रि को सोते समय।

अनुपान—जल ।

रोग—संग्रहणी, प्रवाहिका, अतिसार ।

६२१—आमूबीजादियोग ।

आम की गुठली	२ तोला	बेलगिरी	४ तोला
मोचरस	२ तोला	माजूफल	२ तोला
छोटी मांई	२ तोला	अनार के फूल	२ तोला

विधि—सबको कूट पीस कर कपड़े से छान लेना ।

मात्रा—२ माशा ।

समय—दिनमें ३।४ बार ।

अनुपान—दही का तोड़ ।

रोग—अतिसार, संग्रहणी ।

६२२—हिंगुलादि वटी ।

हिंगुल	१ तोला	जायफल	१ तोला
जावित्री	१ तोला	लौंग	१ तोला

विधि—हिंगुल की एक डली लेकर कड़ाही में रखना । कड़ाहीमें १ तो० शहद १ तो० भिलावां १ तो० रेंडीका तेल और १ तो० घी डालकर चूल्हे पर रखना । भिलावों के दो दो टुकड़े करना । नीचे आग जलाना । कड़ाहो का तेल आदि जब जलने लगे तब उसके नीचे को आंच निकाल लेना । ठंढा हो जाने पर हिंगुल निकाल कर पानी से धो डालना । फिर

ऊपर लिखी तीनों दवाइयाँ हिंगुल के साथ भांग के रस या काढ़ा के साथ पीस कर चने बराबर गोलियां बना लेना।

मात्रा—१ या दो गोली।

अनुपान—जल।

समय—सुबह शाम।

रोग—संग्रहणी, प्रवाहिका, अतिसार।

६२३–जातीफलादिवटी।

जायफल	१ तोला	बेलगिरी	१ तोला
जावित्री	,,	मोचरस	,,
कायफल	,,	छोटीमांई	,,
मरोड़फली	,,	अजवायन	,,
चाकमिट्टी	,,	काला कत्था	,,
हिंगुल	,,	सफेद कत्था	,,
केशर	,,	अफीम	,,

विधि—हिंगुल अफीम और केशर को अनारदाने के रस के साथ खरल में अच्छी तरह घुटाई करना। फिर अन्य चीजों को महीन पीस कर उसी में मिला देना। अनार के रस से घोटकर एक गोला बनाना। अनार के फल को बीचोबीच से नीबू की तरह काटकर बीज निकालना। बीज निकालने पर अनार के छिलके की दो साबुत कटोरी बना लेना। इसी में दवा के गोले को भर कर दोनों टुकड़ों का

मुँह जोड़ देना। सब दवा एक फल में न आवे तो दो फल लेना। इस फल के ऊपर साफ कपड़ा लपेट कर एक अंगुल मोटा गुँधा हुआ आटा चढ़ा देना। आटा कड़ा हो जाने पर एक अंगुल मोटी मिट्टी चढ़ा देना। मिट्टी सूख जाने पर कंडों की आंच में इस गोले को पकाना। मिट्टी का रंग पक कर जब लाल हो जाय तब निकाल लेना। मिट्टी और आटेको दूर करके अनार के छिलके समेत दवा पीस लेना। अच्छी तरह पिसाई हो चुकने पर अनार के रस से चने को बराबर गोली बनाना।

मात्रा—१ या २ गोली।

समय—सुबह शाम और रात को सोते समय।

अनुपान—छाछ, मट्ठा, या जल।

रोग—अतिसार, प्रवाहिका, संग्रहणी।

६२४-बिजयावटी।

धुली हुई भांग	१ तोला	सोया	१ तोला
अफीम	,,	ईसवगोल	,,
खसखस	,,	अजमोद	,,
अनीसून	,,	सफेदजीरा	,,
बेलगिरी	,,	सौंफ	,,

विधि—मात्रा, प्रयोग सब जातीफलादिवटी की भांति।

अनुपान—चावलों का धोवन या अनार का रस।

रोग—पित्त और रक्तातिसार।

६२५-आनन्दभैरव ।

अफीम	१ तो०	शुद्ध सींगिया	१ तो०
भुना सोहागा	,,	छोटीपीपल	,,
कालीमिर्च	,,	हिंगुल	,,
शुद्ध पारा	,,	शुद्धगंधक	,,

विधि—गंधक पारा को पहले पत्थर की खरल में डाल कर खूब घोटना। चमक मर जाने पर हिंगुल को डालकर घोटना । फिर और दवाइयां महीन पीस मिला देना । सबको अदरख के रस से घोट कर १।१ रत्ती की गोली बनाना ।

मात्रा—१।१ गोली ।

समय—३।३ घंटे में ।

अनुपान—जल ।

रोग—अतीसार, ज्वर, संग्रहणी ।

६२६-समीरगजकेशरी ।

शुद्धहिंगुल	१ तो०	अफीम	१ तो०
कालीमिर्च	,,	शुद्ध कुचला	,,

विधि—पत्थर की खरल में हिंगुल को खूब महीन पीस लेना बाद में अफीम डाल कर पान के रस से दोनों को खूब घोटना । काली मिर्च को कपड़छन करके मिला देना । कुचले को सरौते से खूब महीन काटकर खरल में छोड़ देना ।

पान का रस डालकर थोड़ी देर फूलने देना। बाद में सबकी घुटाई अच्छी तरह करके बाजरे के बराबर गोली बनाना।

मात्रा—१ या २ गोली।

समय—दिन में ३।४ बार।

अनुपान—चावल का धोवन या धान्य पंचक काढ़ा।

रोग—अतीसार, पेट का शूल।

६२७—सौभाग्यक्षारादिवटी।

भुना सुहागा	१	तो०	शुद्धहिंगुल	२	तो०
अफीम	२	,,	इन्द्रजौ	१	,,

विधि—अदरख के रस के साथ खूब घुटाई करके मिर्च बराबर गोली बनाना।

मात्रा—१ गोली।

समय—सुबह, दोपहर, शाम और रात को सोते समय।

अनुपान—दिन को नीबू या नारंगी के स्वरस के साथ। रात्रि को जल के साथ।

रोग—अतीसार, संग्रहणी।

६२८—खदिरादिवटी।

सफेद कत्था	५	तो०	भुनीहुई छोटी हरड़	५	तो०
दालचीनी	१	,,	अफीम	१	,,

विधि—छोटी हरडों को एरण्ड के तेल में भून लेना।

भूनकर तौल लेना। सबको महीन पीसकर चूर्ण बनाना। ३।४ रत्ती की गोली पानी में पीसकर बनाना।

माश्रा—१ गोली।

अनुपान—जल।

समय—दो दो घंटे में।

रोग—अतिसार, सरदी की खांसी, जाड़े में आने वाला श्वास।

६२९—विजयसुन्दरचूर्ण।

भांग	१ तोला	भुने काले तिल	१ तो०
अनारके फलका छिलका	,,	सफेद जीरा	,,
कौड़ी की भस्म	,,	भुना सोहागा	,,

विधि—सबको चूर्ण बना लेना।

माश्रा—१ माशा।

अनुपान—३ माशा घी १ तोला शक्कर और ऽ- दही में मिलाकर देना।

समय—दिन में ३।४ वार।

रोग—अतिसार, संग्रहणी।

६३०—सुखदायिनीवटी।

शुद्धहिंगुल	भुना सोहागा
शुद्धसींगिया	शुद्ध धतूरे के बीज
गांजा (चरस)	कालीमिर्च

विधि—अदरख के रस के साथ पीस कर १।१ रत्ती की गोली बनाना ।

मात्रा—१।१ गोली ।

समय—सुबह शाम ।

अनुपान—१ माशा त्रिकुटा का चूर्ण और दही में मिलाकर ।

रोग—अतिसार, संग्रहणी, अपाचन ।

६३१—अरुणेश्वररस ।

शुद्ध हिंगुल	अफीम
भुना सोहागा	गांजा
शुद्ध सींगिया	कालीमिर्च

विधि—सबको महीन पीस कर अदरख के रस या सोंठ के काढ़े से घोट कर एक एक रत्ती की गोली बनाना।

मात्रा—१ गोली ।

समय—सुबह शाम और सोते समय ।

अनुपान—शहद ६ माशा और सोंठ का चूर्ण ४ रत्ती मिलाकर ।

रोग—सब प्रकार के अतिसार ।

६३२—म्लेच्छवटिका ।

भुना सुहागा	२ तो०	अफीम	३ तो०
हिंगुल	१ ,,	सोंठ	१ ,,

विधि—सबको अदरख के रस के साथ पीस कर १।१ रत्ती की गोली बनावे ।

सेवनविधि—पहिले दिन २॥ तोला रेंड़ी का साफ तेल एक छटांक गरम दूध में डालकर पिला देना । ऊपर जितना दूध रोगी पी सके पिलाना । यह क्रिया सुबह १ वार करना । इससे कई दस्त आवेंगे । दूसरे दिन से गोली खिलाना । प्रत्येक प्रकार के अतिसार में औषधि प्रयोग करने के प्रथम रेंड़ी के तेल का प्रयोग कर देने से रोग बहुत जल्दी दूर होता है ।

मात्रा—१ या २ गोली । बालक को आधी गोली ।

अनुपान—ताजा जल ।

समय—सुबह, दोपहर शाम और आधीरात को ।

रोग—आमातिसार ।

६३३—अहिफेनबीजादियोग ।

खसखस	१ तो०	राल	१ तो०
शकर	,,	बेलगिरी	,,
जायफल	,,	सोंठ	,,
मोचरस	,,	धाय के फूल	,,
अजवायन	,,	शकर	,,

विधि—सब को महीन पीस कर चूर्ण बनावे।

मात्रा—३ माशा।

अनुपान—मीठा दही ऽ-

समय—दिन में ३।४ बार।

रोग—अतीसार, रक्तातिसार।

६३४–एलाद्यवलेह।

छोटी इलायची के बीज	१ तो०	ईसबगोल	१ तो०
घी	,,	शकर	,,

विधि—सबको एक में मिलाकर २ मात्रा बनाना।

समय—सुबह शाम खाना।

रोग—अतिसार।

६३५–अग्निवर्द्धकअर्क।

सूखापोदीना	५ तो०	सोंठ	१० तो०
सफेद जीरा	१० ,,	स्याह जीरा	,,
बड़ी इलायची	५ ,,	चौकिया सुहागा	५ ,,
नागरमोथा	५ ,,	कालानमक	,,
लाहौरी नमक	१० ,,	नरकचूर	१० ,,

विधि—सब औषधियों का जवकुट करके १२ सेर पानी में मिलाकर भपके से ६ बोतल अर्क निकाल ले।

मात्रा—३ से ५ तोला ।

समय—सुबह, शाम ।

रोग—अजीर्ण, बदहजमी, मंदाग्नि ।

६३६—अग्निवर्द्धकचूर्ण ।

अजवायन	४ माशा	अनीसून	४ माशा
दालचीनी	४ ,,	नागरमोथा	४ ,,
सेंधा नमक	३ तोला	नौसादर	६ ,,
कालीमिर्च	६ माशा	सूखापोदीना	६ ,,
लटजीरा के बीज	६ ,,	करफस	६ ,,

विधि—सबको पीसकर चूर्ण बनावे ।

मात्रा—३ माशा ।

समय—भोजन के बाद ।

रोग—बादी, अजीर्ण, मन्दाग्नि ।

६३७—एलाद्यवलेह ।

छोटी इलायची के दाना	३ तो०	अगर	१॥ तो०
मीठे अनार का शरबत	४ ,,	खट्टे अनारका शरबत	४ ,,
नींबू का शरबत	४ ,,	शक्कर	४ ,,
गुलाब के सूखे फूल	५ ,,		

विधि—सबको एक में मिलाकर अवलेह बना लेना । यह बड़ा ही स्वादिष्ट होता है ।

मात्रा—१ तोला।

समय—सुबह शाम।

रोग—पेट की जलन, पित्तविकार, वमन होना।

६३८—जातीफलादिवटी।

जायफल	४ तोला	सोंठ	५ तो०
कत्था	६ ,,	बेलगिरी	६ ,,
अनार के फल का बक्कल	८ ,,	अतीस	३ ,,
शुद्धहिंगुल	५ ,,	भुना सुहागा	२ ,,

विधि—अदरख के रस के साथ पीस कर एक माशे की गोली बनावे।

माात्रा—१ गोली।

अनुपान—ताजा जल।

समय—सुबह, दोपहर, शाम और सोते समय।

रोग—सब प्रकार के अतिसार।

६३६—अमृत प्रभावटी।

अकर करहा	१ तोला	सेंधा नमक	१ तोला
चीत की जड़	,,	आंवला	,,
कालीमिर्च	,,	छोटी पीपल	,,
अजवायन	,,	हरड़ का छिलका	,,
सोंठ	,,	राई	,,

विधि—सबका महीन चूर्ण करके कागजी नींबू के रस से घोट कर चने बराबर गोलियां बनाना ।

मात्रा—१ गोली । दिन रात में ८ गोली ।

अनुपान—मुह में डाल कर रस चूसना ।

समय—जब आवश्यकता हो ।

रोग—वातज्वर, खाँसी, जुखाम, श्वास, अरुचि, मंदाग्नि गले का दर्द, सर्दी ।

६४०—अकरकरादि तैल ।

अकर करहा	१ तोला	वच	१ तोला
सोंठ	,,	चोपचीनी	,,
काली मिर्च	,,	कट्फल	,,
छोटी पीपल	,,	काले तिलका तैल २८ तो०	

विधि—सबको जवकुट करके पानी में चटनी की तरह पीस लेना । यह चटनी तैल में डाल कर पकाना । चटनी के साथ ही एक सेर बकरी का दूध तेल में मिला देना । तैल मात्र शेष रहने पर छान लेना ।

मात्रा—खाने के लिये १॥ माशा ।

मात्रा—सूंघाने के लिये १५।१५ बूंद दोनों नाक के छिद्रों में डालना ।

अनुपान—दूध के साथ पिलाना ।

समय—सुबह शाम ।

रोग—मृगी, हिस्टीरिया, उन्माद, मस्तिष्क संबंधी रोग ।

६४१—चैतन्य कारक नस्य ।

हिंगुल	६ माशा	अकरकरहा	१॥ तोला
शंख का कीड़ा	१ तोला	बच	१ तोला
सफेद मिर्च	६ माशा	नक छिकनी	३ माशा

विधि—सबको महीन पीसकर अदरख के रसमें घोटना। फिर सुखाकर शीशी में रख लेना। यह नस्य नाक में सुंघाना चाहिये।

मात्रा—१ चुटकी भर।

समय—दौरा के समय।

रोग—अपस्मार, हिस्टीरिया, उन्माद, सिरदर्द, वायु विकार, सन्निपातज्वर, जुखाम, पीनस।

६४२—प्रमेह का सरल उपाय।

धनियां	५ तोला	जवासा की जड़	५ तोला
गोखरू	,,	पाषाण भेद	,,
अमलतास का गूदा	,,	मिश्री	२५ तोला

विधि—सबका महीन चूर्ण करे।

मात्रा—३ तोला दवा लेकर एक सेर जलमें भिगो देना। रात्रि भर भीगने के बाद छान कर दिनमें ३ वार करके इसे पीना।

समय—सुबह, दोपहर, शाम।

रोग—पेशाब की जलन। गंदला पेशाब होना।

६४३—हिचकी की दवा ।

अनार का रस	३ तोला	सेंधा नमक	२ रत्ती

मात्रा—यह १ मात्रा है । दोनोंको मिलाकर पीना । अनार के दाने का रस न मिलने पर अनार की पत्ती का स्वरस १ तोला लेना ।

रोग—हिचकी, श्वास ।

६४४—शुद्ध हरड़े ।

छोटी हरड़	ऽ।	गाय का माठा	१ सेर
नीबू का स्वरस	ऽ।	सेंधा नमक	१ तो०
सांभर नमक	१ तो०	काला नमक	३ तो०

विधि—हरड़ों को माठा में भिगोना जब खूब फूल जाँय तब हरड़े निकाल लेना । धूप में सुखा लेना । फिर नींबू के रस में भिगो देना । साथ ही नमक भी मिला देना और धूप में सुखा लेना । इन्हें कांच की शीशी में बन्द करके रखना । असली हरड़ इस प्रकार तयार होती हैं । पर जो बजार में बिकती हैं वे तेजाब में पिसी होती हैं ।

मात्रा—एक या दो हरड़ ।

रोग—पेट का दर्द, बद हजमी ।

६४५—सुगंधादि तैल ।

कपूर कचरी	१ तोला	केशर	६ माशा
लौंग	६ माशा	सफेद चन्दन चूरा	१ तोला
छरीला	१ तोला	कपूर	१ तोला
पानड़ी के पत्ते	१ तोला	बड़ी इलायची	१ तोला
नींबू के पत्ते	१ तोला	जटा मांसी	१ तोला
नागर मोथा	१ तोला	रतन जात	१ तोला
तिलका तैल	ऽ॥	पानी	ऽ१॥

विधि—सब चीजों को जवकुट कर पानी में भिगो दे। २४ घंटा भीगने के बाद तेल मिलाकर पकाले। तेल मात्र शेष रहने पर उतार कर छान ले। यह तेल सिरमें लगाया जाता है। तेल तयार होने के बाद बोतल में भरते समय कपूर मिलाना।

रोग—बालों का पकना। सिरका दर्द।

६४६—एलादि चूर्ण ।

छोटी इलायची के बीज	२ तोला	केशर	२ तोला
भांगरा	,,	तालीस पत्र	,,
बंशलोचन	,,	दाख	,,
अनार दाना	,,	धनियां	,,
दोनों जीरे	,,	अजवायन	४ तोला
सोंठ	४ तोला	पकी इमली	,,

काली मिर्च	४ तो०	अमलवेत	४ तो०
छोटी पीपल	,,	अजमोद	,,
पीपला मूल	,,	असगंध	,,
चीत	,,	किंवाच के बीज	,,
चव्य	,,	मिश्री	८ तोला

विधि—सबको पीस कर कपड़े से छान ले। बाद में मिश्री पीस कर मिलादे।

मात्रा—३ माशा।

समय—सुबह शाम।

अनुपान—शहद और अदरख का स्वरस।

रोग—ज्वर, प्लीहा, कास, श्वास, शूल।

६४७—रक्तशोधकचूर्ण।

त्रिफला	१ तोला	वाय विडंग	१ तोला
तज	,,	देवदारु	,,
पत्रज	,,	हलदी	,,
बड़ी इलायची	,,	दारु हलदी	,,
नीम के पत्ते	,,	सीसम के पत्ते	,,
गिलोय	,,	सोया के बीज	,,
मेढ़ा सिंगी	,,	पुराने साठी के चावल	,,
चोपचीनी	,,	मिश्री	१५ तोला

विधि—दवाइयों का कपड़छान चूर्ण बनावे। बादमें मिश्री पीस कर मिलादे।

मात्रा—३ माशा से ६ माशा तक।

अनुपान—गिलोय के स्वरस या काढ़े के साथ।

समय—सुबह शाम।

रोग—दाद, खाज, रुधिर विकार, पित्त के विकार।

६४८—हैजे की अव्यर्थ दवा।

इमली का गूदा	६ माशा	भिलावां	१ नग

विधि—दोनों को पीस कर प्याज के रसमें घोल दे और रोगी को पिलावे। यह एक मात्रा है। एक ही मात्रा में लाभ होता है। दिनमें ३ मात्रा देना।

रोग—दुस्साध्य हैजा, हैजे की दशा का शीतांग। हैजे के विषैले कीट इससे मर जाते हैं।

६४९—शूलघ्न चूर्ण।

सोंठ	१ तोला	काला नमक	१ तोला
पोहकर मूल	१ तोला	भुनी हींग	३ माशा

विधि—सबको एक साथ पीस कर कपड़े से छान ले।

मात्रा—१ माशा।

अनुपान—गरम जल।

समय—सुबह शाम । जब आवश्यकता हो ।

रोग—पेट, पीठ, हृदय का शूल । वादी और कफ के शूल ।

६५०—वातव्याधि की दवा ।

त्रिकुटा	३ तोला	पीपला मूल	१ तोला
ब्राह्मी	१ तोला	संभालू के बीज	,,
अकर करहा	,,	पोहकर मूल	,,
लौंग	,,	चिरायता	,,
हाऊबेर	,,	कपूर	,,
सफेद वच	,,	भाँगरा	,,

विधि—सबको महीन पीस कर चूर्ण बनावे ।

मात्रा—६ माशा ।

समय—सुबह शाम ।

अनुपान—गरम दूध ।

रोग—गठिया बात, लकवा, कटिशूल, अपस्मार, हिस्टीरिया ।

६५१—तालीसाधवलेह ।

ऊ	१० तोला	नाग केशर	१० तोला
पत्रज	,,	इलायची	,,
वंशलोचन	,,	सफेद जीरा	,,

स्याह जीरा	१० तो०	धनियां	१० तो०
अनारदाना	,,	पकी इमली	६ तोला
सोंठ	६ तोला	काली मिर्च	,,
छोटी पीपल	,,	पीपला मूल	,,
चव्य	,,	चीत	,,
अमलवेत	,,	अजमोद	,,
अजवायन	,,	मिश्री	८२ सेर

विधि—औषधियों का चूर्ण करके कपड़े से छान लेना। मिश्री की चाशनी में मिला कर रख लेना।

मात्रा—१ तोला।

समय—सुबह शाम।

रोग—हृदय का शूल, श्वास, मंदग्नि।

६५२—सिन्दूरादिवटी।

रससिंदूर	१ तोला	अफीम	१ तो०
लौहभस्म	,,	अभ्रकभस्म (१०० पुटी)	,,
वंगभस्म	,,	शुद्धकपूर	,,
गुर्च का सत	,,	शुक्ति भस्म	,,

विधि—ग्वार पाठे के रस के साथ पीसकर ३।३ रत्ती की गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली।

समय—सुबह शाम ।

अनुपान – दूध ।

रोग—नपुंसकता, स्वप्नदोष, प्रमेह ।

६५३—हिंगुलादिवटी ।

हिंगुल शुद्ध	१ तोला	लौंग	१ तोला
जायफल	„	केशर	„
कुचला शुद्ध	„	कपूर	„
आक की जड़ की छाल	२ तो०	अफीम	४ तो०

विधि—अहिफेन छोड़कर अन्य सब दवाइयाँ तेज शराब में खरल करना गाढ़ा हो जाने पर अफीम मिलाकर २।२ रत्ती की गोली बनाकर शीशी में रख ले ।

मात्रा—१ गोली ।

समय—१ गोली हजम हो जाने पर एक एक घंटा में । गिरजाने पर तुरन्त दूसरी गोली देना ।

अनुपान—मदार की जड़ का स्वरस ३ माशा प्याज का स्वरस ६ माशा दोनों मिलाकर ।

रोग—हैजा ।

६५४—विषमज्वरांतकासव ।

परवल के पत्ते	ऽ।	नीम की छाल	ऽ।
सहदेवी	ऽ।	गिलोय	ऽ।

नागरमोथा	ऽ=	पित्तपापड़ा	ऽ=
चिरायता	ऽ=	कुटकी	ऽ=
धनिया	ऽ=	लाल चन्दन	ऽ=
पद्माख	ऽ=	अतीस	ऽ=
कंजा	ऽ=	गेरू	ऽ=
× भुनीफिटकरी	३ ता०	मुनक्का	ऽ॥
जल	१६ सेर	× गुड़	ऽ५
× शहद या शक्कर	२॥ सेर	× धाय के फूल	ऽ॥

विधि—इस (×) चिन्ह वाली दवायों को छोड़कर अन्य सब दवायों को जवकुट करके १६ सेर जल में पकाना। आठ सेर रह जाने पर छान लेना और एक मटके में भर देना। (×) चिन्ह वाली दवाइयां मटके में छोड़ देना और उसका मुह बन्द कर देना। एक मास के बाद छान कर बोतलों में भर देना।

मात्रा—१ तोला से ४ तोला तक। रोगी के बल के अनुसार।

अनुपान—बराबर का पानी मिलाकर।

समय—ज्वर चढ़ने के एक घंटा पूर्व।

रोग—पारी से आने आले ज्वर मात्र।

———

६५५—गिलटी की दवा।

आक का दूध	१ तोला	रसकपूर	१ तोला
घीग्वार	,,	दानामेथी	,,
गंधाविरोजा	,,	कालाजीरा	,,

सबका एक में मिलाकर गरम करे। मरहम जैसा हो जायगा। प्लेग की गिलटी पर लेप करना और सेंकना। इससे गिलटी बैठ जायगी।

६५६—प्रवालसप्तक।

प्रवालभस्म	१ तोला	सावरशृंगभस्म	१ तोला
हिंगुल	,,	कालीमिर्च	,,
कपूर	,,	केशर	,,

गौमूत्र में शुद्ध किया हुआ खर्पर १ तोला

विधि—सब को पानी से घोट कर मूंग बराबर गोली बनाना।

मात्रा—बालक को एक गोली। बड़े को दो गोली।

अनुपान—बालक को मा का दूध। बड़े को शहद।

समय—सुबह, शाम, रात्रि को १० बजे।

रोग—सरदी, खांसी, कृमिरोग, आक्षेपक, छाती की पीड़ा।

६५७—मृगीरोग की दवा ।

वीरबहूटी	हाथी की विष्ठा
हलदी	बालवच

विधि—सबको महीन पीस कर हुलास की तरह सूंघे ।

६५८—शोथ की दवा ।

अरणी का क्षार	६ माशा	लटजीरा का क्षार	६ माशा
कलौंजी	२ तोला	छोटीपीपल	२ तो०

विधि—सबको महीन पीस कर चूर्ण बनावे ।

मात्रा—१॥ माशा या ३ माशा ।

अनुपान—गो मूत्र ।

समय—सुबह शाम ।

रोग—सर्वाङ्ग शोथ, श्वास, कास, शूल ।

६५९—अश्वगन्धादिचूर्ण ।

नागौरी असगंध	१ तोला	आंवला	१ तोला
सोंठ	"	गिलोय का सत्व	"
सफेद जीरा	"	खसखस	"
ईसवगोल	"	तालमखाना	"

विधि—सबका महीन पीस कर चूर्ण बनावे ।

मात्रा—६ माशा ।

अनुपान—१ तोला घी और ६ माशा शहद के साथ मिला कर चाटे, ऊपर से दूध पीवे।

समय—सुबह शाम। २ मास तक।

रोग—प्रमेह, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष।

पथ्य—दूध ताजा और हलका भोजन।

६६०—गुडूच्यादिचूर्ण।

गिलोय का सत्व	१ तो०	सूखा पोदीना	१ तो०
छोटी पीपल	,,	कुलींजन	,,
कालीमिर्च	,,	तज	,,
मौरेठी	,,	छोटी इलायची	,,
वंशलोचन	,,	काकड़ासिंगी	,,
कवाबचीनी	,,	सफेदज़ीरा	,,

विधि—सबको पीसकर महीन चूर्ण बनाना।

मात्रा—३ माशा।

अनुपान—शहद।

समय—सुबह शाम।

रोग—जीर्णज्वर, खांसी।

६६१—नया सितोपलादि।

मिश्री	१६ तो०	सफेद जीरा	८ तो०
छोटी इलायची के बीज	४ ,,	मुलेठी	२ ,,
सफेद चन्दन	१ ,,	कालीमिर्च	६ माशा

विधि—सब को महीन पीस कर चूर्ण करे।

मात्रा—१॥ माशा।

समय—सुबह शाम।

अनुपान—घी, शहद मिलाकर।

रोग—हाथ पैर की जलन, खांसी, श्वास।

६६२—आमलक्याद्यवलेह।

आमला की पीठो	४०	तोला	गुलाब के फूल	३	तो०
नागर मोथा	१॥	,,	लौंग	१	,,
तालीसपत्र	१॥	,,	कपूर कचरो	१॥	,,
तगर	१॥	,,	छोटीइलायची	१॥	,,
बड़ोइलायची	१॥	,,	जायफल	१	,,
बालछड़	१	,,	धनियां	१॥	,,
तज	१॥	,,	केशर	६	माशा
जावित्री	१	,,	रूमीमस्तगी	१	तो०
मिश्री	६२	,,	नागकेशर	१	,,

विधि—आंवलों को उबाल कर उनकी गुठली अलग करना। गूदे को मसलकर तार की चलनी से छान लेना। इसको तोल लेना। अन्य औषधियां कूट पीस कर कपड़े से छान लेना। केशर को पानी में पीसकर मिश्री की चाशनी में मिला देना। चाशनी पाव भर गुलाब जल और पाव भर

पानी में मिश्री गलाकर बनाना। इस चाशनी में सब दवा मिलाकर गाढ़ा अवलेह बना लेना।

मात्रा—१ तोला।

समय—सुबह शाम।

रोग—मन्दाग्नि। यह दीपन पाचन और पित्त शामक है।

६६३—लशुनादिवटी।

शुद्ध लहसुन	८ तोला	काला नमक	१ तोला
सफेद जीरा	१ ,,	सैंधानमक	,,
यवक्षार	,,	कालीमिर्च	,,
लालमिर्च	,,	भुनीहींग	,,
सोंठ	,,	अनारदाना	,,
छोटी पीपल	,,	सूखापुदीना	,,

विधि—सबको एक साथ महीन पीस कर कपड़े से छान ले। इस छने चूर्ण को शुद्ध लहसुन के साथ नीबू के रस में पीस कर चने बराबर गोली बना लेना।

मात्रा—१ गोली।

समय—रोग और रोगी की दशा देखकर। यदि रोग विशेष प्रबल हो तो घंटे घंटे भर में १।१ गोली देना।

अनुपान—जल। लौंग का काढ़ा।

रोग—हैजा, बदहजमी, अजीर्ण।

६६४-बालकों का अपस्मार।

अंधाइली की जड़ १ माशा कालीमिर्च का चूर्ण १ माशा

विधि—दोनों को पीस कर चूर्ण बनावे।

मात्रा—१ रत्ती।

अनुपान—माता का दूध।

समय—१।२ घंटे में।

विशेष—लाक्षादि तैल कपूर मिलाकर सिर के पिछले भाग में मलना या सारे शरीर में मलना।

६६५-रसांजनादिचूर्ण।

रसौत	१ तो०	छोटी हरड़	१ तो०
आँवला	,,	नागकेशर	,,

विधि—रसौत को २ तोला पानी में भिगोदे। घुल जाने पर छान ले। इसी जल में तीनों चीजों का चूर्ण पीस कर सुखाले।

मात्रा—६ माशा।

समय—सुबह शाम।

अनुपान—चावलों का धोवन।

रोग—रजःस्राव।

६६६-मूत्रावरोध की दवा।

१ तोला सेमर के बीज मट्ठा में पीस कर वस्ति स्थान में लेप करें।

६६७-खर्जूराद्यवलेह।

छुहारा	१ तो०	मुनक्का	१ तो०
छोटी पीपल	,,	धनिया	,,

विधि—सबको महीन चूर्ण करना। तीन तोला शहद और एक तोला घी मिलाकर रख लेना।

मात्रा—१ तोला।

समय—सुबह शाम।

रोग—जीर्णज्वर, खांसी, शोथ।

६६८—राख का शरबत।

विधि—भैंस के गोबर के बने हुये कंडों की १० तोला राख को पाव भर पानी में घोल कर घंटे भर बाद गाढ़े कपड़े से छान लो। इस छने हुये जलमें ५ तोला शकर और ३ माशा इलायची के बीज पीस कर मिलादो। एक शीशी में भर कर उस पर ३ खुराक लगादो।

मात्रा—१ खुराक।

समय—सुबह दोपहर शाम।

रोग—प्रमेह, प्रदर।

६६६ -- नागफनी का शरबत।

नागफनी के फल का स्वरस ऽ। शकर ऽ॥

विधि—फलों के ऊपर के काँटे तोड़ कर छिलका उतार दे। गूदा को मथ कर कपड़े से निचोड़ ले। शकर मिलाकर शहद की भांति गाढ़ा शरबत बनावे। यह शरबत लाल रंग का होगा।

मात्रा—६ माशा से १ तोला तक।

अनुपान—दूध में मिलाकर।

समय—सुबह शाम।

रोग—प्रमेह, प्रदर, श्वास, कास, शीघ्र पतन। जिन स्त्रियों के दूध कम होता हो इसके सेवन से उनके दूध होगा।

६७०—शृंग्यादिकाथ।

काकड़ा सिंगी	नारंगी के छिलका
छोटी हरड	छोटी पीपल
सफेद जीरा	चिरायता
पित्त पापड़ा	देवदारु
वच	कूठ
जवासा	कायफल
सोंठ	नागर मोथा
कुटकी	इन्द्र जौ
कचूर	पाढ़ी

संभालू के बीज	गज पीपल
चव्य	चीत
पिपलामूल	नीम की छाल
अमलतास का गूदा	बरियारी की जड़
इन्द्रायन की जड़	बाकुची
वाय विडंग	हल्दी
अजवायन	राई
गिलोय	दशमूल

विधि—सबको १।१ तोला लेकर जवकुट करके रखले। इसमें से २ तोला दवा लेकर ४० तोला जल में पकावे। १० तोला शेष रहने पर छान ले। शीशी में भरले।

मात्रा—५ तोले।

अनुपान—६ माशा अदरख का रस और आधी रत्ती भुनी हींग मिलाकर।

समय—सुबह शाम।

रोग—सन्निपात के ज्वर।

६७१—पौष्टिक खीर।

खस खस	१ तोला	बादाम	१ तोला
चिरौंजी	१ तोला	घी	ऽ॥
शकर	ऽ॥	दूध	१ सेर
गिलोय का सत्व	१॥ माशा	केशर	१ माशा

विधि—चिरोंजी, खसखस और बादाम को दूध के साथ महीन पीस कर दूध में पकावे। खीर पक जाने पर उतार ले। उतारते समय घी, शक्कर, केशर, गिलोय का सत्व एक में मिलाकर मिलादे।

मात्रा—अपनी प्रकृति और पाचन शक्ति के अनुसार।

विशेष—यह पौष्टिक और बल वर्धक है।

६७२—खसखस की खीर।

खस खस	१ तोला	दूध	ऽ।

विधि—दोनों को एक में पकाकर २ तोला शकर डालदे।

मात्रा—अवस्थानुसार।

रोग—निर्बलता, अतिसार। बालकों के लिये यह योग बहुत उत्तम है।

६७३—अहिफेन विष की दवा।

रीठे का फल	१ तोला	पानी	ऽ।

विधि—रीठे के महीन चूर्ण को पानी में घोल दे।

मात्रा—एक बार में रोगी जितना पीसके भरपेट पिलावे। वमन होने पर फिर पिलावे? बेहोशी हो तो चमच से मुँह और नाक में थोड़ा थोड़ा डाले।

रोग—अफीम का विष, सर्प का विष।

६७४—पँसुली की दवा ।

घोंघा की भस्म	१ तोला	भुनी अजवायन	१ तोला

विधि—नदी में होने वाला शंख के आकार का घोंघा लेकर उपलों की अग्नि से फूंकना। फिर अजवायन मिलाकर पीस कर शीशी में रखना।

मात्रा—एक रत्ती।

अनुपान—पान का रस ।

समय—दिन में ३।४ बार।

रोग—बालकों का श्वास, पँसुली का रोग।

६७५—दंत-मंजन ।

अकरकरहा	२ तोला	सोंठ	१ तोला
वंशलोचन	१॥ तो०	नमक	१ तोला

विधि—नींबू के रस के साथ घोट कर सुखा लेना। शीशी में भर लेना ।

मात्रा—१ माशा।

प्रयोग—दांतों में मल कर लार टपकाना।

समय—दिन में २।३ बार।

रोग—दांतों के रोग, मुँह का बद जायका।

६७६—खर्जूरादि वटी।

छोहारा	१ तोला	तज	१ तोला
अनार की कली	१ तोला	अफीम	१ तोला
बरगद की जटा	१ तोला	आमकी कोंपल	१ तोला

विधि—सबको पानी से पीस कर मूंग बराबर गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली।

समय—दिन में ३ बार।

अनुपान—माता का दूध या ताजा जल।

रोग—बालकों का अतिसार, सरदी की खाँसी।

६७०—कुलिंजनादि चूर्ण।

कुलिंजन	१ तोला	अकर करहा	१ तोला
लौंग	१ ,,	केशर	१ ,,
काली मिर्च	१ ,,	कस्तूरी	१ ,,
छोटी पीपल	१ ,,	जायफल	१ ,,

विधि—सबका चूर्ण करके कपड़े से छान ले।

मात्रा—२ रत्ती।

समय—दिन में ३।३ घंटे में।

अनुपान—शहद और पान का रस।

रोग—सान्निपातिकज्वर, प्रलाप, कास, सर्दी की पीड़ा।

६७८—त्रिफलादि घृत ।

त्रिफला	३ तोला	हरी गिलोय	१ तोला
कटैया की जड़	१ ,,	पवांड की जड़	१ ,,
वासा की जड़	१ ,,	नीम की छाल	१ ,,
करंज की मींगी	१ ,,	दूध	३२ ,,
घी	१ सेर	सादा पानी	४ सेर

विधि—औषधियों को पीस कर दूध में घोल दे। घी मिलाकर पकावे। घी मात्र शेष रहने पर उतार कर छानले।

मात्रा—६ माशा।

अनुपान—गरम दूध।

समय—सुबह शाम।

रोग—कुष्ठ, रक्त विकार।

पथ्य—चना की रोटी और घी।

परहेज—खटाई, नमक, लालमिर्च।

६७९—सेंहुआ की दवा।

केला के पत्तों की भस्म	३ माशा	हलदी	३ माशा

विधि—पानी में पीस कर लेप करै।

समय—दिनमें ३।४ वार।

रोग—दाद, सेंहुआ।

६८०—करंजादितैल।

करंज के बीज	५ तो०	इन्द्रायण के बीज	५ तो०
अकरकरहा	५ ,,	सोंठ	५ ,,

विधि—सबको कूटकर चलनी से छान लेना। कंजे की मींगी का तैल २० तोला लेकर कड़ाही में डालकर चूल्हे पर चढ़ाना। सब औषधियों को २ सेर पानी में घोलकर इसी तैल में मिला देना। मंदी आंच से पकाना। जब तैल मात्र रह जाय तब उतार कर छान लेना। यह तैल मालिश के काम में आता है।

रोग—वात व्याधि।

६८१—विडंगादिवटी।

बायबिडंग	१ तो०	कौड़ी की भस्म	१ तो०
राई	,,	छोटी हरड	१ ,,
शुद्धसींगिया	,,	सेंधा नमक	२॥ ,,
भुनी हींग	,,	शंखभस्म	१ ,,

विधि—सबको महीन पीस कर एक बार अदरख के रस के साथ घोटकर सुखाना। एक बार सहिंजन की कोमल फलियों के या सहिंजन वृक्ष की छाल के रस से घोट कर छोटे बेर बराबर गोली बना कर सुखाना।

मात्रा—१ गोली।

अनुपान—गरम जल।

समय—सुबह शाम।

रोग—शूल, वायुगोला।

६८२—एलादिवटी।

बड़ी इलायची	१ तोला	कौड़ी की भस्म	१ तोला
छोटी इलायची	,,	कालीमिर्च	,,
सफेद जीरा	,,	मिश्री	,,

विधि—तुलसी पत्र के रस से घोट कर बेर बराबर गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली।

अनुपान—तुलसी पत्र रस और शहद।

समय—जब आवश्यकता हो। दिन भर में १२ गोली तक दी जा सकती है।

रोग—वमन होना, सूखी उबकाई आना। जी मिचलाना, खाँसी।

६८३—उकौत की दवा।

तूतिया	१ तो०	सफेद राल	१ तो०
गाय का मक्खन	५ ,,	गन्धक	,,

विधि—तीनों चीजें पीसकर मक्खन में सान कर रख

छोड़ो। यह मालिश के काम में आता है। दिन में ३।४ वार उकौत में इस मरहम को चुपड़ना चाहिये।

समय—७ दिन में लाभ होगा।

रोग—उकौत, छाजन, दाद।

६८४—गठियावात की दवा।

अफीम	१ तोला	गाय के दूध का मक्खन	४० तोला

विधि—दोनों को मिलाकर आग में पकावे। इसको आक के पत्ते पर चुपड़ कर पत्ते को सेंक कर दर्द की जगह में बांध दे।

६८५—मुस्तादिचूर्ण।

नागरमोथा	३ माशा	अतीस	३ माशा
कचूर	,,	काकड़ासिंगी	,,
तज	,,	छोटी पीपल	,,

विधि—सबको पीस कर चूर्ण बनावे।

मात्रा—१ माशा। बालक को ४ रत्ती।

समय—दिन में ३।४ वार।

अनुपान—शहद।

रोग—खांसी, ज्वर।

६८६—मरिचादिवटी ।

कालीमिर्च	६ माशा	छोटी पीपल	६ माशा
जवाखार	३ ,,	अनार का बकला	१ तो०
गुड़	५ तो०	मौरेठी	६ माशा

विधि—सब दवाइयां पीसकर गुड़ में सान कर मटर बराबर गोली बनावे ।

मात्रा—१ गोली । मुँह में डालकर चूसना ।

समय—जब आवश्यकता हो ।

रोग—कास, श्वास ।

६८७—दाडिमादिचूर्ण ।

अनार का छिलका	८ तोला	शक्कर	३ तोला
पिपरामूल	१ ,,	अजवायन	१ ,,
मिर्च	१ ,,	सोंठ	१ ,,
धनिया	१ ,,	वंशलोचन	६ माशा
सफेद जीरा	१ ,,	तज	६ ,,
पत्रज	६ माशा	पोस्त के डोंडा	६ ,,
बड़ी इलायची	६ ,,	केशर	४ ,,

विधि—सबको चूर्ण कर कपड़े से छान ले ।

मात्रा—१ से ३ माशा तक ।

अनुपान—ताजा जल । अतिसार या संग्रहणी में तक्र के साथ ।

समय—सुबह शाम ।

रोग—वायगोला । अतीसार, संग्रहणी ।

६८८—सूखा रोग की दवा ।

मेहदी के पत्ते	६ माशा	छोटी इलायची	३ माशा
सफेद चन्दन	३ ,,	लौंग	३ ,,
मीठा तेल	८ तोला	पीपल की लाख	३ ,,

विधि—सबको, तेल में पका ले । जल जाने पर तेल को उतार ले । इस तेल को छाने बिना ही बालक के शरीर में मालिश करे ।

रोग—सूखा पुराना बुखार ।

६८९—साबुन का मरहम ।

देशी साबुन ४ तो० रेंड़ी का तेल ५ तो०

विधि—दोनों को मिलाकर थोड़ा गरम करें और डंडे से घोटकर मिला दे ।

रोग—छाजन में इसको लगाने से लाभ होता है ।

६९०—मखाने का शरबत ।

मखाने का चूर्ण	१ तोला	आम की छाल	३ तोला
पानी	१० ,,	शकर	२॥ ,,

विधि—संध्या समय छाल को पानी में भिगो दो । सुबह

छान लो। इसी पानी में शकर और मखाने का महीन चूर्ण घोलकर पिला दो।

मात्रा—यह एक मात्रा है।

समय—प्रातःकाल।

रोग—पेशाब में सफेदी जाना, आमातिसार, गरमी की ऋतु के दस्त।

६६१—कंटकार्यावलेह।

कटैया की जड़	ऽ३	पुराना गुड़	ऽ२
अजवायन	१ तो०	पानी	।ऽ२

विधि—सबको एक मिट्टी के बड़े पात्र में डालकर चूल्हे पर पकाना। जब चतुर्थांश जल रह जाय तब कपड़े से छान ले। छने हुए जल को फिर औटावे। अवलेह जैसा गाढ़ा हो जाने पर ठंढा करके चिकने मिट्टी के पात्र में रखले।

मात्रा—१ माशा।

समय—सुबह शाम और सोते समय।

रोग—कास, श्वास।

६६२—भैरव रस।

शुद्ध शिंगरफ	१ तो०	सफेद मिर्च	१ तो०
सफेद इलायची	,,	शुद्ध सींगिया	,,

विधि—सबको अदरख के रस से दो प्रहर तक खरल करके गोली बनाना।

मात्रा—१ गोली।

समय—सुबह शाम।

अनुपान—अदरख का रस।

रोग—प्रसूति का ज्वर, अजीर्ण, झोलावात, वायगोला, सन्निपातज्वर।

६६३—वंगावलेह।

स्वर्ण वंग	२ तोला	शुद्ध पारा	१ तोला
सोंठ	४ ,,	शतावरी	१५ ,,
काली मिर्च	४ ,,	तज	२ ,,
छोटी पीपल	४ ,,	पत्रज	२ ,,
जायफल	२ ,,	नागकेशर	२ ,,
लौंग	२ ,,	छोटी इलायची	२ ,,
जावित्री	२ ,,	मिश्री	४३ ,,
शहद	१०० ,,	केशर	२ ,,
चांदी की भस्म	२ ,,	शुद्ध गंधक	१ ,,

विधि—पत्थर की खरल में पारा गंधक को घोट कर कजली बनावे। वंग और चांदी को इसी के साथ घोटे। फिर अन्य औषधियां पीसकर इसी में मिलाकर घोटे। फिर मिश्री और शहद मिलाकर अवलेह बनाले।

मात्रा—१ तोला ।

समय—सुबह शाम ।

अनुपान—दूध ।

रोग—निर्बलता । वृद्धावस्था में यह अवलेह सेवन करना विशेष उपयोगी है ।

६६४—सर्प विष की दवा ।

शुद्ध पारा	गंधक
शुद्ध तूतिया	भुना सोहागा
हलदी	वन्दाल

विधि—पारा गंधक को एक साथ घोटकर कजली बनावे । इसी में सब दवाइयां पीस कर मिलादे और वाला के पत्तों के रसमें घोट कर मटर बराबर गोली बनावे ।

मात्रा—१ गोली ।

अनुपान—मनुष्यके त्र में घिस कर आखों में लगाना । काटे हुये स्थान में लेप करना ।

रोग—सर्प का विष ।

६६५—बीछू के विष की दवा ।

नवसादर	१ तोला	हरताल	१ तोला

विधि—दोनों को पानी में पीस कर गोली बनावे । पानी में गोली घिसकर काटे हुये स्थान में लगावे ।

६९६—कट्फलादि चूर्ण।

कायफल भुनी फिटकरी

विधि—दोनों का महीन चूर्ण करले।

मात्रा—१ रत्ती।

अनुपान—लगा हुआ पान। पान में डाल कर खाना।

रोग—कफ के विकार, खाँसी, श्वास।

६९७—विल्वादिवटी।

कच्चे बेल का गूदा फिटकरी

सफेद कत्था माजूफल

विधि—सूखी दवाओं को खूब महीन पीसकर बेल के गोले गूदे के साथ पीस ले और झरबेरी के बड़े बेर के बराबर गोली बनावे।

प्रयोग—१ गोली। रात्रि को योनि में रखना।

रोग—योनि से पानी बहना, योनि की शिथिलता, रक्त-प्रदर। इसके प्रयोग से योनि का संकोचन होता है।

६९८—चन्दनादिवटी।

लाल चन्दन	३ माशा	खस	३ माशा
गौरीसर	,,	कमलगट्टा की जड़	,,
धनिया	,,	कुरैया की छाल	,,
मौरेठी	,,	सफेद चन्दन	,,

विधि—आध सेर पानी में सब दवाइयों का काढ़ा पकाना। एक छटाँक शेष रहने पर छान लेना और मिश्री डाल कर पिलाना।

रोग—गर्भिणी स्त्री का ज्वर, अतिसार, रक्तातिसार।

६९९—विल्वादि अवलेह।

कच्चे बेल का गूदा	१ तो०	धाय के फूल	१ तो०
गज पीपल	,,	सुगंधवाला	,,

विधि—इन दवाइयों को खूब महीन पीस कर कपड़े से छान लेना। पाव भर पानी में डाल कर कड़ाही में पकाना। साथ ही पाव भर मिश्री डाल देना। चाटने लायक अवलेह हो जाने पर उतार लेना।

मात्रा—३ माशा से एक तोला तक।

समय—दिन में ४।६ बार।

रोग—बालकों का अतिसार।

७००—शृंग्यादि अवलेह।

काकड़ासिंगी	१ तोला	पोहकरमूल	१ तोला
अतीस	,,	नागरमोथा	,,
छोटीपीपल	,,	मौरेठी	,,
मजीठ	,,	बंशलोचन	,,

विधि—सबका महीन चूर्ण करके पाव भर मिश्री और पाव भर पानी मिलाकर कड़ाही में पकाना। शहद की भांति गाढ़ा हो जाने पर उतार लेना।

मात्रा—१॥ माशा। दिन में कई बार।

अनुपान—माता का दूध।

रोग—बालकों का कास श्वास ज्वर, अतिसार, दूध डालना।

सप्तम शतक समाप्त।

अष्टम शतक।

७०१—मुखरंजनवटी।

सफेद कत्था	जायफल
कपूर	चिकनी सुपारी
तज	तेजपात
नागकेशर	बड़ी इलायची
कस्तूरी	नागरमोथा

विधि—खैर की छाल के काढ़े में सब दवाइयां पीसकर चना प्रमाण की गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली मुख में डाल कर चूसना।

रोग—मुख के रोग, मुंह की दुर्गन्धि, कास, श्वास।

७०२—मेधावर्द्धनीवटिका ।

सोंठ	अजमोद
हलदी	दारुहलदी
सेंधा नमक	सफेद वच
मौरेठी	मीठाकूठ
छोटी पीपर	सफेद जीरा

विधि—ब्राह्मी के स्वरस से दोबार घोटकर मटर बराबर गोली बनाकर सुखा ले।

मात्रा—१ से ६ गोली तक ।

अनुपान—मक्खन मिश्री के साथ ।

रोग—उन्माद, मस्तिष्क को निर्वलता ।

७०३—गंधराज अंजन ।

आवला सार गंधक	ताम्रभस्म

विधि—दोनों को महीन पीसना । सुरमे की भांति सलाई से आखों में लगाना ।

रोग—कामला, आँखों से पानी बहना, फूली, माड़ा ।

७०४—हरिकेशवरस ।

शुद्ध खपरिया	शुद्ध तूतिया
शुद्ध सुहागा	सेंधा नमक
त्रिकुटा	यशदभस्म

विधि—पानी में पीसकर कालीमिर्च जैसी गोली बनावे। गोलियों को छाया में सुखावे।

मात्रा—१ गोली।

अनुपान—शहद में घिसकर आंखों में लगावे।

रोग—सुरखी, परवाल, धुन्ध, अर्जुन रोग (नाखूना) आदि आंखों के रोग।

७०५—वराटिकायोग।

कौड़ी की भस्म	२ तोला	बकरी के दूध का मक्खन	४ तो०
कालीमिर्च	॥१ ,,	शुद्ध हिंगुल	३ मा०

विधि—दोनों चीजें एक रोज मक्खन के साथ घोट ले। बाद में एक दिन कागजी नीबू के रस के साथ और ६ दिन जल से घोट कर ॥२ रत्ती की गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली सुबह शाम।

अनुपान—१ छोटी पीपल और शहद।

रोग—पुराना ज्वर, विषमज्वर, रक्तातिसार, मंदाग्नि।

७०६—नागेश्वरवटी।

सीसा की भस्म	१ तोला	अभ्रक भस्म	१ तोला
मदार की जड़ का बक्कल	,,	कायफल	,, ।
शुद्ध गंधक	१। तो०	शुद्ध पारा	३ माशा

विधि—पारा गंधक को एक साथ घोट कर कजली करे।

और चीजें इसोमें मिलाकर अदरख के रस से घोटकर आधी रत्ती की गोलियाँ बनावे ।

मात्रा—१ गोली । दिन में ३।४ वार ।

अनुपान—ज्वर में पान के रस से, मुंह से रक्त गिरने पर जीरा और शहद से, यक्ष्मा में खजूर के पत्तों के रस में, मंदाग्नि में लौंग के साथ, आमवात में विरेचक औषधि के साथ देना ।

रोग—ज्वर, क्षय, कासश्वास, मंदाग्नि, आमवात ।

७०७—अहिफेनादिवटी ।

अफीम	१ तोला	लौंग	२ तोला
जायफल	२ "	जावित्री	"
मोचरस	२ "	सिंगरफ	"
बट की कामल जटा	२ "	केशर	"

विधि—पोस्त के काढ़े में सब को पीसकर मटर बराबर गोली बनावे ।

मात्रा—१ गोली ।

अनुपान—चावलों के धोवन और मिश्री के साथ ।

रोग—अतिसार, संग्रहणी, स्त्रियों के मासिक होते समय का दर्द ।

७०८—पर्पटादिक्वाथ।

पित्तपापड़ा	३ माशा	चिरायता	३ माशा
नीम की छाल	,,	परवल के पत्ते	,,
धमिरा	,,	त्रिफला	,,
बासा की जड़	,,	हरी गिलोय	,,

विधि—सबको जवकुट करके आधा सेर पानी में काढ़ा पकावे। एक छटाँक शेष रहने पर छान कर पिलावे।

अम्लपित्त, पित्त की खट्टी कै होना।

७०९—तिक्त चूर्ण।

चिरायता	सफेद वच
सोंठ	कचूर
कायफल	तुलसी के पत्ते
कालीमिर्च	छोटी पीपल

विधि—सबको महीन कूटकर गुर्च के रसमें घोट कर सुखाले।

मात्रा—१ से ३ माशा तक। जल से सुबह दोपहर और शाम को ले।

रोग—पित्त कफ ज्वर।

७१०—अहिफेनादिलेप ।

अफीम	सेंहुड़ के पत्ते
आक के पत्ते	तमाखू का पत्ता
सहिंजन की छाल	कड़ुवा कूट

विधि—पानी से सबको पीसले, गरम करके दर्द के स्थान पर लेप करै।

रोग—पँसुली का दर्द। जुखाम का सिरदर्द।

७११—शिलादि वटी ।

शुद्ध मैनसिल	१ तोला	छोटी पीपल	१ तोला
कागजी नींबू के बीज	१ तोला	तुलसीके बीज	१ „

विधि—सबको महीन पीस कर खरल में डालै। इसे करेला के फलके रसके साथ ८ प्रहर घोटे। फिर १।१ रत्ती की गोली बनावे।

मात्रा—१।१ गोली। दिन में तीन चार बार।

अनुपान—करेला का रस और शहद।

रोग—पारी से आने वाला ज्वर। सन्निपातज्वर।

७१२—अंजन वटी ।

नीम के बीज	३ माशा	अमलतास के बीज	३ माशा
शुद्ध मैनसिल	३ „	शुद्ध तूतिया	३ „
छोटी पीपल	३ „	बकायन के बीज	३ „

विधि—कागजी नींबू के रसमें १२ प्रहर लगातार घोटकर मटर बराबर गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली।

अनुपान—कागजी नींबू के रस में घिसकर दोनों आंखों में अंजन की भांति लगावे।

रोग—ज्वर।

७१३—प्लीहघ्नलेप।

काले तिल	१ तोला	अजवायन	१ तो०
प्याज	१ ,,	सिरका	५ ,,

विधि—सबको पीसकर सिरका में पका ले। एरण्ड के पत्ते पर यह गरम गरम लेप रखकर प्लीहा पर लगादे। ऊपर से पट्टी बांध दे। तीन दिन लेप करे।

७१४—उदरारिरस।

शुद्ध तूतिया	३ माशा	छोटी पीपल	१ तो०
छोटी हरड़	१ तो०	शुद्ध गंधक	१ ,,

विधि—थूहर के दूध और अमलतास के काढ़े से ५।५ दिन खरल करे।

मात्रा—१ माशा। गरम पानी से।

पथ्य—इमली का शरबत। दस्त आने के बाद पोकर लगा हुआ पान खाय।

रोग—कब्ज से होने वाले उदर रोग मात्र।

७१५—ज्वरघ्नीगुटिका ।

छोटी पीपल	३ माशा	शुद्ध मैनसिल	३ माशा
रीठा के बीज	,,	कालीमिर्च	,,

विधि—केले के रस से पीस कर चना बराबर गोली बनावे ।

मात्रा—१।१ गोली सुबह शाम जल से ।

रोग—विषमज्वर, पारी के ज्वर, अग्निमान्द्य ।

७१६—नागरादिवटी ।

सोंठ	१ तोला	भुना सुहागा	१ तोला
सेंधा नमक	,,	शुद्ध गन्धक	,,

विधि—सहिंजन की पत्ती के रस की ७ भावना देकर चना बराबर की गोली बनावे ।

मात्रा—१ से ४ गोली तक जल से ।

रोग—हैजा, अजीर्ण, शूल ।

७१७—ज्वरघ्नउबटन ।

भांग	२ तोला	कड़ुवाकूट	२ तोला

विधि—बकरी के दूध में पीस कर गरम करले । इस उबटन को हाथ पैरों के तलुये पर मालिश करे ।

रोग—वातज्वर ।

७१८—ज्वरघ्न काजल।

भांग कीहरी पत्तियोंका रस, मलमलका धुला कपड़ा ४ गिरह

विधि—कपड़े को भांग के रस में ७ बार भिगो भिगोकर सुखा ले। इस कपड़े की बत्ती बनाकर रेंड़ा के तेल में भिगोकर जलावे। जिस प्रकार काजल पारा जाता है उसी तरह इसका काजल पारें। यह काजल आँख में सूखा ही लगाना चाहिये।

रोग—वातज्वर।

७१९—विरेचक तैल।

रेंड़ी का तैल	ऽ।	इन्द्रायण की जड़	१० तोला

विधि—दो सेर पानी में इन्द्रायण की जड़ का काढ़ा करे जब आधा सेर पानी शेष रह जाय तब उतार कर छान ले। इसी काढ़े को रेंड़ी के तेल में पचावे। पानी जल जाने पर तेल को छान ले।

मात्रा—१ तोला से २ तोला तक।

रोग—उपदंश, आमातिसार।

पथ्य—मूंग की खिचड़ी।

७२०—रक्तशोधक काढ़ा।

कचनार की छाल	२ तो०	बबूर की फली	२ तो०
इन्द्रायण की जड़	,,	छोटी कटैया का पंचांग	,,
पुराना गुड़	,,	शीशम का बुरादा	,,

विधि—तीन सेर पानी में सबको कुचल कर पकाना। तीन पाव शेष रहने पर उतार कर छान लेना। इसे एक बोतल में भर कर ७ खुराक लगा लेना। दो दो घंटे में एक खुराक रोगी को पिलाना।

रोग—उपदंश. रक्तविकार, कंठमाला।

७२१—गंज का तैल।

हलदी	३ माशा	तूतिया	१।। माशा
सफेद कनेर की पत्ती	१ तोला	भिलावा	१ तोला
सरसों का तैल	१० ,,	केवांच के बीज	१ ,,
आक का दूध	५ ,,	गंधक	१ ,,

विधि—सबको महीन कूट कर तेल में जला लेना। जल जाने पर ठंढा करके कपड़े से छान लेना। छने हुए कीट को अलग पीस कर तैल में मिला देना। इसे शिर में लगाना।

रोग—गंज, खुजली, सड़नेवाला घाव।

७२२—कासीसादि पोटली।

हीरा कसीस	३ माशा	फिटकरी	३ माशा
जामन की गुठली	,,	आम की गुठली	,,
धाय के फूल	,,	त्रिफला	,,

विधि—सबको महीन पीसकर शहद में सान ले। पोटली बनाकर योनि के भीतर रक्खे।

रोग—श्वेतप्रदर, चिकनाहट, योनि के रोग।

७२३—शीशम का शरबत।

शीशम का बुरादा	२० तोला	नदी का जल	३ सेर

विधि—३ सेर जलमें बुरादे को २४ घंटा तक भीगने दे। फिर इसका काढ़ा करे। तीन पाव पानी बचने पर उतार कर छान ले। इसी में तीन पाव शकर मिलाकर शरबत पका ले। शहद की तरह गाढ़ा होने पर उतार ले। ठंढा करके बोतल में भर ले।

मात्रा—१ तोला। सुबह शाम। जलमें मिलाकर।

रोग—कुष्ठ, रुधिरविकार।

७२४—सुजाक की दवा।

तज	१ तोला	शीतलचीनी	१ तोला
चोपचीनी	१ ,,	रेवतचीनी	१ तोला
शकर	४ ,,	सोरा	१ तोला

विधि—सबको पीसकर एक में मिलावे।

मात्रा—६ माशा। सुबह शाम।

अनुपान—बकरी का ताजा दूध।

रोग—सूजाक में पेशाब के साथ मवाद आना दर्द होना।

७२५—गोक्षुरादि चूर्ण।

गोखरू	२ तोला	सफेद जीरा	१ तोला
समुद्रझाग	१ तोला	शोरा	१ तोला
अफीम	१० रत्ती	छोटी इलायची	१ तोला

विधि—सबको कूट कर कपड़े से छान ले। इसकी दस पुड़िया बनावे।

मात्रा—१।१ पुड़िया सुबह शाम ठंढे पानी से।

रोग—सुजाक, मूत्र कृच्छ्र, पेशाब में चिनिंग होना।

७२६—निम्बासव।

नीम की छाल	ऽ।	परवल के पत्ते	ऽ।
सहदेवी	ऽ।	हरी गिलोय	ऽ।
नागर मोथा	ऽ=	पित्तपापड़ा	ऽ=
चिरायता	ऽ=	कुटकी	ऽ=
धनियां	ऽ=	लालचन्दन	ऽ=
पद्माख	ऽ=	कंजा	ऽ=
अतीस	ऽ=	गेरू	ऽ=
भुनी फिटकरी	३ तोला	मुनक्का	ऽ॥
जल	१६ सेर	गुड़	ऽ५
शहद	ऽ२।. सेर	धाय के फूल	ऽ॥

विधि—काष्ठादि दवाइयों को कुचल कर सब एक में मिलाकर एक मिट्टी के चिकने पात्र में भरे, उसी में सब चीजें डालकर पात्र का मुख बन्द करदे। १ मास बाद छान कर काम में लावे।

मात्रा—२।४ तोला। बराबर जल मिलाकर सुबह शाम।

रोग—पारी के ज्वर। पुराने ज्वर। यह सर्वज्वर पाचन है।

७२७—श्वेतकुष्ठ का लेप ।

वावची के बीज	ऽ–	अमलतास की पत्ती	ऽ–

विधि—दोनों को पीस कर चूर्ण बनाले, कपड़े से छान ले, गुलाब जलसे स्नान कर यह दवा सफेद दागों में लगाई जाती है।

मात्रा- आवश्यकतानुसार।

समय—सुबह शाम।

रोग—श्वेतकुष्ठ।

विशेष—इसके सेवन से चर्म में छोटी छोटी फुँसियां जब उठखड़ी हों तब लेप लगाना बन्द करदे और मक्खन लगावे। फुंसियां मिटजाने पर फिर लेप लगाना शुरू करे।

७२८—श्वेतकुष्ठहरचूर्ण ।

वावची के बीज	ऽ–	काले तिल	ऽ–
शुद्ध गंधक	१ तोला	शुद्ध हरताल	१ तोला

विधि—सबको नारियल के जल के साथ एक दिन घोट कर एक एक माशे की गोली बनावे।

मात्रा—१ या २ गोली।

समय—सुबह शाम।

अनुपान—जल। यदि किसी को इसके खाने से विशेष गरमी मालूम हो तो नारियल के जल के साथ खावे।

रोग—सर्वाङ्ग का श्वेतकुष्ठ।

विशेष—इसके सेवन से शरीर में फुंसियां उत्पन्न हो जाती हैं। उस समय तिलका तेल या नारियल का तेल शरीर भरमें लगाना चाहिये।

७२६—चन्द्रप्रभा तैल।

वावची के वोज ऽ। तिलका तैल १ सेर

विधि—वावची के बीजों को कूट कर चलनी से चालले ४ सेर नारियल के पानी में घोल दे और तैल मिलाकर धीमी धीमी आंच से दो दिन तक पकावे। जब तैल मात्र शेष रहे तब छान ले। यह तैल मालिश किया जाता है और खाया भी जाता है।

मात्रा खाने को—१ माशा।

अनुपान—गरम दूध में मिलाकर।

समय—सुबह शाम।

मालिश करने की मात्रा—श्वेतकुष्ठ के दागा पर इसे चुपड़ना।

रोग—सर्वाङ्ग-श्वेतकुष्ठ, गलित कुष्ठ।

७३०—अण्डबृद्धिनाशकलेप।

धतूरे की जड़ १ तोला कड़वा तेल १ तोला

विधि—धतूरे की जड़ पीस कर तेल में मिलावे। इसे गुनगुना करके लेप लगावे।

रोग—अंडकोषों की सूजन और दर्द।

७३१—दूब का पाक।

बेसन	६ माशा	दूब का आटा	६ माशा
घी	१ तोला	शकर	२ तोला
नागकेशर	१ माशा	धनिया	३ माशा

विधि—बेसन को घी में भून ले। अन्य चीजें पीसकर इसी में मिलादे। दूब का आटा भी डाल दे। आधो छटांक जल में शकर घोलकर डाल कर इसे हलुवा की तरह पकाले।

मात्रा—यह एक मात्रा है।

समय—प्रातःकाल।

रोग—प्रदर, मासिक का विकार। इसके सेवन से मासिक ऋतु ठीक ठीक होने लगता है।

७३२—दूर्वादिचूर्ण।

सफेद दूब की जड़	१ तोला	मोचरस	१ तोला
माजूफल	,,	तालमखाना	,,
बड़ा गोखरू	,,	कबाबचीनी	,,
वंशलोचन	,,	गुर्च का सत	,,
तज	,,	सालम मिश्री	,,

किवाच के बीज	१ तो०	मुलेहठी	१ तो०
सफेद मूसली	,,	काली मूसली	,,
ताल मखाना	,,	सतावर	,,
बीजबंद	,,	उटंगन के बीज	,,
तुख्मरेहा	,,	बबूर का गोंद	,,
पिस्ता के फूल	,,	सुपारी के फूल	,,
आम का बौर	,,	रूमी मस्तगी	,,

विधि—सब को महीन पीस कर बराबर की मिश्री मिलावे।

मात्रा—३ या ६ मासे।

समय—सुबह शाम।

अनुपान—चूर्ण खाकर ऊपर से दूध की लस्सी पीना।

रोग—श्वेतप्रदर, प्रमेह।

७३३—आर्द्रकघृत।

अदरख का स्वरस	S।	नींबू का स्वरस	S।
दालचीनी	१ तोला	जायफल	१ तोला
गौ का घी	S=	केशर	१ माशा

विधि—दालचीनी, केशर और जायफल को पानी में चटनी की तरह पीसकर अदरख नींबू के रस में घोल देना। सबको मिलाकर कड़ाही में पकाना। जब आधा स्वरस जल जाय तब गाय का एक सेर दूध कड़ाही में डाल देना।

घी मात्र शेष रहने पर उतार कर ठंढा कर लेना। इसे छानकर बोतल में भर लेना। यह घृत खाने के काम में आता है।

मात्रा—१ तोला।

अनुपान—पाव भर गरम दूध में मिलाकर पीना।

समय—सोते समय।

रोग—कटिशूल, पीठका दर्द, गृध्रसी, त्रिकशूल।

७३४—आर्द्रकावलेह।

अदरख का स्वरस	५० तोला	शकर	५० तोला
लौहभस्म	६ माशा	नागरमोथा	६ माशा
धनियां	६ माशा	दालचीनी	"
तेजपात	"	छोटी इलायची	"
सफेद जीरा	"	लौंग	"
कालीमिर्च	"	छोटी पीपल	"
केशर	"	जायफल	"
घी	१ तोला	कपूर	१ माशा
शहद	५ तोला	कायफल	१ तोला

विधि—काष्ठादिक औषधियां महीन पीसकर अदरख के स्वरस में मिलाना। शकर मिलाकर कड़ाही में चाशनी पकाना। अवलेह की तरह गाढ़ा होने पर घी मिलाकर उतार लेना। बिलकुल ठंढा हो जाने पर शहद मिलाकर चीनी मिट्टी या पत्थर के पात्र में रख लेना।

मात्रा—३ माशा से १ तोला तक ।

समय—सुबह शाम और सोते समय ।

रोग—जुखाम, शूल, खांसी, श्वास, अर्श, क्षय ।

७३५—अदरख का मुरब्बा ।

अदरख के टुकड़े	ऽ।	शक्कर	ऽ।।।
केशर	३ माशा	छोटी इलायची	१ तोला

विधि—एक सेर पानी में अदरख को उबालना । पावभर पानी जल जाने पर उसी पानी में शक्कर डालकर कड़ाही में पकाना, इलायची के बीज और केशर पीस कर मिला देना । गाढ़ा होने पर उतार लेना ।

मात्रा—१ तोला ।

समय—प्रातः व सायंकाल ।

रोग—मंदाग्नि, कास, श्वास ।

७३६—नस्य ।

सोंठ	३ माशा	नीम की छाल	३ माशा
कालीमिर्च	,,	नकछिकनी	,,
छोटी पीपल	,,	कायफल	,,

विधि—इनको खूब महीन पीसकर रखले ।

मात्रा—१ रत्ती । नाक में सूंघना चाहिये ।

रोग—कफज्वर, जुकाम, सिर का दर्द, खांसी ।

७३७—भारंगी का अवलेह ।

भारंगी	२ तोला	कायफल	३ माशा
सोंठ	३ माशा	काकड़ा सिंगी	३ माशा
काली मिर्च	३ माशा	हरड़ का बकला	३ माशा
छोटी पीपल	३ माशा	बहेड़े का बकला	३ माशा

विधि—सबको पीसकर महीन चूर्ण बनावे ।

मात्रा—३ माशा ।

अनुपान—शहद ।

समय—सुबह शाम ।

रोग—कफज्वर, श्वास, खांसी, मंदाग्नि ।

७३८—अदरख का शरबत ।

अदरख का रस	ऽ।	जल	ऽ।
मिश्री	ऽ।।	केशर	२ तोला
लौंग	१ तोला	जायफल	१ तोला
जावित्री	१ तोला	छोटी इलायची	१ तोला

विधि—मिश्री छोड़ कर सबको एक में जल मिलाकर पकाना । आधा पानी जल जाने पर उतार कर छान लेना ।

इस छने हुये पानी की शहद के समान गाढ़ी चाशनी बना लेना।

मात्रा—१ तोला।

समय—सुबह शाम चाटना।

रोग—कास, श्वास, मंदाग्नि।

७३९—अदरख का तैल।

अदरख का स्वरस	ऽ।	कायफल का काढ़ा	ऽ॥
तिल का तैल	ऽ=	अकरकरहा	१ तोला

विधि—सबको मिलाकर कड़ाही में पकाना। तैल मात्र शेष रहने पर उतार लेना, छान कर बोतल में भर लेना। यह तैल मालिश के काम में आता है।

रोग—गृध्रसी, कटिशूल, पृष्ठशूल, त्रिकशूल, वातरोग।

७४०—कनकप्रभावटी।

धतूरे का फल लौंग

विधि—फल को कपड़े से लपेट दे। कपड़े के ऊपर से मिट्टी की मोटी तह लगा दे। इस गोले को अग्नि में तपावे। ऊपर की मिट्टी पक कर लाल हो जाने पर निकाल ले। ठंढा करके फल को निकाल ले। इसी फल के बराबर लौंग मिला

कर पीस ले । फिर मिर्च बराबर गोलियां बना ले । पीसने में जल की आवश्यकता हो तो अदरख का रस मिलाले ।

मात्रा—१ गोली । मुख में रखकर चूसे ।

समय—जब आवश्यकता हो ।

रोग—खाँसी, श्वास ।

७४१—द्राक्षाद्यवलेह ।

मुनक्का	ऽ-	पोस्त की बोंडी	ऽ-
लिसोड़े के पीले पत्ते	ऽ-	गूलर के पीले पत्ते	ऽ-
काली मिर्च	१ तो०	मिश्री	ऽ।

विधि—एक सेर पानी में ऊपर की दवाओं को पीसकर घोल दे । अग्नि में इसे पका ले । पाव भर पानी शेष रहने पर छान ले । छानने के बाद पानी में मिश्री मिलाकर चाशनी बनाले । यह गाढ़ा गाढ़ा अवलेहजैसा बन जायगा ।

मात्रा—३ माशा ।

समय—दिन रात में ५।६ वार ।

रोग—खांसी, बालकों का अतिसार ।

७४२—दादका मरहम ।

गंधक	१ तोला	पारा	६ माशा
सुहागा	१ तोला	कालीमिर्च	३ माशा

विधि—सबको महीन पीसकर घी में मिलाकर मरहम बनाले। दाद में इसको लगाने से दाद शीघ्रही अच्छा होता है। लगाने में तकलीफ कुछ नहीं होती।

७४३—कफज्वर की दवा।

त्रिकुटा चूर्ण १ माशा अदरख का स्वरस १ तोला

विधि—सब को एक में मिलाकर गरम करना फिर ठंढा करके ६ मासे शहद (मिलाना)

मात्रा—यह एक मात्रा है।

समय—सुबह शाम।

रोग—ज्वर, कफ, खांसी, श्वास, शूल।

७४४—लालमिर्च की गोली।

लालमिर्च २ तोला भुनी हींग १ माशा

विधि—नींबू के रस में १६ पहर घोटाई करके झरबेरी के वेर बराबर गोली बनाले।

मात्रा—१ गोली।

समय—हर दो घंटे में।

अनुपान—लौंग का काढ़ा।

रोग—हैजा।

७४५—सर्व ज्वर में पाचनवटी।

पित्तपापड़ा	चिरायता
गिलोय	कुटकी
नागरमोथा	कंजे के पत्ते
नीमके पत्ते	अड़ूसे के पत्ते
इन्द्र जौ	बाय विडंग
सोंठ	अजवायन

विधि—सब का महीन पीसकर और तुलसी के रस के साथ घोटकर ३।३ रत्ती की गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली।

समय—सुबह, शाम, दोपहर। जाड़ा देकर आने वाले ज्वर में ज्वर आने के ३।४ घंटा पूर्व से घंटे घंटे में १।१ गोली देना। चढ़े ज्वर में भी इसे देसकते हैं।

अनुपान—शहद और तुलसी का रस।

रोग—हर प्रकार के ज्वर।

७४६—ज्वरघ्नीवटी।

भूनी फिटकरी	१॥ माशा	छोटी पीपल	३ माशा
बायविडंग	३ माशा	कंजा की मींगी	३ माशा
तुलसी के पत्ते	३ माशा	कालोमिर्च	३ माशा

विधि—सब को पानी से पीस कर ३।३ रत्ती की गोली बनावे।

मात्रा — १ गोली ।

अनुपान—पानी ।

समय— सुबह, दोपहर, शामको ।

रोग—वातकफज्वर, विषमज्वर ।

७४७—तिक्तवटी ।

नीम के पत्ते	१ तोला ।	करंज के पत्ते	१ तोला ।
गूमा के पत्ते	१ तोला ।	लटजीरा के पत्ते	१ तोला ।
कालीमिर्च	१ तोला ।	कुटकी	१ तोला ।

विधि—सब को पीसकर चना बराबर गोली बनाले ।

मात्रा—१ गोली ।

समय—सुबह, दोपहर, शाम ।

अनुपान—ताजा जल ।

रोग—ज्वर, पारी का ज्वर ।

७४८—शतपुष्पादि अर्क ।

सौंफ	५ तोला	भांग	२ तोला
काली मिर्च	५ ,,	लौंग	२ तोला
सूखा पोदीना	५ ,,	दालचीनी	२ ,,
गुलाब के फूल	३ ,,	चीत	२ ,,
तेजपात	२ ,,	बड़ी इलायची	२ ,,

विधि—सब चीजों को कुचलकर पांच सेर पानी में भिगोदे। १२ घंटे भीगने के बाद भपके के द्वारा इसको ऽ२॥ सेर अर्क खींचले। गरम जल के स्थान में इस जलको पिलाना चाहिये।

रोग—हैजा, अपाचन।

७४६—अर्कपुष्पादि वटी।

काला नमक २ तो० काली मिर्च २ तो०

आक के फूल के बीच को लौंग २ तो०

विधि—नींबू के रस से पीस कर चने को बराबर गोली बनावे।

मात्रा—: गोली।

समय—हर घंटे में।

अनुपान—शतपुष्पादि अर्क के साथ या लौंग के काढ़े के साथ।

रोग—हैजा, अजीर्ण।

७५०—कृष्णजीरक चूर्ण।

स्याह जीरा	२॥ तोला	सूखा पोदीना	१० तोला
भुनी लौंग	२॥ तोला	काली मिर्च	२॥ तोला

भुनी हींग	२ तोला	शुद्ध गंधक	५ तोला
सेंधा नमक	५ तोला	चीत की जड़	५ तोला
सोंठ	५ तोला	अजवायन	५ तोला

विधि—सब को महीन पीसकर चूर्ण बनावे ।

मात्रा—६ माशा ।

अनुपान—नींबू का रस ।

समय—एक एक घंटे में ।

रोग—हैजा, अजीर्ण, आमातिसार ।

७५१—अमृतादि स्वरस ।

गिलोय	१ तोला	नीम की हरी सींक	३ माशा
सौंफ़	६ मा०	मुनक्का	६ दाना
काली मिर्च	१ माशा	पानी	१० तो०

विधि—सब को पानी के साथ पीसकर पानी में छान लेना। एक तोला चाँदी के टुकड़े को अग्नि में तपाकर इस पानी में ३ बार बुझाना ।

मात्रा—यह एक मात्रा है ।

समय—सुबह शाम ।

रोग—वातकफ का ज्वर, कास, विषमज्वर ।

७५२—उषणादिवटी।

सोंठ	१ तोला	शुद्ध धतूरा के बीज	१ तोला
रेवतचीनी	१ तोला	बबूल का गोंद	१ तोला

विधि—तुलसी के रस से घोटकर दो दो रत्ती की गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली। बालक को आधी गोली। बहुत छोटे बालक को चौथाई गोली।

समय—तीन तीन घंटा में।

अनुपान—अमृतादि स्वरस के साथ।

रोग—वातकफज्वर, खाँसी।

७५३—खांसी की दवा।

एलुवा	१ तोला	बादामगिरी	१ तोला
मुलेठी का सत्व	,,	भुना सुहागा	६ माशा
बबूर का गोंद	,,	काली मिर्च	६ ,,

विधि—पानी के साथ पीस कर दो दो रत्ती की गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली।

समय—६।६ घंटे का अन्तर देकर।

अनुपान—ताजा जल से।

रोग—खांसी, कफज्वर, कब्ज।

७५४—अर्कपंचक ।

सौंफ का अर्क	मकोय का अर्क
कासनी का अर्क	गुलाब का अर्क
वेदमुश्क का अर्क	

विधि—उपर्युक्त अर्क बराबर मात्रा में लेकर एक में मिलाकर बोतल में भर ले। साधारण गरम पानी न पिलाकर पानी की प्यास में यह अर्कपंचक पिलाना।

रोग—हैजा, अतिसार, आमातिसार, बदहजमी।

७५५—भस्मपंचकवटी।

अभ्रक भस्म	१ तोला	शंख भस्म	१ तोला
कौड़ी की भस्म	,,	प्रवाल भस्म	,,
शुक्ति-भस्म	,,		

विधि—पान के रस में घोटकर एक एक रत्ती की गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली।

समय—हर तीन घंटे में।

अनुपान—पान या अदरख का रस।

रोग—नवीन संक्रामक ज्वर, बातकफ ज्वर।

७५६—मौरेठी का ठंडा काढ़ा।

मौरेठी	१ तोला	मिश्री	२ तोला

विधि—मौरेठी को कूट कर एक छटांक पानी में शाम को भिगो देना। सुबह दवा को उस पानी में मलकर छान लेना और मिश्री मिलाकर पिलाना। सुबह का भिगोया हुआ जल शाम के काम में लाना।

रोग—काली खांसी, कुकर खांसी, दुष्ट खांसी।

७५७—अन्नादिवटी।

बहेड़े का छिलका	१ तो०	आक के फूल	१ तोला
सेंधा नमक	,,	काली मिर्च	,,
कटेरी के बीज	,,	सोंठ	,,
बेदाना अनार का छिलका	,,	छोटी पीपल	,,
वासा पत्र	८ तो०	देशी कपूर	२ माशा

विधि—पानी से पीस कर दो चने बराबर गोलियाँ बना ले।

मात्रा—१ गोली। मुँह में डालकर चूसे।

रोग—हर तरह की खांसी।

७५८—अलसी का लेप।

अलसी	५ तोला	मोम	२ तो०
पोहकर मूल	१ ,,	अफीम	१ ,,

विधि—अलसी को महीन कूट कर और मोम को गरम

करके दोनों को एक में मिला देना। साथ ही अफीम मिला देना। पोहकर मूल को ३ तोला तिल के तेल में जलाकर निकाल देना और तेल को उपर्युक्त अलसी के कल्क में मिला देना। पानी में पीस कर इस लेप को गरम करके छाती पर बांधना या इसकी पोटली बना कर छाती को सेंकना।

रोग—फेफड़े पर कफ का जम जाना और दर्द होना। पँसुली की पीड़ा, न्युमोनिया, श्वास कष्ट।

७५६—कर्पूरादितैल।

कपूर	६ माशा	नवसादर	६ माशा
तारपीन का तेल	१ तोला	तिल का तैल	५ तोला

विधि—सबको एक में मिलाकर थोड़ा गरम करके एक जीव कर ले।

सेवनविधि—छाती को गरम रुई से थोड़ी देर सेंक कर इस तैल की मालिश करे।

रोग—फेफड़े की सूझन, कफ के विकार, छाती की पीड़ा, खांसी श्वास।

७६०—पाचक चूर्ण।

सोंठ	२ तोला	पीपल	२ तोला
सौंफ	,,	सेंधा नमक	,,

अजवायन	२ तो०	काला नमक	२ तो०
काली मिर्च	,,	सूखा पुदीना	,,
दालचीनी	,,	भुना सुहागा	,,
नवसादर	,,	जीरा	,,
पिपरमेंट	१ माशा	टाटरी	,,
भुनी हींग	१ तोला	शक्कर	५ तो०

विधि—सबको महीन पीस कर चूर्ण बनाले ।

मात्रा—१ माशा ।

समय—भोजन के बाद ।

रोग—अजीर्ण, अग्निमान्द्य, अरुचि, पेट का दर्द, पाचन की खराबी ।

७६१—चन्दनादि क्वाथ ।

सफेद चन्दन	३ माशा	लाल चन्दन	३ माशा
खस	,,	मुलेहठी	,,
गोखरू	,,	धनिया	,,
आमला	,,	शीतलचीनी	,,

विधि—आध सेर जलमें पकाना । आध पाव बाकी रहने पर छान लेना । दो तोला मिश्री मिलाकर पीना ।

रोग—मूत्र का दाह, कृच्छ्रता, मूत्रनाली के व्रण, सुजाक के विकार ।

७६२—वासकसत्वादिवटी ।

वासा की जड़ का बक्कल	।ऽ।	थूहर के पत्तों का स्वरस	ऽ।
आक के पत्तोंका स्वरस	ऽ।	धतूरे के पत्तों का स्वरस	ऽ।
छोटी पीपल	१ तो०	छोटी इलायची	१ तो०
लौंग	१ तो०	अफीम	१ तो०
भुना सुहागा	१ तो०	सोंठ	१ तो०

विधि—वासा की जड़ को एक सेर पानी में पकाना। पाव भर पानी शेष रहने पर छान लेना। यह छना पानी और अन्य पत्तों का रस मिलाकर पकाना। जब गाढ़ा होने लगे तब सूखी औषधियां पीसकर मिला देना और चने बराबर गोलियां बना लेना।

मात्रा—१ गोली।

अनुपान—जल।

समय—दिनमें ४ वार रात्रि में दो बार।

रोग—नवीन कफज्वर और उसके साथ होने वाली खांसी।

७६३—शिरदर्द का लेप।

मेंहदी के पत्ते	६ माशा	मुचकंद के फूल	८ माशा
केशर	२ माशा	कपूर	३ माशा
चन्दन का चूर्ण	१ तोला	बादाम	१ तोला

विधि—पानी से पीस कर मस्तक पर लेप करे।

रोग—सिर का दर्द।

७६४—अर्क वटी।

आक के फूल	४ तोला	छोटी पीपल	८ माशा
काली मिर्च	८ माशा	सोंठ	८ माशा
दालचीनी	८ ,,	छोटी इलायची	६ माशा
अजवायन	६ ,,	सेंधा नमक	६ माशा

विधि—सबको घीग्वार के रसमें पीस कर जंगली बेर बराबर गोलियां बनावे।

मात्रा—१ गोली।

अनुपान—जल।

समय—सुबह शाम। आवश्यकतानुसार।

रोग—अजीर्ण, अफरा, कृमि, अग्निमान्द्य, बहुमूत्र, हैजा।

७६५—बुद्धिवर्द्धक चूर्ण।

मीठा कूठ	१ तोला	मीठी वच	१ तोला
असगंध	,,	सेंधा नमक	,,
अजमोद	,,	सफेद जीरा	,,
काला जीरा	,,	सोंठ	,,
काली मिर्च	,,	छोटी पीपल	,,
हलदी	,,	बादाम की मींगी	,,

विधि—ब्राह्मी के स्वरस के साथ ३ बार घोट घोट कर सुखावे।

मात्रा—३ से ६ मासे तक।

समय—सुबह शाम।

अनुपान—ताजा जल।

रोग—स्मरणशक्ति की निर्बलता, दिमाग की कमजोरी, पागलपन।

७६६—मरिचादिवटी।

काली मिर्च	१ तोला	तुलसी के पत्ते	१ तोला
नीम की कोंपल	१ तोला	बहेड़े का छिलका	१ तोला

विधि—सबको पीसकर मिर्च बराबर गोली बनाले।

मात्रा—१ गोली।

समय—दिनमें ४ वार।

अनुपान—शहद।

रोग—कुकुर खांसी।

७६७—प्रमेहांतक चूर्ण।

सालम मिश्री	१० तोला	कालो मुसलो	१० तोला
सफेद मुसली	५ ,,	गोखरू	१० ,,
चोप चीनी	२॥ ,,	दालचीनी	५ ,,
तज	५ ,,	बीजबंद	५ ,,
इन्द्र जौ	१० ,,	छोटी इलायचीके दाना	२॥ ,,

ढांक का गोंद	५ तो०	मिश्री	८० तो०
मृगांक	४ ,,	वंशलोचन	२॥ ,,

विधि—सबको महीन पीस कर चूर्ण बनाले।

मात्रा—१ तोला।

अनुपान—दूध।

समय—सुबह शाम।

रोग—प्रमेह, स्वप्नदोष, धातुविकार।

७६८—दंत मंजन।

कपूर	१ तोला	जायफल	१ तोला
माजूफल	,,	रूमी मस्तगी	,,
पुरानी सुपारी	,,	बड़ी इलायची	,,
सेंधा नमक	,,	तूतिया	,,
लोध	,,	फटकरी	,,
सोंठ	,,	हरड़ का छिलका	,,
काली मिर्च	,,	बहेड़ा का छिलका	,,
छोटी पीपल	,,	आँवला का छिलका	,,

विधि—सबको महीन पीस कर बारीक चूर्ण बनाले। इसे दातों में मले।

रोग—दांत का दर्द, मसूड़ों की सूजन।

७६९—रक्तातिसार की दवा।

जामुन के पत्तों का स्वरस	१ तो०	आम के पत्तों का स्वरस	१ तो०
इमली के पत्तों का स्वरस	१ तो०	शहद	६ माशे
घी	६ माशा	बेलगिरी	३ ,,

विधि—सबको एक में मिलाले।

मात्रा—यह एक मात्रा है।

समय—दिनमें ३।४ वार।

रोग—लाल आँव के दस्त, रक्त मिले आंव के दस्त।

७७०—ठंढा मरहम।

दारु हलदी की छाल	१ तोला	शंख की नाभि	१ तोला
गाय के गोबर का रस	,,	रसौत	,,
लाख	,,	गाय का घी	,,
कड़ुवा तैल	,,	गाय का दूध	,,

विधि—कड़ी चीजों को महीन पीस कर पतली चीजों के साथ मिला लेना।

रोग—उपदंश का घाव इसके लेप से बहुत शीघ्र भरता है। दाह और वेदना दूर होती है।

७७१—उदुम्बरादि स्वरस।

गूलर की पत्ती का रस	१ तो०	गोरखमुंडी का रस	१ तो०
तुलसी के पत्तों का रस	,,	आम की छाल का रस	,,
करौंदा की पत्तो का रस	,,	जामुन की छाल का रस	,,
इमली के पत्तों का रस	,,	कागजी नीबू का रस	,,
मिश्री	,,	घी गुवार का रस	,,

विधि—सबको एक में मिलाकर काच की शीशी में भर ले। इसकी ४ मात्रा बना ले।

मात्रा—प्रति दिन ४ वार।

रोग—रक्तातिसार, प्रवाहिक।

७७२—पाचन अर्क।

बिना बुझा चूना	६ तोला	पानी	३ सेर
अफीम	३ माशा	भुनी हींग	३ माशा
नवसादर	३ तोला	काला नमक	१ तोला
नीबू का रस	१० तोला	कपूर	१ तोला

विधि—चूना को पानी में भिगोवे। रात्रि भर भिगोने के बाद जल छान ले। इस छने हुए जल को थिराकर मिट्टी के पात्र में भर देना। अन्य सब चीजें पीस कर इसी में मिला देना। फिर सबको छान कर बोतल में भर देना।

मात्रा—१।२ तोला। बालकों को ३ माशा।

समय—हर दो घंटे में।

रोग—हैजा, वमन, अतिसार।

७७३—जातीफलादिवटिका।

जायफल	१ तोला	बड़ी इलायची	२ तोला
चरस	३ माशा	अफीम	३ माशा
लालमिर्च	३ माशा	भुनी हींग	३ माशा
कपूर	१ माशा	भुना जीरा	१ तोला

विधि—सबको महीन पीस कर अदरख और नीब के रस में ३।३ बार घोट कर चना बराबर गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली।

समय—३।३ घंटे में।

अनुपान—ताजा जल।

रोग—विशूचिका, अतिसार।

७७४—जातीफलाद्य चूर्ण।

जायफ़ल	१ तो०	सोंठ	१ तोला
अफीम	१ तो०	छुहारा का गूदा	१ तोला
आरने उपलोंको भस्म ४	„	भाँग के बीज	३ माशा

विधि—सबको महीन पीस ले।

मात्रा—१ माशा। बालकों को उनके बल अनुसार मात्रा से देना।

अनुपान—चावलों का धोवन।

समय—दिन में दो तीन वार।

रोग—सब प्रकार का अतिसार रोग।

विशेष—इसे सेवन करने से पहले १ या २ तोला रेंड़ी का तेल दूध के साथ पीकर आँतों को नरम और साफ कर लेना चाहिये।

७७५—सुजाक की दवा।

टेसू के फूल	१ तोला	कलमी शोरा	१ तोला
गोखरू	,,	जवाखार	,,
छोटी इलायची	,,	सखौली की जड़	,,
बरियारी की जड़	,,	ककई की पत्ती	,,
ईसबगोल	,,	मिश्री	६ ,,

विधि—सबको कूट पीस कर चूर्ण बनावे।

मात्रा—४ माशा।

समय—सुबह शाम।

अनुपान—ताजा दूध।

रोग—सुजाक, मूत्राघात।

७७६—सुजाक की पिचकारी।

त्रिफला १ तोला जल ऽ।

विधि—पानी में त्रिफला को मिट्टी की हाँड़ी में डालकर

रात्रि को भिगोदे। सुबह छान कर थोड़ी देर रख दे। निर्मल जल नितार कर-शिश्नेन्द्रिय के छिद्र के भीतर इसकी पिचकारी दे।

रोग—ऊपर का चूर्ण और यह पिचकारी की दवा दोनों एक साथ व्यवहार करने से सुजाक, मूत्राघात, मवाद बहना, शीघ्र ही आराम होता है।

७७७—कनकमूलादिवटी।

धतूरा की जड़	१ तोला	कालीमिर्च	१ तोला
तुलसी के पत्ते	,,	करेला के पत्ते	,,

विधि— तुलसी की पत्ती के स्वरस के साथ घोट कर मूंग बराबर गोली बनावे और छाया में सुखा ले।

मात्रा—१ गोली।

अनुपान—जल।

समय—ज्वर आने के चार घंटा प्रथम से हर घंटे में १।१ गोली खिलाना। ज्वर आने पर न देना। ज्वर की वेला टल जाने पर भी गोली देते रहना। १२ गोली से अधिक न देना।

रोग—विषम ज्वर, प्रसूति ज्वर।

७७८—रक्तामाशय की दवा।

आम की छाल का रस	१ तोला	दही	२ तोला
धान की खील	२ तोला	बेलगिरी	३ मासे

विधि—खीलों को दही में भिगोदे। खीलों के भीग जाने पर छाल का स्वरस और पिसी बेलगिरी मिलाकर पिलादे।

मात्रा—यह एक मात्रा है।

समय—सुबह, शाम और दोपहर।

रोग—रक्तामाशय, प्रवाहिका।

७७९—चंद्रमुखलेप।

बादाम गिरी	२ तोला	घिसा हुआ सफेद चंदन	१ तोला
कपूर	३ रत्ती	सोडा बाई कार्ब	३ माशे
गुलाब का अर्क	२० तोला	गुलाब की रूह	४ बूंद

विधि—चन्दन को गुलाब के अर्क में घिस लेना। बादाम को गुलाब अर्क के साथ खूब महीन पीसना। दोनों को अर्क गुलाब में घोल कर फलालेन से छानलो। सोडा, कपूर और गुलाब की रूह मिलाकर बोतल में भर लेना। बोतल को हिलाकर रख देना। यह दूध मुखमें मला जाता है।

रोग—मुँहासा, मुख का फटना। सिर का दर्द, चेहरे का कालापन।

७८०—सर्पविष की दवा।

ईश्वर मूल की जड़	३ माशा	ईश्वर मूल की पत्ती	३ माशा

विधि—एक छटाँक पानी में दोनों को पीस कर छान ले। रोगी को यही पानी पिलावे। घाव पर पत्ती का रस लगावे।

७८१ – अकरकरादिलेप ।

अकर करहा	१ तो०	असगंध	१ तोला
जायफल	१ ,,	कबूतरकी वीट	१ ,,
मुर्गी के अंडेका छिलका	२ ,,	सूखे केंचुवे	१ ,,

विधि—सबको महीन कूट छान कर तिलके तेल में घोटे। मरहम जैसा हो जाने पर कपड़े में लगाकर शिश्नेन्द्रिय पर लगावे।

सेवन विधि—कपड़े में लेप लगाकर शिश्नेन्द्रिय पर सोते समय चिपका कर बांध दे। सुबह खोल कर गरम पानी से धो डाले। १५ दिन लेप लगाने से बारीक फुँशियाँ उठेंगी वे अपने आप मिट जायँगी। लेप ४० दिन लगाना चाहिये।

७८२ – गोक्षुरादि चूर्ण ।

बड़ा गोखरू	१ तोला	गिलोय	१ तोला
आमला	१ तोला	मिश्री	१ तोला

विधि—सबको पीस कर चूर्ण करले।

मात्रा—६ माशा।

अनुपान—गाय का गरम दूध।

समय—सुबह शाम। १ मास तक।

रोग—हस्तमैथुन जनित शिश्नेन्द्रिय की शिथिलता।

७८३—पारदादि मरहम।

पारा	३ माशा	गंधक	३ माशा
राल	,,	सुहागा	,,
मुरदासंख	,,	घर का धुवां	,,
गुगुल	,,	मोम	१ तो०
सिंदूर	,,	कालीमिर्च	३ माशा
नीम का तेल	५ तो०	तूतिया	,,

विधि—तेल में मोम डालकर गरम करना। अन्य दवाइयाँ महीन पीसी हुई तयार रखना। पारा गंधक को एक साथ घोट कर कजली बनाकर दवाइयों के चूर्ण में मिला रखना। मोम गल जाने पर सब दवा उसी में मिलाकर टीन की डिबिया में रखना। आवश्यकता होने पर लगाना।

रोग—दाद, खाज, सड़ा घाव।

७८४—अफारा की दवा।

छोटी पीपल	१ तो०	सफेद निशोथ	४ तो०
मिश्री	४ ,,	छोटी हरड़	१ ,,

विधि—सबको पीसकर चूर्ण बनावे।

मात्रा—३ माशा।

अनुपान—शहद।

समय—सुबह शाम, सोते समय। या जब आवश्यकता हो।

रोग—पेट का फूलना, वायु का और मल की रुकावट।

७८५—अर्कादि वटी।

छोटी पीपल	१ तो०	आक के फूल	२ तो०
कालो मिर्च	,,	हरड़ छोटी	१ ,,
लौंग	,,	कटेरी के बीज	६ माशा
पुराना गुड़	७ तो०	सोंठ	१ तो०

विधि—काष्ठादिक औषधियाँ महीन पीसकर कपड़े से छान ले। अदरख के रस के साथ घोटकर २।२ माशा की गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली। मुँह में डालकर रस चूसना।

समय—सोते समय या जब खांसी का जोर हो।

रोग—श्वास, पांचो प्रकार की खाँसी।

७८६—अर्श की दवा।

शुद्ध भिलावा	१ तो०	काले तिल	१ तो०
घी में भुनी बड़ी हरड़	,,	पुराना गुड़	,,

विधि—सब को कूट कर एक में मिला ले।

मात्रा—३ माशा।

अनुपान—ताजा जल।

समय—सुबह शाम।

रोग—बवासीर, कब्ज, वातरक्त।

७८७—रक्तरोधकचूर्ण।

सिंघाड़ा	१ तोला	कसेरू	१ तोला
कमलगट्टा	,,	मोचरस	,,
माजूफल	,,	नागकेशर	,,
रूमीमस्तगी	,,	अनार के फूल	,,
कत्था	,,	गेरू	,,

विधि—सबको महीन पीस कर कपड़े से छान ले।

मात्रा—४ माशा।

समय—सुबह, दोपहर शाम।

अनुपान—चावलों का धावन।

रोग—रक्त प्रदर, आर्तव की अधिक प्रवृत्ति।

७८८—धान्यादिक्वाथ।

धनिया	ऽ-	साबुत जौ	ऽ-
कमलगट्टा	ऽ-	चने का छिलका	ऽ-
सफेद चन्दन	ऽ-	तुकमलैया	ऽ-
पीपल की छाल	ऽ-	गूलर को छाल	ऽ-

विधि—आठ सेर पानी में इन दवाइयों को साबुत ही पकाना। दो सेर पानी के जल जाने पर छान लेना। इस जल को कोरी हांडी में भर कर ठंढा कर लेना।

मात्रा—५ से १० तोला।

अनुपान—नीबू, नारंगी या अनार का रस या शरबत।

समय—जब आवश्यकता हो ।

रोग—पित्तज्वर, ग्रीष्म ऋतु की प्यास ।

७८६—चन्दनादिहिम ।

चन्दन चूरा १ तोला	धनिया १ तोला

विधि—दोनों को अर्क केवड़ा में चटनी की तरह पीसकर कोरी हाँड़ी में डालकर आधा सेर पानी में घोल देना। ३ घंटे बाद पानी को कपड़े से छान लेना और उसी कोरी हाँड़ी में भर रखना। आवश्यकतानुसार इस पानी को पिलाना ।

मात्रा—२॥ तोला ।

समय—आवश्यकतानुसार ।

रोग—अतिसार, पेशाब या मल के साथ खून आना, पित्तज्वर की प्यास ।

७६०—प्लीहघ्नक्षार ।

खरबूजा के छिलकों को जलाकर क्षार विधि से क्षार निकाल लेना ।

मात्रा—आधी रत्ती से २ रत्ती तक ।

अनुपान—ऊँटनी का मूत्र, गोमूत्र, या ताजा जल ।

समय—प्रातःकाल, सायंकाल (भोजन के पच जाने पर) ।

रोग—पुरानी और असाध्य प्लीहा इससे एक सप्ताह में दूर होती है ।

७६१—सिर दर्द की दवा ।

केले का रस	१ तो०	घी	१ तो०
काली मिर्च	५ दाना	केशर	१ माशा

विधि—सब को एक में मिलाकर माथे पर लगाना और सूंघना ।

रोग—पीनस का रक्त, सर का दर्द ।

७६२—धतूर घृत ।

धतूरा के बीज	५ तो०	दूध	ऽ५

विधि—बीजों को कूट पीस कर दूध में पकाना । आधा दूध रह जाने पर जामन देकर दही जमा देना । इस दही को मथ कर घी निकाल लेना ।

मात्रा—१ से २ रत्ती तक ।

अनुपान—शहद ३ माशा ।

समय—सुबह शाम ।

रोग—कामेच्छा का अभाव । यह घी तिला का भी काम देता है । शिश्नेन्द्रय की निर्बलता में इसे मालिश करना चाहिये ।

७६३—केशरादिवटी ।

केशर	३ माशा	माजूफल	४ माशा
लौंग	५ ,,	मुरदासंख	२ माशा

सफेद संखिया १ माशा

विधि—सबको पीस कर पान के रस में घोट ले। उड़द समान गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली।

अनुपान—मलाई में रख कर।

रोग—सब प्रकार के उपदंश।

पथ्य—घी का सेवन कुछ अधिक करना चाहिये।

७९४-बिच्छू के विष की दवा।

मोचरस	१ माशा	कड़वी तोरई के बीज	१ माशा
अमलतास के बीज	"	हींग	"

विधि—पानी में पीस कर काटे हुये स्थान में इसका लेप लगाना।

७९५-नहरुये की दवा।

एलुआ	१ तो०	हींग	१ तो०
अफीम	"	कबूतर की बीट	"
रीठा	"	पीली सरसों	"

विधि—पानी में पीस कर नहरुये पर लेप कर दे। ऊपर से आक का पत्ता गरम करके बांधे। इससे नहरुआ आसानी से पक कर निकल जाता है और दर्द कम हो जाता है। नहरुआ निकलना शुरू होने के बाद यह लेप न लगाना।

७९६—दाड़िमादिक्वाथ।

अनार का छिलका	१० तो०	फिटकरी	२ तो०
माजूफल	३ ,,	धाय के फूल	५ ,,
बबूर की फली	३ ,,	पोस्त की डोंडी	५ ,,
बबूर की पत्ती	३ ,,	सुपारी के फूल	२ ,,
बबूर की छाल	३ ,,	मोचरस	२ ,,

विधि—सबको महीन पीस कर ५ सेर पानी में पकाना। आधा सेर पानी रहने पर कपड़े से छान लेना। इस काढ़े में सूती फलालैन भिगोकर सुखा लेना।

सेवनविधि—आवश्यकतानुसार इस फलालैन के टुकड़े को योनि में भीतर रखना।

समय—दिन में तीन वार।

रोग—श्वेत प्रदर।

७९७—प्रदरांतकपाक।

दूध	ऽ५	घी	ऽ१
माजूफल	ऽ-	सुपारी	ऽ-
सेमर का मुसला	ऽ-	कसेरू	ऽ-
इमली के बीज	ऽ-	सेमर के फूल	ऽ-

विधि—सब को महीन चूर्ण करके गाय के दूध में मिला कर पकाना। खोवा बनजाने पर घी में भून लेना। ऽ१॥ सेर पिसी हुई मिश्री मिलाकर मिट्टी की हाँड़ी में रख लेना।

मात्रा—२ तोला ।

समय—सुबह शाम ।

अनुपान—गाय का दूध ।

रोग—श्वेत प्रदर ।

७६८—शाल्मलीपाक ।

सेमर का मुसला	ऽ।	सेमर का फूल	ऽ।
कसेरू	ऽ।	मोचरस	ऽ।
इमली के बीज	ऽ।	चने के मखता	ऽ।

विधि—सब को महीन चूर्ण करके कपड़े से छान ले। शहद में मिलाकर १।१ तोला के लड्डू बना ले।

मात्रा—१।१ लड्डू ।

अनुपान—दूध ।

समय—सुबह शाम ।

रोग—श्वेत प्रदर, प्रमेह ।

७६६—बदरीफलादि चूर्ण ।

सूखे बेर का चूर्ण	४ तो०	मोचरस	२ तो०
शुद्ध रसौत	२ ,,	पुराना गुड़	८ ,,

विधि—सबको पीसकर एक में मिलाना ।

मात्रा—१ तोला ।

अनुपान—दूध या चावलों का धावन। अथवा लाख के काढ़ा में मिश्री मिलाकर ऊपर से पीना।

समय—सुबह शाम।

रोग—रक्त प्रदर।

८००—वटादिअवलेह।

बरगद की कोमल जटा	५ तो०	धाय के फूल	५ तो०
नागकेशर	,,	आम की छाल	,,
जामुन की छाल	,,	आंवला	,,

विधि—सबका महीन चूर्ण करके कपड़े से छान ले। शहद में सान कर अवलेह बना ले।

मात्रा—२ तोला।

समय—सुबह शाम।

रोग—श्वेत प्रदर।

आठवाँ शतक समाप्त।

नवम शतक।

८०१—मुशल्यादिचूर्ण।

सफेद मुसली	१ तोला	सेमल का मुसला	१ तोला
खिरेंटी की जड़	,,	भिंडी की जड़	,,
सुपारीके फूल	,,	रसौत शुद्ध	,,

माजूफल	१ तो०	शिलाजीत	१ तो०
धनिया	,,	मिश्री	,,

विधि—सबको कूट पीस कपड़े से छान ले ।

मात्रा—१ तोला ।

समय—सुबह शाम ।

अनुपान—गाय का ताजा दूध दवा खाकर पिये ।

रोग—श्वेत प्रदर, प्रमेह ।

८०२—प्रदरघ्न पोटली ।

सुपारी के फूल	१ तोला	रसौत	१ तोला
जायफल	,,	माजूफल	,,
गुलाबी फिटकरी	३ मासे	अनार का छिलका	,,

विधि—सबको महीन पीस कर कपड़े से छान ले । महीन कपड़े में १।१ तोला की पोटली बांध ले ।

मात्रा—१ पोटली योनि में भीतर रक्खे ।

समय—दिन में चार पोटली बदले ।

रोग—श्वेत प्रदर ।

८०३—प्रदर की दवा ।

ढाक का गोंद	३ माशा	मिश्री	३ माशा

विधि—ढाक के गोंद को घी में भून ले । फिर मिश्री पीस कर मिला ले ।

समय—सुबह शाम ।

अनुपान—ताजा जल ।

रोग—हर प्रकार का प्रदर ।

८०४—लाक्षादिचूर्ण ।

पीपल की लाख	१ तोला	अशोक की छाल	१ तोला
मोचरस	६ माशा	नागकेशर	६ माशा

विधि—आधा सेर जल में पकाना। आध पाव शेष रहने पर उतार लेना। छान कर पिलाना।

मात्रा—यह एक मात्रा है।

अनुपान—आधपाव दूध २ तोला मिश्री मिलाकर।

समय—दिनमें दो बार।

रोग—रक्तप्रदर, रक्तवमन, रक्तातिसार।

८०५—उदुम्बरादि चूर्ण ।

कच्चे गूलर	१ तोला	अनार की कली	१ तोला
दूध	१० तोला	मिश्री	२ तोला

विधि—पीसकर दूध में घोल कर छान लेना।

मात्रा—यह एक मात्रा है।

समय—सुबह शाम।

रोग—रक्त प्रदर, रक्तातिसार।

८०६—कूष्माण्डावलेह ।

कुम्हड़े का सूखा गूदा	ऽ।	मिश्री	ऽ॥
लौकी का सूखा गूदा	ऽ।	घी	५ तोला

विधि—सूखे गूदों को पीस कर कपड़े से छान ले। फिर घी मिलाकर मिश्री की चाशनी में मिलाकर अवलेह बनाले।

मात्रा—१।१ तोला।

समय—सुबह शाम।

अनुपान—५ तोला बकरी का दूध या चावलोंका धोवन।

रोग—रक्तप्रदर, रक्तपित्त, श्वास।

८०७—वासादि अवलेह।

वासा पत्र रस	३ माशा	ताजे आमले का रस	३ माशा
शहद	३ माशा	मिश्री	३ माशा

विधि—सबको मिलाकर चाटना।

मात्रा—यह एक मात्रा है।

समय—दिन में ३।४ बार।

रोग—रक्तप्रदर, रक्तपित्त।

८०८—वृहत्खदिर वटिका।

खदिर	१ तोला	आमला	१ तोला
लौंग	,,	कपूर	,,
जावित्री	,,	ताम्र भस्म	,,

विधि—पान के रस में पीस कर दो दो रत्ती की गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली।

समय—सुबह शाम और सोते समय।

अनुपान—शहद, अदरख का रस या पान का रस।

रोग—हर तरह की खांसी, श्वास।

८०९—रसादिवटिका।

शुद्ध पारद	शुद्ध गंधक
केशर	नीम की पत्ती (कोंपल)
अतीस	शुद्ध सींगिया
अजवायन का सत	नीम की पत्ती

विधि—पानी के साथ सब चीजें बराबर पीस कर १।१ रत्ती की गोली बनावे। गोली छाया में सुखावे।

मात्रा—१ गोली।

समय—३।३ घंटे में।

अनुपान—पान या अदरख का रस।

रोग—प्लेग का ज्वर।

८१०—प्लेग की गोली।

भीगा हुआ खाने का चूना ६ रत्ती घी ६ रत्ती

विधि—चूने को कपड़े में बांध कर उसका पानी निचोड़ कर लेना चाहिए। घी में मिलाकर ३ गोली बांध लेना।

मात्रा—३ गोली। हरबार ताजी गोली बनाकर खिलाना।

अनुपान—घी लपेट १।१ गोली निगल जाना। यदि गोली गले में अटक जाय तो जल के सहारे कंठ से उतार देना।

समय—रोगी के बलानुसार २।२ या ३।३ घंटे में।

रोग—प्लेग।

विशेष—रोग के कम होने पर ३ या ४ घंटे में दवा देना। इसके सेवन से कोई हानि नहीं होती। १२ वार औषधि खाने पर चाहे जैसा भयंकर ज्वर हो शांत हो जाता है।

८११—नयनसुधावर्ती।

विधि—कंजा के बीज की मींगी को ढाक के फूलों के रस में ७ वार घोटघोट कर सुखाना। पतली पतली बत्ती बनाना।

सेवनविधि—बकरी के दूध या शहद में घिसकर आंख में आंजना।

समय—सुबह शाम।

रोग—नेत्र का फूला।

८१२—निम्बादिवटी।

निबोली १	शोरा
रसोत	एलुवा
छोटी हरड़	नागकेशर

विधि—सबको मूली के रस में घोट कर जंगली बेर बराबर गोली बनावे।

मात्रा—२ गोली ।

समय—सुबह शाम ।

अनुपान—गरम जल ।

रोग—खूनी और बादी बवासीर ।

८१३—शिरोधावन चूर्ण ।

सीकाकाई	१० तोला	आँवला सूखा	२० तोला
बालछड़	५ ,,	सफेद चन्दन	५ ,,
पांडरी	५ ,,	खस	५ ,,
सुगंधबाला	५ ,,	सुहागा	५ ,,

विधि—सबको महीन पीस कर चूर्ण बनावे ।

मात्रा—आवश्यकतानुसार ।

समय—स्नान करने के समय ।

अनुपान—पानी में सान कर शिर पर मले, बाद में धो डाले ।

रोग—जूं, लीख, बालों का पकना, बालों की कड़ाई, बालों का झड़ना, सिर का दर्द ।

८१४—कृमिघ्न लेप ।

इन्द्रायन की जड़ नीम की छाल

विधि—दोनों को पानी के साथ पत्थर पर घिस ले । बालक के गुदा में इसे लेप कर दे ।

मात्रा—आवश्यकतानुसार ।

समय—दिन में दो बार ।

रोग—बालकों का चुन्ना लगना, गुदा की सूझन, खाज, और ललाई ।

विशेष—परन्तु एक रोग में गुदा का चर्म गलकर लाल हो जाता है। इस रोग में यह दवा न लगाना चाहिये ।

८१५—सूर्यक्षारादिवटी ।

सोरा	२ तोला	नवसादर	१ तोला
भुना सुहागा	१ तोला	छोटी पीपल	„
रेवतचीनी	„	जवाखार	„
सेंधा नमक	„	अर्कलवण	„
सरफोंका का क्षार	„	मूली के बीज	„

विधि—सबको महीन पीस कर घीग्वार के रस में खरल करे। बेर बराबर गोली बनावे ।

मात्रा—१ गोली ।

अनुपान— गरम जल ।

समय—सुबह शाम ।

रोग—प्लीहा, उदरविकार, अपाचन ।

८१६—मुस्तादि वटी ।

नागर मोथा	१ तोला	राल	१ तोला
सोंठ	„	धाय के फूल	„

लोध्र	१ तोला	बेलगिरी	१ तोला
इन्द्रजव	,,	मोचरस	,,
छुहारा	,,	नेत्रवाला	,,
जायफल	,,	माँई	,,
मूली के बीज	,,	गूलर की पत्ती	,,

विधि—सबको महीन पीसकर कपड़े में छान ले। एक सेर पोस्त की डोंडी मय बीजों के लेकर ४ सेर पानी में पकावे। एक सेर पानी शेष रहने पर मल कर छान ले। इस छने हुए पानी को कड़ाही में डालकर फिर आग पर रखले। गाढ़ा होने पर उतार ले। इसी में उक्त औषधियों का चूर्ण डाल कर घोट ले और सुखा ले।

मात्रा—दो माशा। बालकों को एक माशा।

अनुपान—चावल के धोवन में घोल कर।

समय—दिन में ३।४ वार।

रोग—सब प्रकार के प्रबल अतिसार।

८१७—वातघ्न मर्दन।

फिटकरी ऽ। गोमूत्र ऽ।

विधि—फिटकरी पीस कर गोमूत्र में मिला दे। एक बड़ी हाँडी में बन्द कर जमीन में गाड़ दे। १ मास बाद निकाले। यह मालिश के काम में लाया जाता है।

रोग—गठिया, कमर और पँसुली का दर्द, वायु का दर्द।

८१८—दाद खाज की दवा।

तिल का तैल	८ तोला	कत्था	१ तोला
नीम की पत्ती	२ तोला	किवांच के बीज	२ तोला
नीला थोथा	२ माशा	कपूर	३ माशा
मोम	१ तोला	राल	१ तोला

विधि—तेल, मोम और राल एक में मिलाकर गरम करे गरमी पाकर तीनों चीजें एक में मिल जायँगी। अन्य दवाइयां खूब महीन पीस कर इस तैल में मिला दे। सब को मिलाकर घटाई करना चाहिये।

रोग—दाद और खाज में इसकी मालिश करना चाहिये। बहने वाले खाज के छालों में इस मरहम को लगाना चाहिये।

८१९—श्वासघ्न क्षार।

सेंधा नमक	१ तोला	सोहागा	१ तोला
फिटकरी	”	धतूरे के बीज	”
अजवायन	”	काला नमक	”

विधि—सबको पीसकर आक के दूध में घोटले। सबका एक गोला बनावे और २० कंडो की आग में फूंक दे।

मात्रा— १ रत्ती।

समय— सुबह शाम।

अनुपान—अदरख का रस या अर्क गावजबाँ।

रोग—खांसी श्वास।

८२०—केशरादि लेप।

केशर	३ माशा	मैनफल	४ माशा
पिसा कुचला	१ माशा	चन्दन चूरा	३ माशा

विधि—सबको सौंफ के अर्क में घोट कर मस्तक में लेप करै।

समय—जब आवश्यकता हो।

रोग—सिर का दर्द।

---

८२१ बलादि चूर्ण।

बरियारा की जड़	१ तो०	ककई की पत्ती	१ तो०
तालमखाना	,,	केवांच के बीज	,,
बड़ी गोखरू	,,	शतावर	,,
सफेद मुसली	,,	कालो मुसली	,,
गुलसकरी	,,	तोदरी	,,
गगेरन की छाल	,,	सहदेवी का पंचांग	,,
सेमर का मुसला	,,	मिश्री	१३ ,,

विधि—सबको महीन पीस कर चूर्ण बनावे।

मात्रा—२ तोला।

अनुपान—दूध।

समय—सुबह शाम। २१ दिन तक।

रोग—धातु दौर्बल्य।

८२२—दंत मंजन ।

गेरू	२ तोला	फिटकरी	१ तोला
कपूर	६ माशा	काईफल	६ माशा

विधि—महीन चूर्ण कर शीशीमें रख छोड़े। आवश्यकता पड़ने पर दांतो को मांजे।

रोग—मसूड़ों का फूलना, मुंह के फोड़े, मसूड़ों से खून गिरना, दर्द होना।

८२३—पेचिश की दवा।

वेला की पत्ती	६ माशा	कालीमिर्च	२ रत्ती

विधि—दोनों को छटाँक भर पानी में पीस छानकर पीवे

मात्रा—यह एक मात्रा है।

समय—सुबह शाम।

रोग—पुराने से पुराना आमातिसार, मरोड़।

८२४—ज्वरातिसार की दवा।

मदारकी जड़का छिलका	२ तो०	अफीम	३ माशा
बबूल का गोंद	८ ,,	बबूल की कोंपल	१ तोला

विधि—सब को महीन पीसकर १०० गोलियां बनाना।

मात्रा—१। १ गोली।

अनुपान—ताजा जल।

समय—दिन में ३। ४ वार।

रोग—ज्वर, अतिसार, आमातिसार प्रवाहिका।

८२५—लोधादि चूर्ण।

पठानी लोध	४ तोला	बेलगिरी	२ तोला
पोस्त की डोंडी	३ ,,	अजवाइन	३ ,,
जायफल	३ ,,	इन्द्रजौ	३ ,,

विधि—सबको महीन पीसकर चूर्ण बनावे।

मात्रा—३ से ६ माशा तक।

समय—सुबह, दोपहर, शाम।

अनुपान—ताजा जल।

रोग—आँव के दस्त आना।

८२६—विषमज्वरांतकवटी।

कालीमिर्च	१ तोला	छोटी पीपल	१ तोला
लौंग	१ तोला	बड़ी इलायची	१ तोला

विधि—तुलसी की पत्ती के रसकी भावना देकर चना बराबर गोली बनाना।

मात्रा—ज्वर आनेके ३ घंटा पहले से हर घंटे १। १ गोली देना।

अनुपान—जल।

रोग—जाड़ा देकर आने वाला ज्वर।

८२७—देवदाली तैल।

विधि—पाताल यंत्र के द्वारा देवदाली के बीज का तैल निकाल ले।

रोग—गुद द्वार और गुदा के भीतर इसको लगाने से बवासीर के मस्से एक पक्ष में आराम हो जाते हैं।

८२८—चांगेरी का प्रयोग ।

विधि—नोनिया शाक के पत्तों को चटनी की तरह पानी से पीस कर काटे हुये स्थान में लगाना चाहिये।

रोग— विच्छू का विष, बरैया का विष।

८२९—लकवा का तैल ।

सिंगरफ	२ तोला	आक के फूल	२ तोला
कुचला	१ ,,	धतूरे के बीज	१ तोला
अफीम	३ माशा	गोला (गरी)	१ तोला

विधि—सब औषधियों का कल्क बनावे। एक सेर तिल का तैल और ४ सेर आक के पत्तों का स्वरस मिलाकर तैल पकाले। इस तैल की लकवा मारे हुए अंग में मालिश करना चाहिये।

८३०—गेंदा की चटनी।

हजारा गेंदा के फूल	नग २	मिश्री	२ तोला

विधि—दोनों को पीस कर चटनी बनाले या ठंढाई की तरह छान ले।

मात्रा—यह एक मात्रा है।

समय—सुबह शाम। २१ दिन तक।

रोग—प्रमेह, स्वप्नदोष।

८३१—अखरोट का अवलेह।

अखरोट की मींगी	१ सेर	शहद	२ सेर
केशर	१ तोला	जावित्री	१ तोला
लौंग	,,	तज	,,
पत्रज	,,	इलायची	,,

विधि—सबको पीस कर शहद में मिला कर पात्र में रखदे। एक मास के बाद सेवन करे।

मात्रा—२ तोला।

समय—प्रातःकाल।

रोग—धातुविकार, निर्बलता, प्रमेह, शीघ्रपतन।

८३२—ठंढीपुलटिस।

पीपल वृक्ष की छाल	१ तोला	ईसवगोल	१ तोला
तुकमलंगा	१ तोला	सफेद तोदरी	१ तोला

विधि—चारों चीजों को एक में मिलाकर पीसले। थोड़े पानी में १ माशा दवा डालदे। ५ मिनिट में गाढ़ी पुलटिस बन जायगी। एक कपड़े पर रखकर इसे फोड़े पर रखदे। घंटे घंटे में पुलटिस बदलता रहे।

रोग—फोड़ा, रक्तविकार से उत्पन्न शोथ, जलन, दर्द।

विशेष—इससे उठता हुआ फोड़ा बैठ जायगा। पका हुआ फूट जायगा। दवा लगातेही कष्ट बन्द होगा। यह पुलटिस कच्ची ही बांधी जाती है।

८३३—विसहरी का मरहम।

मीठा तेल	५ तोला	मोम	१ तोला
कलई चूना	६ माशा	सफेदा (जस्त)	६ मासे

विधि—मोम को आग पर (कटोरी में रखकर) पिघलाओ। पिघल जाने पर तेल डालदो। दोनों मिल जाने पर थोड़ा थोड़ा चूना डालते जाओ और मिलाते जाओ। एक दिल हो जाने पर कपड़े की पट्टी पर लगाकर जरा गरम करके उंगली में बांध दो। अगर घाव नहो या चमड़ा कड़ा हो तो एक दिन ठंढी पुलटिस बांधो। बाद में यह मरहम बांधो।

रोग—हाथ की उंगली में निकलने वाली विषहरी, गँसहरी काँख में निकलनेवाली कँखवारी।

८३४—ज्वरघ्न पेय।

गुलबनफशा	२ तोला	गावजवाँ	२ तोला
हरी गिलोय	२ ,,	मुलेहटी	१ तोला
सफेद चन्दन	१ ,,	+ककड़ी के बीज	,,
+राम तरोई का रस	४ ,,	+खीरा के बीज	,,

+खीरा का रस	५ तोला	+कुम्हड़ा के बीज	१ तोला
+अनारदाना का रस	५ ,,	+लौकी के बीज	,,
जवासा की जड़	१ ,,	पित्तपापड़ा	,,
धनियां	१ ,,	+अमरूद का रस	५ तोला
मुनक्का	५ ,,	शक्कर	२० तोला

विधि—(+) इस चिन्ह की औषधियां छोड़कर अन्य दवाइयां जवकुट करके रात्रिको दो सेर पानी में भिगोदे। प्रातःकाल इसको पकावे। आधासेर जल शेष रहने पर छानले। चारों बीज महीन पीसकर मिलादे। चारों स्वरस और शक्कर मिलाकर काढ़े को कड़ाही में पकावे। शरबतका पाक बन जाने पर उतारले। कांच की बोतल में भरले।

मात्रा—२ तोला।

अनुपान—४ तोला जल मिलाकर।

समय—सुबह शाम।

रोग—पुराना बुखार। क्षय की प्रारंभिक अवस्था की हरारत।

८३५—कफघ्नतैल।

रेंड़ी का तैल	५ तोला	तारपीन का तैल	१ तोला
मोम का तैल	१ ,,	अजवायन का सत	१ मासे
पिपरमेंट का सत	१ मासे	अलसी का तैल	५ तोला

विधि—सबको एक में मिलाकर छाती में मलना चाहिये।

रोग—ज्वर में कफके कारण छाती का जकड़ना, पसली का दर्द, शोथ । संधियों में वायु का दर्द हो तो संधियों में इसको मालिश करना चाहिये ।

८३६—प्रमेहांतक चूर्ण ।

पीपल की छाल	५ तोला	मिश्री	५ तोला

विधि—दोनों को पीसकर एक में मिलालेना ।

मात्रा—१ से ३ माशा ।

समय—सुबह, शाम ।

अनुपान—ताजा जल ।

रोग—प्रमेह, प्रदर ।

८३७—श्वासघ्न अवलेह ।

पीपल की छाल	१ तोला	शहद	५ तोला

विधि—छाल को पीसकर शहद में मिलाले ।

मात्रा—६ माशा ।

समय—सुबह, शाम ।

रोग—श्वास ।

८३८—योनिशोधक क्वाथ ।

पीपल वृक्ष की छाल	१ तोला	गूलर वृक्ष की छाल	१ तोला
त्रिफला	३ तोला	माजूफल	१ तोला

विधि—सबको जवकुट करके रखले।

मात्रा—२ तोला। एक सेर पानी में पकाना। तीन पाव रहने पर छानलेना। इसजल से पिचकारी द्वारा योनि धोना।

रोग—प्रदर, योनि का ढीलापन। योनिके सब रोग।

८३६—विषमज्वरांतक क्वाथ।

करंज के पत्ते	३ माशा	करंज के बीज	३ माशा
चिरायता	,,	परवल के पत्ते	,,
धनियां	,,	पित्तपापड़ा	,,
नीम की छाल	,,	गिलोय	,,

विधि—यह एक मात्रा है। आधा सेर पानी में पकाना। आध पाव शेष रहने पर छान लेना और शहद डालकर रोगी को पिलाना।

समय—सुबह, शाम।

रोग—जाड़ा देकर पारी से आने वाला ज्वर। चढ़ उतर कर आने वाला ज्वर।

८४०—वीर्यवर्धक मोदक।

गेहूं का निशास्ता	१। सेर	खोआ	१। सेर
घी	१। सेर	मिश्री	५ सेर
बादाम की गिरी	१० तो०	दालचीनी	२ तो०
चिलगोजा	५ तो०	शकाकुल मिश्री	२ तो०

पिस्ता	५ तो०	सालममिश्री	२ तोला
कद्दू की मींगी	२ तो०	सफेद मूसली	"
बिनौले की मींगी	"	काली मूसली	"
शतावर	"	सेमर का मुसला	"
कौंच के बीज	"	सुर्ख बहमन	"
सेमर के बीज	"	सोंठ	"
सफेद बहमन	"	अगर	"
कुलींजन	"	तगर	"
मीठा कूट	"	काली मिर्च	"
कपूर कचरी	"	छोटी इलायची	६ माशा
बड़ी इलायची	६ माशा	अकरकरहा	५ तो०

विधि—गेहूँ का सत और खोआ को घी में भून लेना। और चीजों को महीन कूटकर मिला देना। मिश्री को चाशनी में मिलाकर ३।३ तोला के लड्डू बनाना।

मात्रा—१ लड्डू।

अनुपान—दूध।

समय—सुबह, शाम।

रोग—निर्बलता, वीर्य की कमी और पतलापन।

८४१—कफघ्नलेप।

अलसी	१ तोला	आक की जड़ की छाल	१ तो०
कड़ुवा कूट	"	पोहकर मूल	"

खारी नमक	१ तोला	मोम	१ तोला
हलदी	,,	कायफल	,,

विधि—सबको एक में कूट कर पानी के साथ पकालें। पकते समय थोड़ा कड़वा तैल मिलादें। यह थोड़ा गरम लेप छाती पर लगाना चाहिये।

रोग—वातकफ ज्वर, ज्वर में जब कफ बढ़ा हो, छाती का दर्द, जुखाम के कारण छाती का दर्द, बालकों की पँसुली का रोग।

८४२—नेत्रसुधाबिंदु।

सफेद फिटकरी	२ माशा	कपूर	१ माशा
जस्ते का फूला	३ माशा	भुनी अफीम	,,
लाल चन्दन	१ ,,	रसौत	,,
नीम के पत्ते	१ ,,	पठानी लोध	,,
हलदी	१ ,,	गुलाब का अर्क	१२ तोला

विधि—सब दवाइयां महीन पीसकर एक बोतल में भरदे। गुलाब का अर्क ऊपर से डालकर डाट बन्द कर दे। दिन में ३।४ वार हिला दिया करे। ३ दिन के बाद गाढ़े कपड़े से छान ले। एक पाव भर पानी आने वाली शीशी में भर दे। जब कीट जम जाय तब निर्मल पानी धीरज से

निकालकर दूसरी शीशी में भर ले। इसे आंखों में ४।३ बूंद डालने से नेत्र के सभी विकार मिटते हैं।

रोग—आंख दुखना, लाली, फूला, जाला, धुँध आदि।

८४३—निर्मलाञ्जन चूर्ण।

निर्मली	२ माशा	छोटी हरड	२ माशा
भुनी फिटकरी	२ ,,	हलदी	२ ,,
कपूर	१ ,,	पठानी लोध	२ ,,
रसौत	१ ,,	लाल चन्दन	१॥ माशा

विधि—नीम की पत्ती के अर्क में सब को सुरमें की भांति महीन पीस लेना और सुखा लेना। नीम की पत्ती के रस में सानकर इसका गुनगुना लेप आँखों की पलकों के ऊपर लगाया जाता है। सूखा चूर्ण सुरमा की तरह सलाई से लगाया जाता है।

रोग—आँखों के सभी विकार, विशेष कर दुखती हुई आँखों में इसका लेप लगाते लगाते लाभ होता है।

८४४—खुजली की दवा।

मैनसिल	१ तोला	गंधक	१ तोला
मुरदाशंख	,,	फटकरी	,,
सुहागा	,,	कबीला	,,

पापड़ी कत्था	१ तोला	नीला थोथा	१ तोला
हरताल	,,	सरसों का तेल	२० तोला

विधि—सबको पीस कर तेल के साथ घोट ले। इसको मालिश करके एक घंटे बाद गरम पानी से स्नान करे।

रोग—हर प्रकार की खुजली।

८४५—हरीतकीमोदक।

छोटी हरड़	२० तो०	पीपलामूल	४ तो०
सफेदजीरा	४ ,,	चव्य	४ ,,
कालीमिर्च	४ ,,	जवाखार	८ ,,
सोंठ	४ ,,	शुद्ध भिलावा	३२ ,,
छोटी पीपल	४ ,,	सूखा जिमीकन्द	६४ ,,
गुड़	१४८ तोला	काले तिल	३२ ,,

विधि—सबको महीन कूट कर गुड़ के साथ मिला कर एक एक तोला के मोदक बना ले।

मात्रा—१ मोदक।

अनुपान—जल।

समय—सुबह, शाम।

रोग—स्त्रियों की ऋतु सम्बन्धी बीमारियाँ, अर्श।

८४६—हिंग्वादि चूर्ण।

भनी हींग	२ तोला	अमलवेत	१६ तोला
अजवायन	२ ,,	स्याहजीरा	४ ,,
सफेदजीरा	२ ,,	अजमोद	४ ,,
धनियां	२ ,,	कचूर	८ ,,
कालीमिर्च	२ ,,	मीठा कूट	८ ,,
चीत की जड़	८ ,,	दंती की जड़	८ ,,
सोंठ	८ ,,	वच	८ ,,
निशोथ	८ ,,	छोटी हरड़	८ ,,

विधि—सबको महीन कूट कर नींबू के रस से घोट ले।

मात्रा—४ माशा।

अनुपान—गरम जल।

समय—सुबह, शाम।

रोग—स्त्रियों का ऋतु सम्बन्धी रोग। मन्दाग्नि।

८४७—नेत्राञ्जन।

कासकारी सफेदा	३ माशा	सफेदा (जस्त)	३ माशा
छोटी हरड़	,,	माजूफल	,,
भुनी अफीम	,,	सफेद सुरमा	,,

विधि—सबको गुलाब के अर्क में सुरमा की भांति घोटकर आँखों में जस्त या तांबे की सलाई से लगाना।

रोग—नेत्रों की सूजन, दर्द, लाली, किरकिराहट।

८४८—कृमिघ्न मरहम ।

गंधक	१ तोला	कपूर	१ तोला
वच	,,	रेंड़ी का तेल	२ ,,
तारपीन का तेल	,,	कच्ची हींग	१ माशा

विधि—सबको एक साथ घोट कर मलहम जैसा बना ले। यह मलहम पैरों के तलुवों में मलना चाहिए।

रोग—यह प्लेग-प्रतिबन्धक मरहम है। इसके लगाने से प्लेग के कीड़े शरीर पर असर नहीं कर पाते।

८४९—अर्कादिलेप।

आक की जड़की छाल १ तोला   वासा की छाल १ तोला

विधि—दोनों को कांजी में पीसकर लेप करना चाहिये।

रोग—श्लीपद (फीलपांव)।

८५०—अर्शघ्न मरहम।

अफीम	३ माशा	जायफल	१ तोला
घी	१ तोला	आक का दूध	१ मासे

विधि—सबको एक में घोट कर मरहम बनाले। इसे शौच के बाद बवासीर के मस्सों पर लेप करे।

८५१—सिन्दूरादिवटी।

रस सिन्दूर	१ माशा	कौड़ी की भस्म	१ माशा
आक की जड़ की छाल	,,	सफेद इलायची	,,

विधि—स्त्री के दूध में खरल करके आधी आधी रत्ती की गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली।

समय—दिन में ३।४ बार।

अनुपान—लाख का भिगोया पानी, नारियल का जल या सौंफ का अर्क।

रोग—छर्दि, खांसी।

रजःप्रवर्तनीवटिका।

माल कांगनी	१ तोला	सफेद वच	१ तोला
राल	,,	काले तिल	,,
लहसुन	,,	हींग	२ रत्ती

विधि—पानी के साथ १।१ माशा की गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली।

समय—सुबह, शाम।

अनुपान—जल।

रोग—अधिक उमर तक मासिक न होना, कम होना या बन्द हो जाना।

८५३—उपदंशघ्न योग।

काले तिल	१ तोला	तिल की खली	१ तोला
गुड	,,	अर्क दुग्ध	१ मासे

विधि—सबको मिलाकर १।१ माशा की गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली।

अनुपान—जल।

समय—सुबह, शाम।

रोग—कुत्तेका विष, उपदंश विकार।

८५४—कुष्ठघ्नवटी।

तिल	१ तोला	शुद्ध भिलावा	१ तोला
बाकुचीबीज	,,	शकर	३ तोला

विधि—तिल के तेल में सबको पीसकर १।१ माशा की गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली।

समय—सुबह, शाम। एक वर्ष तक।

अनुपान—ताजा जल या रक्त शोधक कोई अर्क।

रोग—कुष्ठ, वातरक्त।

८५५—मुहांसा की दवा।

शुद्ध रसोत	१ तोला	शहद	२ तोला

विधि—दोनों को मिलाकर मुख में लगाना । इसकी पट्टी रखने से घाव भी जल्दी भरते हैं ।

८५६—रसौत का मरहम ।

रसौत	१ तोला	घी	१ तोला

विधि—दोनों को एक में मिलालेना । इसका लेप लगाना ।

रोग—बालकों का गुदपाक रोग, चुन्ना लगना ।

८५७—कृमिघ्न काथ ।

सफेद वच	५ तोला	वायविडंग	५ तोला
कपूर	१ तोला	सुहागा	१ तोला

विधि—सुहागा, वच और वाय विडंग को ५ सेर पानी में पकाना २॥ सेर पानी शेष रहने पर उतार लेना । उतारने के ५ मिनट पहले कपूर पीसकर डालदेना । इस काढ़ा को छानकर बोतल में भर लेना । इसको तेल की तरह शरीर में मलना और पहरने के कपड़ों पर छिड़कना और घर में छिड़कना ।

रोग—प्लेग के दिनों में इसका प्रयोग करने से शरीर पर प्लेग के कीड़ों का असर नहीं होता ।

८५८—तिलादि चूर्ण।

काले तिल	५ तोला	नागकेशर	५ तोला
शकर	,,	छोटी हड़	,,

विधि—सबको पीस कर चूर्ण कर ले।

मात्रा—३ माशा।

अनुपान—मिश्री और चावलों का धोवन मिलाकर पिये।

समय—सुबह, शाम।

रोग—खूनी, बादी बवासीर।

८५९—तिलादिलेप।

काले तिल	१ तोला	गुड़	१ तोला
वायविडंग	,,	दालचीनी	१ मासे

विधि—सबको पानी के साथ पीसकर माथे में लेप करे।

समय—दिन में २।३ बार।

रोग—आधाशीशी का दर्द।

८६०—रजःप्रवर्तककाढ़ा।

काले तिल	१ तोला	भारङ्गी	३ माशा
त्रिकुटा	३ माशा	भुनी हींग	१ रत्ती

विधि—आधा सेर पानी में पकाना। एक छटांक शेष रहने पर छान कर पीना।

मात्रा—ऊपर लिखी दवा एक मात्रा है ।

समय—प्रातःकाल । ऋतु समय में प्रथम के चारों दिन ।

रोग—मासिक का कम होना ।

८६१—विल्वादियोग ।

कच्चे बेल को भून कर निकाला हुआ गूदा २ तोला

काले तिल १ तोला नागकेशर १ तोला

विधि—दोनों दवायें पीस कर गूदा में सान लेना ।

मात्रा—२ या ३ माशा ।

अनुपान—दही का तोड़ ।

समय—दिन में तीन वार ।

रोग—रक्तातिसार ।

८६२—तिलशर्करायोग ।

काले तिल १ तोला शकर १ तोला

विधि—इनको एक साथ पीस ले ।

मात्रा—१॥ माशा ।

अनुपान—५ तोले बकरी के दूध में दवा को घोल कर पीना ।

समय—दिन में ३।४ वार ।

रोग—आमातिसार, रक्तातिसार ।

८६३—पथरी की दवा।

नौसादर	१ माशा	यवक्षार	१ माशा
सरफोंका का क्षार	,,	शोरा	,,

विधि—सबको एक में मिला कर पीस ले।

मात्रा—यह एक मात्रा है।

अनुपान—हंसराज की पत्ती का रस।

समय—सुबह, शाम।

रोग—वृक्करोग, पथरी, वस्तिशूल, मूत्रकृच्छ्र।

८६४—सौभाग्यक्षारादि वटी।

कच्चा सुहागा	६ माशा	कलमी शोरा	६ माशा
मुसब्बर	,,	छोटी पीपल	,,
संगेयहूद	,,	शिलाजीत	,,

विधि—सबको ग्वारपाठा के रस में पीस कर मूंग बराबर गोली बना ले।

मात्रा—१ या २ गोली।

समय—सुबह, शाम।

अनुपान—कुलथी का काढ़ा।

रोग—गुर्दे की पथरी।

८६५—मधुमेहांतक वटी ।

छोटी पीपल	१॥ माशा	गोखरू	१॥ माशा
नागरमोथा	"	गिलोय	"
दूब	"	मजीठ	"
निसोत	"	विषखपरा	"
सारिवा	"	देवदारु	"
सोंठ	"	बायबिडंग	"
मिर्च	"	पाढ़ी	"
कबीला	"	भारङ्गी	"
हलदी	"	दारुहलदी	"
कटेरी की जड़	"	एरंडमूल	"
चीत	"	कुटकी	"
लौह भस्म	३ तोला	शुद्ध कुचिला	"

विधि—सबको महीन पीस कर गोमूत्र के साथ खरल करके चने बराबर गोलियाँ बना लेना।

मात्रा—१ गोली।

अनुपान—ताजा जल।

समय—सुबह, शाम।

रोग—मधुमेह।

८६६ पथरी की दवा।

शिलाजीत	१ माशा	ककड़ी के बीज	६ माशा

गुड़	१ तोला	पाषाणभेद	६ माशा
गोखरू	६ माशा	ब्राह्मी	६ माशा

विधि—सब चीजें एक छटांक पानी में प्रातःकाल भिगोकर शाम को और सायंकाल भिगोकर प्रातःकाल छान कर पिये।

८६७—वृक्करोगारि वटिका।

खरबूजा की गिरी	१ तो०	कद्दू की गिरी	१ तो०
खीरा की गिरी	,,	ककड़ी की गिरी	,,
खतमी के बीज	,,	अजमोद	
बादाम की गिरी	,,	खुरासानी अजवायन	,,
कतीरा	,,	गेहूं का निशास्ता	,,
मौरेठी	,,	खसखस दाना	,,

विधि—सबको पीस कर चूर्ण बनाले।

मात्रा—३ माशा।

अनुपान—शर्बत खसखस २ तोला।

समय—सुबह, शाम।

रोग—वृक्कशूल, मूत्रका रुकरुक कर आना, चिनिंग होना।

८६८—त्रिफलादिक्वाथ।

त्रिफला	६ माशा	धनिया	६ माशा
सौंफ	,,	बायबिडंग	,,

विधि—आधा सेर पानी में पकावे। छटांक भर रहने पर छान कर पिये।

समय—सुबह, शाम ।

रोग—वृक्क (गुर्दे) की विद्रधि और घाव ।

८६६-शतपुष्पादि क्वाथ ।

सौंफ	२ माशा	गोखरू	२ माशा
खरबूजा के बीज	,,	खीरा के बीज	,,
ककड़ी के बीज	,,	कुसुम के बीज	,,
वनफ्शा	,,	कुलथी	,,
शिलाजीत	,,	अमिलतास	,,

विधि—आधा सेर पानी में पकावे। एक छटांक शेष रहने पर छान ले।

समय—सुबह, शाम।

रोग—गुर्दे का दर्द।

८७०—घाव का मरहम।

मूंगफली का तैल	६ तो०	राल	१ तो०
मुरदासंख	१ ,,	मोम	,,

विधि—तैलमें राल और मोमको धीमी आंच में गलाले। इसी में मुरदासंख को महीन पीसकर मिला दे। यह मलहम लगाने से सड़े हुए खराब घाव भी अच्छे होते हैं।

८७१—ब्राह्मीतैल।

ब्राह्मी का स्वरस	४ सेर	मूंगफली का तैल	१ सेर
मीठे बादाम	५ तोला	गोला (गिरी)	५ तो०

विधि—तैल पाक विधि से सबको पका ले। छान के बोतल में भर ले।

खाने के लिये मात्रा—आधा तोला।

अनुपान—गरम दूध और शकर।

समय—सुबह, शाम।

लगाने के लिए—शरीर और सिर में इसकी मालिश करनी चाहिये।

रोग—क्षयज्वर, उन्माद, मृगी, मूर्छा, कब्ज, वायु की पीड़ा।

८७२—खुजली की दवा।

कपूर	१ तो०	गंधक	१ तो०
नींबू का रस	,,	मूंगफली का तैल	५ ,,

विधि—सबको एक साथ घोट कर शरीर में मलना चाहिये।

८७३—पौष्टिक पाक।

कच्ची मूंगफली	ऽ।	बादाम की गिरी	ऽ।
अखरोट की मींगी	ऽ।	गरी गोला	ऽ।

चोपचीनी	ऽ।	चिलगोजाकी मींगी	ऽ।
किसमिस	ऽ।	पिस्ता	ऽ।
जायफल	१ तो०	केसर	१ तो०
जावित्री	,,	छोटी इलायची	२ ,,
दालचीनी	,,	अकरकरहा	१ ,,
गाय का दूध	१० सेर	शकर	५ सेर
गाय का घी	२ सेर	केवाँच	ऽ।

विधि—केवांच और मूंगफलो को मींगी और बादाम पानी में भिगो देना। छिलका दूर करके पिट्ठी पीस लेना। अखरोट, पिस्ता, चिलगाजा, किसमिस, को पानी से पीस लेना। गरी को इमोमजस्ते में कूट कर चलनी से छान लेना। सब को दूध में पकाना। केशर को पानी के साथ पीसकर दूधमें मिला देना। जब इस दूध का खोवा हो जाय तब उसमें घी डाल देना और मंदो आँच से भूनना। खूब भुन जाने पर उतार लेना। ठंढा करके अन्य चीजों को मैदा और शकर मिलाकर रख लेना।

मात्रा—१ तोला से ३ तोला तक।

अनुपान—दूध मिश्री।

समय—सुबह, शाम।

रोग—धातु की निर्बलता, वायु बिकार।

८७४—श्वासघ्न तैल ।

अदरख का रस	ऽ-	प्याज का रस	ऽ-
सेहुंड़ के पत्तों का रस	ऽ-	आक के पत्तों का रस	ऽ-
सरसों का तैल	ऽ-	नवसादर	१ तो०

विधि—सबको एक में मिलाकर कड़ाही में पकावे । तैल मात्र शेष रहने पर छान ले। यह तैल छाती में मला जाता है ।

रोग—बालकों का श्वास, कास, कफविकार, पँसुली के रोग ।

८७५—कासघ्नवटी ।

वासा के पत्ते	ऽ।	कटेरी की जड़	ऽ।
तुलसी के पत्ते	ऽ।	छोटी पीपल	१ तोला
मौरेठी	ऽ-	कालीमिच	ऽ-
काकड़ासिंगी	१ तो०	नवसादर	१ तोला

विधि—सबको कुचल कर २॥ सेर पानी में पकाना। सेर भर पानी शेष रहने पर छान लेना । इस पानी को कड़ाही में डालकर पकाना, गाढ़ा होने पर इसकी चने बराबर गोली बना लेना ।

मात्रा—१ गोली बालकों को चौथाई गोली ।

समय—दिन रात में ४।५ वार ।

अनुपान—माता का दूध या तुलसी का रस और शहद ।

रोग—बालकों की खांसी, श्वास ।

८७६—चूने का जल ।

कलई चूना	१ तोला	पानी	१० तोला
शहद	,,	पिसी हुई अतीस	१ तोला

विधि—सबको पत्थर या कांच के पात्र में मिलाकर रख देना । २४ घंटा के बाद इसका निर्मल जलमात्र ले लेना ।

मात्रा—१ से २० बूंद ।

समय—दिन में २।३ वार ।

अनुपान—माता या गाय का दूध ।

रोग—बालकों के दस्त, वमन, अजीर्ण ।

८७७—जातीफलाद्य चूर्ण ।

जायफल	१ तोला	लौंग	१ तोला
सफेद जीरा	१ तोला	भुना सुहागा	१ तोला
अतीस	१ तोला	काकड़ासिंगी	१ तोला
मौरेठी	१ तोता	शकर	१ तोला

विधि—सबको महीन पीस ले ।

मात्रा—४ रत्ती । बड़ों के लिए १ मासे ।

अनुपान—शहद या माता का दूध ।

समय—दिन में ३।४ बार ।

रोग—अतिसार, आमशूल, खांसी ।

८७८—लाक्षाद्यवलेह।

पीपल की लाख	५ तोला	वंशलोचन	५ तोला
बड़ी इलायची	,,	आँवला	,,
धनिया	,,	मस्तगी	,,

विधि—सब दवा महीन पीस ले। ३० तोला मिश्री की चाशनी बनाकर सब दवाइयां मिलाकर अवलेह बनाले।

मात्रा—२ माशा।

समय—सुबह, शाम।

अनुपान—चावलों के धोवन के साथ।

रोग—पुराना रक्तातिसार।

८७९—मसूरिकान्तक वटी।

ताजी हलदी का रस १ सेर करेला की पत्ती का रस १ सेर

विधि—दोनों को कड़ाही में पका कर गाढ़ा कर लेना। गोली बनने लायक होने पर आग पर से उतार लेना। १।१ रत्ती की गोली बनाना।

मात्रा—१ गोली।

अनुपान—करेला की पत्ती का रस १ तोला।

समय—दिन में २ या ३ बार।

रोग—शीतला रोग, शीतला (चेचक) के बैठ जाने पर।

विशेष—चेचक के प्रकोप के समय इसका सेवन करते रहने से चेचक निकलने का भय नहीं रहता। ताजी हलदी

का रस न मिलने पर सेर भर सूखी हलदी को जवकुट कर आठ सेर पानी में पकाना। एक सेर पानी रहने पर छान लेना। करेले की पत्तीके रसके साथ इसेही पका लेना। हलदी और करेला के स्वरस का कई विधियों से प्रयोग हो सकता है। चेचक के टीके से यह प्रयोग विशेष उत्तम है।

८८०—तिक्तवटी।

करेले की पत्ती का रस	ऽ।	नीम की पत्ती का रस	ऽ।
तुलसी की पत्ती का रस	ऽ।	प्याज का रस	ऽ।
कालीमिर्च	ऽ।	हलदी	ऽ।
बायविडंग	ऽ।	चिरायता	ऽ।

विधि—चिरायता और बायविडंग कूट लेना। इन्हें १० सेर पानी में पकाना। २॥ सेर शेष रहने पर मल कर छान लेना। रस को कड़ाही में पकाकर कड़ा कर लेना और एक एक माशे की गोली बनाना।

मात्रा—१ गोली।

अनुपान—रोगानुसार।

रोग—हैजा, शूल, पेट के कीड़ा रक्तविकार, मंदाग्नि, विषमज्वर।

८८१—अर्शघ्न मरहम।

अफीम	१ माशा	माजूफल	२ तोला
गाय का घी	२ तोला	रसोत	३ माशा

विधि—सबको एक में घोट कर मरहम बनाले। शौच से निवृत्त होकर इसे बवासीर के मस्सों में लगावे।

समय—सुबह, शाम।

रोग—खूनी बादी बवासीर।

८८२—धान्याद्यवलेह।

धनियां	४ तोला	बादाम की गिरी	४ तो०
सौंफ	"	कद्दू के बीज	२ "
मुनक्का	"	वंशलोचन	२ "
बड़ी इलायची	"	गाय का घी	२ "

मिश्री ४० तोला

विधि—धनिया और सौंफ को तवे में भून कर पीस ले। अन्य दवाइयां भी पीस ले। सबको घी में मिलाले। मिश्री की चाशनी करके सब दवाइयां मिलाकर अवलेह बनाले।

मात्रा—१ से २ तोला तक।

समय—सुबह, शाम।

अनुपान—ताजा जल।

रोग—पुराना जुखाम, खांसी।

८८३—विजयावटी।

भांग की पत्ती	४ तोला	बड़ी इलायची	४ तोला

घी	,,	भुना सुहागा	,,
बेलगिरी	,,	अजवायन	,,

विधि—औषधियों को पीस कर घी मिला दे। कागजी नींबू के रस में खूब खरल करे और ४।४ रत्ती की गोली बनाले।

मात्रा—१ गोली।

अनुपान—ताजा जल।

समय—सुबह, दोपहर शाम और सोते समय।

रोग—पुराना अतिसार।

पथ्य—मूंग की दाल और चावलकी खिचड़ी और दही।

८८४—आमातिसार की दवा।

सोंठ	५ तोला	सौंफ	५ तोला
बड़ी हरड़ का बकला	,,	बेलगिरी	,,
पोस्त के डोडे	,,	मोचरस	,,
अजमोद	,,	धाय के फूल	,,
सेंधा नमक	१ तोला	भाँग	१ तोला
रेंड़ी का तेल	१५ ,,	अदरखकारस१०	,,

विधि—औषधियों को पानी के साथ सिल पर चटनी की तरह पीस लेना और तेल में मिला देना। एक सेर बकरी का दूध और अदरख का रस मिलाकर तेल को पकाना। तेल मात्र शेष रह जाने पर उतार लेना।

मात्रा—१ से लेकर ३ तोला ।

अनुपान—गरम दूध मिश्री मिलाकर ।

समय—सुबह, शाम । दो दिन या जब तक शूल न बन्द हो ।

पथ्य—मूंग की खिचड़ी और दही । प्यास लगने पर सौंफ और पोदीना का अर्क, थोड़ा नींबू का रस मिलाकर पिलाना ।

रोग—आंव के दस्त, मरोड़, पेट का शूल, कब्ज ।

८८५—गोक्षुरादि चूर्ण ।

गोखरू	३ माशा	तालमखाना	३ माशा
केवांच के बीज	,,	दाख	,,

विधि—इन सबको दूध में पीसकर दूध में ही घोल दे । दूध छान कर मिश्री मिलाकर प्रातःकाल पिये ।

रोग—रुक रुक कर पेशाब आना, पथरी ।

८८६—नयनामृत वटी ।

छोटी हरड़	२ तोला	सोंठ	३ तोला
फिटकरी	४ तोला	अफीम	१ तोला
तूतियाभस्म	१ माशा	लौंग	१ माशा
विल्व पत्र	१ तोला	भुना सोहागा	१ ,,

विधि—सबको कुचल कर एक सेर पानी में पकाना। पावभर पानी शेष रहने पर छान लेना। इस पानी को फिर आग पर चढ़ाना। गाढ़ा करके एक रत्ती की गोली बनाना।

मात्रा—१ गोली १ तोला गुलाब के अर्क डाल देना। गल जाने पर इस द्रवकी २।३ बूंद आंख में डालना।

समय—दिनमें ३।४ बार।

रोग—आंख का दर्द, लाली।

८८७—दद्रु दावानल तैल।

नारयल की गिरी के ऊपर का काष्ठ १ सेर

कैथा वृक्षकी सूखी छाल	१ सेर	पीली हरताल	२॥ तोला
नैनिया गंधक	२॥ तोला,	कालीमिर्च	२॥ ,,
बाकुची	५ ,,	भिलावा	१ ,,
काले तिल	१० ,,	पंवाड़ के बीज	५ ,,

विधि—नारियल का काष्ठ और कैथा की छाल को अव-कुट कर लेना। इसी में और दवाइयां मिला लेना। एक मिट्टी के घड़ेमें आधी दवा भरना। उसके ऊपर हरताल और गन्धक बिछा देना। ऊपर से बची हुई दवा भरना। उसके पेंदी में उंगली जाने लायक मोटा छेद कर देना। दवा भरने के समय इस छेद के ऊपर मिट्टी का ठीकरा रख देना, जिसमें दवाइयां छेद को बन्द न करदें। घड़े का मुख बन्द करके मिट्टी लगा देना, जिसमें ऊपर से भाफ न निकलने पावे। इस घड़े को

एक चौड़ी नांद में रखना। नांद की पेंदी में छेद कर देना। घड़े का छेद और नांद का छेद दोनों मिला देना। बराबर ज़मीन में एक कांच का कटोरा रखना। उसके चारों ओर नीचे ऊपर दो दो पक्की ईंटें रखना। इससे कटोरा चौकोर घेरे के भीतर होजायगा। इसके ऊपर घड़ा समेत नांद को रखदो। जिसमें नांद और घड़े का छेद कटोरा के बीचों बीच रहे। नांद में जो खाली जगह हो उसमें जंगली कंडों को भर कर आग लगादेना। ठंढा पड़जाने पर नांद को उठा लेना। कटोरे के तेल को शीशी में भर लेना। यह तैल फुरेरी से लगाया जाता है। नांद इतनी बड़ी लेनी चाहिये कि घड़े के चारों ओर आठ आठ अंगुल सांस हो और घड़े के ऊपर एक बालिस्त सांस हो। नांद के भीतर (घड़े के ऊपर) जितने कंडे आसकें भरना चाहिये। इसी को पाताल यंत्र कहते हैं। नांद न मिलने पर ज़मीन में गढ़ा खोद कर यंत्र बनाना चाहिये।

रोग—दाद, खाज।

८८८—कनकारिष्ट।

धतूरे का सूखा पंचांग ऽ॥ जल ऽ२

विधि—पंचाग को जल में पकाना। आध सेर पानी शेष रहने पर उतार लेना। एक मिट्टी की हांड़ी में आधसेर मिश्री पीस कर भर देना। इस हांड़ी में यह गरमा गरम काढ़ा भी छान देना। ठंढा होजाने पर बोतल में भर देना।

मात्रा—५ से २० बूंद।

अनुपान—गरम दूध।

समय—सुबह शाम। रोग की अधिकता होने पर दिन में ३।४ बार भी दिया जासकता है।

रोग—श्वास।

८८६—प्रमेहान्तक तैल।

कौड़िया लोबान	१	गंधाविरोजा	१
कबाबचीनी	१	मौरेठी	१
बंश लोचन	१	सफेद राल	१
मोम	१	इलायची के बीज	१
चन्दन का बुरादा	१	कलमी शोरा	१
फिटकरी	१	राजन	१

विधि—सब दवा एक में कूटकर मिलावे। बोतल में भर कर पातालयंत्र की विधि से तैल निकाल ले।

मात्रा—५ बूंद।

अनुपान—बताशा या मिश्री में मिलाकर खावे और ऊपर से दूध की लस्सी पेट भरकर पिये।

समय—दिन में ३।४ वार।

रोग—सुजाक, पेशाब खुलकर न आना। पेशाब में जलन होना और पीव आना।

८९०—नयनामृत विन्दु।

गुलाबजल	५ तोला	गुलाबी फिटकरी	२ रत्ती
नीला थोथा	१ रत्ती	अफीम	२ रत्ती

विधि—तीनों चीज़ों को महीन पीसकर गुलाब जल की शीशीमें छोड़ दे। तीनों चीज़ें घुल जायंगी इस जलको कांचकी शीशी में बनाना चाहिये। निर्मल थिरा हुआ जल एक दूसरी शीशी में निकाल ले। कीट को फेंक दे।

मात्रा—२ बूंद।

समय—दिन में ३।४ वार।

रोग—दुखती हुई आँखें इसके प्रयोग से शीघ्रही आराम होती हैं।

---

८९१ पौष्टिक अवलेह।

सोने के वर्क	३ माशा	चांदी के वर्क	३ माशा
लौह भस्म	३ ,,	वंगभस्म	३ ,,
अभ्रभस्म	३ ,,	शुद्ध सच्चे मोती	३ ,,
कस्तूरी	१ ,,	केशर	४ ,,
जायफल	६ ,,	अकर करहा	६ ,,
जावित्री	६ ,,	तज	६ ,,
छोटी इलायची	६ ,,	गिलोय का सत	६ ,,
वंशलोचन	६ ,,	घी में भुनी हींग	१ तोला
असगंध	१ तोला	मिश्री	१ तोला

विधि—काष्ठादिक औषधियों को अलग महीन पीस लेना। पत्थर की खरल में थोड़ा गुलाब या केवड़ा का अर्क डाल कर मोती पीसना। मोती पिसजाने पर केशर कस्तूरी पीसना। बादमें भस्में और सूखी दवाइयां डालकर घोटलेना। पीछे वर्क मिलाकर घोट लेना। मिश्री को १० तोला पानी में गलाना और पकाना। शहद की भांति गाढ़ा शरबत बनालेना, इसी में सब दवाइयां मिला देना। यदि यह अवलेह कुछ कड़ा होजाय तो आवश्यकतानुसार असली शहद मिलाकर पतला कर लेना।

मात्रा—३ माशा।

अनुपान—गाय का दूध।

समय—सुबह शाम।

रोग निर्बलता, सुस्ती, इंद्रिय के बीच का पतलापन।

८६२—त्रिफलाद्यरिष्ट।

त्रिफला	ऽ≡	असगंध	ऽ-
अनन्तमूल	ऽ-	उसबा	ऽ-
चोपचीनी	ऽ-	मौरेठी	ऽ-
धनियां	ऽ-	कत्था	ऽ-
मिश्री	२० तोला	गुड़	२० तोला

विधि—काष्ठादिक औषधियों को जवकुट कर के पांच सेर पानी में पकाना। १। सेर पानी शेष रहने पर उतार कर

छान लेना । इसमें गुड़ ..ार मिश्री मिलाकर कपड़े से फिर छान लेना । इस काढ़े को बोतलों में भर कर रख देना । १५ दिन के बाद सेवन करना ।

मात्रा—२ या ४ तोला ।

समय—सुबह शाम ।

रोग—रक्तविकार, उपदंश, वातरक्त, कब्ज ।

८६३—मुशल्यादि अवलेह ।

सफेद मुसली	१ तोला	बबूल की पत्ती	१ तोला
सेमर का मुसला	,,	बबूल की फली	,,
इसबगोल	,,	विहीदाना	,,
तुकमलंगा	,,	धनियां	,,
गिलोय	,,	बबूल का गोंद	,,

विधि—सबको जवकुट करके एक सेर पानी में पकाना तीन पाव शेष रहने पर मथ कर छान लेना । इस छने हुये पानी में आधा सेर मिश्री मिलाकर पकाना और शहद की भांति बनालेना ।

मात्रा—१ या २ तोला ।

समय—सुबह, शाम ।

रोग—स्वप्नदोष ।

८६४—प्रमेहघ्न शीत कषाय।

बबूल का गोंद	१ माशा	इसब गोल	१ माशा
विहीदाना	,,	कासनी	,,
चन्दन चूरा	,,	तुकमलंगा	,,
मेंहदी के फूल	,,	धनियां	,,
गिलोय का सत	,,	आँवला	,,

विधि—एक सेर पानी में इन सब को डालकर मिट्टी के पात्र में शामको भिगोदेना। सुबह मलकर छान लेना। मिश्री मिलाकर प्रातःकाल पीना। सुबह का भिगोया जल शाम को छानकर उसी तरह पीना।

रोग—स्वप्नदोष, प्रमेह।

८६५—बबूल का शरबत।

बबूल की फली	ऽ।	बबूल की पत्ती	ऽ।
बबूल की छाल	,,	चन्दन चूरा	,,
धनियां	,,	मौरेठी	,,

विधि—सबको कुचलकर छः सेर पानी में पकाना। १॥ सेर बाकी रहने पर छान लेना। इस जलमें एक सेर मिश्री मिलाकर चाशनी करना। दोतार की चाशनी होने पर उतार लेना।

मात्रा—२ तोला।

अनुपान—दूध या जल।

समय—सुबह शाम या जब आवश्यकता हो।

रोग—स्वप्नदोष, प्रमेह, कालश्वास।

८९६—कर्णरोगान्तक तैल।

कपूर	१ तोला	सफेद वच	१ तोला
तिल का तैल	५ ,,	अपामार्गक्षार	३ मासे

विधि—तेल में तीनों चीजें पका ले। छान कर शीशी में भर के रख छोड़े।

सेवनविधि—कान को नीम के पानी से धोकर ३।४ बूँद तैल कान में नित्य टपकावे।

रोग—कान का बहना, कान का दर्द।

८९७—तिला।

लहसुन	१ तोला	राई	१ तोला
अकरकरहा	,,	चमेली की पत्ती	,,
मालकांगनी	,,	जँभीरी नीबू के बीज	,,
भटकटैया के पत्ते	,,	मैनसिल	,,
कूट	,,	सफेद कनेर की जड़	,,
तिल का तैल	,,	सफेद घुंघचिल	,,

विधि—सब दवाओंको पानी में चटनी की तरह पीसकर २ सेर जल में घोल देना। फिर तेल में मिलाकर पका लेना।

तैल को छान कर शीशी में भर लेना । शिश्नेन्द्रिय पर इस तैल की मालिश करना ।

रोग—सुस्ती, इन्द्रिय का टेढ़ापन ।

८६८—नपुंसकसंजीवन तैल ।

कालेतिल	१ तोला	सुहागा	१ तोला
कड़ुवा कूट	,,	तपकी हरताल	,,
असगंध	,,	पठानी लोध	,,
सफेद घुँघचिल	,,	अकरकरहा	,,
मूली के बीज	,,	बिनौला	,,
रेंड़ो के बीज	,,	लौंग	,,
आक का दूध	,,	जायफल	,,

विधि—सब को जवकुट कर के पातालयंत्र की विधि से तेल निकाल लेना । इस तेलको शिश्नेन्द्रिय में मालिश करके ऊपर से बँगलापान बांध देना ।

रोग—इन्द्रिय का बांकपन, सुस्तो ।

८६६—प्रदरांतक चूर्ण ।

जंगली नील की जड़	३ मासा	पंवार की जड़	३ माशा
नागकेशर	३ माशा	रसौत	३ माशा

विधि—चावलोंके धोवनमें सबको चटनी की तरह पीसले ।

और उसी जल में घोल कर कपड़े से छान ले। शकर मिला कर पिये। यह एक मात्रा है।

समय—प्रातःकाल।

रोग—प्रदर, मूत्रातिसार।

---

६०० — रजः प्रवर्तक क्वाथ।

कपास की जड़ की छाल १ तोला कपास की पत्ती १ तोला

विधि—दोनों को आधा सेर पानी में पकाना, आधपाव शेष रहने पर छान कर पिलाना।

समय—सुबह, शाम।

रोग—स्त्रियों को देर से मासिक होना, कष्ट के साथ मासिक होना, बहुत थोड़ा मासिक होना या बिलकुल न होना।

नवम शतक समाप्त।

दशम शतक।

६०१—रक्तरोधक कल्क।

नागकेशर	४ रत्ती	रसोत	४ रत्ती
खूनखराबा	,,	जंगली गोभी	३ माशा
गूलर की पत्ती	१ तोला	मिश्री	६ ,,

विधि—चावल के धोवनके साथ सब को पीसकर चटनी बनावे।

मात्रा—यह एक मात्रा है।

अनुपान—चावल का धोवन।

समय—जब आवश्यकता हो।

रोग—मुंह, नाक, कान, योनि कहीं से भी रक्त जाना, आमातिसार, रक्तातिसार, अर्श का रक्त।

६०२—कृमिघ्न मरहम।

मोम	१ तोला	तिल का तेल	४ तोला
वच	,,	कपूर	६ माशा
अजवायन का सत	६ माशा	कालकारी सफेदा	१ तोला

विधि—मोम और तेल को मंदी आँच से गला ले, सफ़ेदा और वच को महीन चूर्ण करके मिला दे। कपूर और अजवायन का सत एक शीशी में भरदे। जब सब गलकर तेल बन जाय तब इसमें मिला दे, फिर सब को घोट कर डिबिया में भर ले।

रोग—सड़े हुये घाव इससे जल्दी अच्छे होते और भरते हैं। सिर को जूं, पशुओं के शरीर में होनेवाली किलनी, वायु का दर्द, पसली का दर्द।

६०३—मूत्र कृच्छ्र की दवा।

सफेद वच	४ रत्ती	कलमी शोरा	१ माशा

विधि—दोनों को पीस कर दूध पानी शकर की लस्सी के साथ पीने से पेशाब की रुकावट मिटजाती है।

९०४—सर्पविष नाशक योग। (१)

खाने की तमाखू ५ तो० जल २० तोला

विधि—तमाखू को पानी में पीस कर पाव भर जल में घोल दे। इसे कपड़े से छान कर रोगी को एकही बार में पिलादे। इससे वमन होगा। वमन के बाद हर बार केले का रस, तुलसी का रस, या सादा पानी पाव पाव भर पिलाना चाहिये, जिसमें बमन होने में रोगीको कष्ट न हो। वमन बन्द हो जाने पर रोगी को रीठे का फल खिलाना। यदि वह मीठा लगे तो फिर एक बार तमाखू का प्रयोग करना। निर्विष हो जाने पर रीठा का स्वाद रोगी को कड़वा लगेगा। अच्छे हुये रोगी को २४ घंटे सोने न दे। तुलसी के पत्ते बीच बीच में खिलाता रहे।

९०५—सर्प विष नाशक योग। (२)

रीठे का छिलका १२ तोला पानी २॥ सेर

विधि—रीठे को महीन चूर्ण करके पानी में घोल देना और रोगी को पेट भर पिला देना। पानी चुक जाने पर फिर तयार कर लेना। जई बार कै हो तई बार यह पानी पिलाना। जब पानी का स्वाद रोगी को कडुवा मालूम हो तब पिलाना बन्द करदे। रोगी को जगाता रहे सोने न दे और बीच बीच में तुलसी की पत्ती खिलाता रहे।

९०६—कंटकारीबीजतैल।

कटेरी के बीज २० तोला आधा गज मारकीन

विधि—बीजों को कपड़े पर बिछादे और कपड़े को साव-धानी से मोड़ कर बत्ती बनाले। एक लोहे की मोटी सींक में इस बत्ती को लपेट कर डोरा बाँध दे। और सरसों के तेल में डुबो ले। बाद में इस बत्ती में अग्नि लगादे। लोहे की सींक हाथमें पकड़ कर ऊपर उठाये रहे। नीचे एक लौह पात्र रख दे। बत्ती के जलने पर तेल टपक कर लोह पात्र में गिर जायगा। इस तेल को शीशी में भर कर रख ले। यह तेल मालिश के काम आता है।

रोग—समस्त वायु विकार, पीड़ा, पक्षाघात।

९०७—उपदंश की गोली।

शुद्ध पारा	१ तोल	शुद्ध गंधक	१ तोला
शुद्ध भिलावां	,,	काली मुसली	,,
सफेद मुसली	,,	अजमोद	,,
देसी अजवायन	,,	खुरासानी अजवायन	,,
पुराना गुड़	४ तोला		

विधि—पारा गंधक को एक साथ पहले घोंटकर कज्जली बनाले। फिर उन औषधियों को महीन पीस कर मिला दे। यह सब मिश्रण गुड़के साथ मिलाकर हथौड़े से कूटै। २००० चोटें हथौड़े की लगनी चाहिये। कूटकर चने बराबर गोली बना लेवे। गोली धूप में सुखा ले।

मात्रा—१ गोली।

अनुपान—आम का अचार। अचार के भीतर रखकर गोली निगल जावे। अचार तेल से बना हो।

समय—सुबह, शाम।

रोग—उपदंश, फिरंग, इसके सेवन से पँह नहीं आता। परहेज कुछ नहीं।

९०८—दोषघ्न मरहम।

सफेदा कासकारी	१ तोला	मुरदाशंख	१ तोला
सिंदूर	६ माशा	कपूर	३ माशा
रस कपूर	१ माशा	गौ का घी	१० तोला

विधि—सौ बार धोये हुये घृत में उपरोक्त औषधियों का महीन चूर्ण मिलाकर रखले। घाव में दो बार नित्य लगावे। और दोषघ्न क्वाथ से नित्य १ बार घाव को धोवे।

रोग—उपदंश के घाव, सड़े घाव।

९०९—दोषघ्न क्वाथ।

हरी गिलोय	४ माशा	पुनर्नवा की जड़	४ माशा
मुलेहटी	,,	बड़ के कोमल पत्ते	,,
त्रिफला	,,	गूलर की पत्ती	,,

विधि—एक सेर पानी में मिलाकर पकाना। दवाइयों को

कुचल कर पानी में पकाना। पाव भर पानी शेष रहने पर छान लेना। यह पानी घाव धोने के काम में लाना।

रोग—उपदंश के घाव, सड़े घाव।

६१०—महा पौष्टिक चूर्ण।

रससिंदूर	४ तोला	अगर	१ तोला
केशर	१ तो०	तज	"
कस्तूरी	६ माशा	मीठा कूट	"
अम्बर	६ माशा	जायफल	"
सोने के वर्क	१ तोला	लौंग	"
चांदी के वर्क	२ "	मुसली सफद	"
शिलाजीत	२ "	छोटी पीपल	"
अफीम	१ "	किवांच के बीज	"
कपूर	२ "	गिलोय का सत	"
जावित्री	१ "	अकरकरहा	"
शुद्ध सींगिया	१ "	शुद्ध कुचला	२ तोला

विधि—पत्थर की खरल में रससिंदूर को दो दिन गुलाब के अर्क में घोटे। बाद में सिलाजीत और अफीम केशर डाल कर खूब घोटे और सुखा ले। सूख जाने पर वर्क डालकर घोटे। सब मिल जाने पर कस्तूरी और अम्बर को छोड़कर अन्य सब काष्ठादिक औषधियाँ महीन पीस कर मिला दे। धतूरा की पत्ती के रस में एक दिन खरल करे। दूसरे दिन

अदरख के रस के साथ खरल करे। कस्तूरी और अम्बर को पीस कर मिला दे और पान के रस से एक दिन खरल करे। एक एक रत्ती की गोलियां बनाकर छाया में सुखा ले।

मात्रा—१ गोली।

समय—सुबह, शाम।

अनुपान—शहद।

पथ्य—घृत, दूध, पौष्टिक पदार्थ।

रोग—ज्वर, सरदी, वातव्याधि, श्वास, खांसी, क्षय, मूर्छा, खंज, धनुर्वात, अर्द्धाङ्गवात, जीर्णज्वर, हिस्टीरिया।

६११—शोथघ्न लेप।

अफीम	१ माशा	मुरूवर	६ माशा
मसूर की दाल	१ तोला	थूहर के पत्ते	१ तोला
धतूरा के बीज	१ तोला	सोंठ	१ माशा

विधि—सबको महीन पीसकर धतूरा के पत्तों के स्वरस में सानकर लेप बनावे। इसे गरम करके सूजन पर लगावे

रोग—चोट की सूजन, कर्णमूल-शोथ।

६१२—करंजादि वटी।

करंज के बीज	३ माशा	लोह भस्म	३ माशा
अफीम	३ रत्ती	रस सिन्दूर	८ रत्ती

विधि—सबको पीसकर करंज की पत्ती के रस से ३ वार

घोट २ कर सुखा ले। एक वार नीम के रस से घोट कर २४ गोली बनाले।

मात्रा—१ गोली।

समय—दिन में ३ वार सुबह दोपहर शाम और ज्वर आने के एक घंटा पहले।

अनुपान—१ तोला संभालू की पत्ती का रस ३ माशा शहद में मिलाकर।

रोग—दो दिन का अन्तर देकर आनेवाला ज्वर, चौथिया और तिजारी।

६१३—संकोचक लेप।

अनन्तमूल	२ तोला	कत्था	२ माशा
अफीम	३ रत्ती	फिटकरी	६ रत्ती
माजूफल	१ माशा	भुना सुहागा	२ रत्ती

विधि—३२ तोला पानी में अनन्तमूल को पकाना। ४ तो० जल शेष रहने पर उतार कर छान लेना। इसमें कत्था आदि चीजें घोल देना। वाद में माजूफल पीसकर मिला देना। योनि के भीतर इसका लेप किया जाता है। कांच निकलने पर कांच बैठाकर इसका प्रयोग करना चाहिये।

समय—दिन में ३।४ वार।

रोग—योनि शूल, योनि का ढीलापन, अधिक रज स्राव।

नोट—यह लेप पतला होता है। लकड़ी में रुई लपेट कर फुरेहरी बना लेना, उसी के द्वारा लेप लगाना।

६१४—रजः प्रवर्तक चूर्ण ।

मंजीठ	२ तोला	काले तिल	२ तोला
मूली के बीज	,,	गाजर के बीज	,,
मेथीदाना	,,	नीम के बीज	,,

विधि—सबको पीसकर चूर्ण करले ।

मात्रा—३ माशा ।

समय—प्रातःकाल ।

अनुपान—कपास की पत्ती का रस या काढ़ा ऊपर से पिये ।

रोग—असमय में बन्द होजानेवाला रजोधर्म इससे फिर होने लगता है ।

६१५—बुद्धिवर्धकअवलेह ।

सूखे आंवले	ऽ।	सफेद वच	ऽ।
ब्राह्मी	ऽ।	घमिरा	ऽ।
कालेतिल	ऽ।	कच्चे बेलके बीज	ऽ।

विधि—सबको महीन पीसकर कपड़े से छान लेना । आंवलों के स्वरस, ब्राह्मी के स्वरस, घमिरा के स्वरस और वचके काढ़ेके साथ ३ । ३ वार घोटकर सुखालेना । सूख जाने पर ये चीजें मिला देना ।

छोटी पीपल	१५ तोला	शकर	ऽ॥ सेर
गाय का घी	ऽ१॥	छोटी इलायची	५ तो०
उत्तम शहद	ऽ१॥	संखौली	२ ,,

सबको मिलाकर एक मिट्टी की चिकनी हांड़ी में भरकर रख देना। १५ दिन के बाद सेवन करना।

मात्रा—१ तोला।

समय—सुबह, शाम।

रोग—ज्ञानतन्तुओं की निर्बलता। वीर्य संबन्धी रोग। यह अवलेह पौष्टिक और रसायन है।

६१६—घाव का मरहम।

रसकपूर	१ तोला	मुर्दाशंख	१ तोला
कौड़ी भस्म	,,	गोपी चन्दन	,,

विधि—सबको पीसकर घी में सान ले। इसे घाव में लगावे।

रोग—उपदंश के घाव और सब प्रकार के दूषित घाव।

६१७ लाक्षादि चूर्ण।

पीपल की लाख	३ तोला	पीपल वृक्ष के फल	२ तोला
शकर	५ तोला	कबाबचीनी	२ तोला

विधि—शकर को छोड़कर बाकी दवा महीन पीस ले। पीपलवृक्ष की छाल के काढ़े की ७ भावना देकर सुखा ले। बिलकुल सूख जानेपर महीन पीसले और शकर मिलादे।

मात्रा—१ तोला।

अनुपान—दूध या जल।

समय सुबह शाम।

रोग—रक्तपित्त, धातुपात, स्वप्नदोष।

पथ्य—घी, दूध, भात, खीर आदि।

---

६१८ सरल रेचन वटी।

एलुवा	१ तोला	सोंठ	१ तोला
लौंग	,,	छोटी हरड़	,,
कुटकी	,,	साबुन	,,

विधि—पानी के साथ पीसकर ४।४ रत्ती की गोली बनाले।

मात्रा—२ गोली।

अनुपान—गरम किया हुआ जल।

समय—सोते समय।

रोग—कब्ज, मंदाग्नि, कोष्ठाश्रितवायु के दोष।

---

६१६ चन्दनादि लेप।

चन्दन का चूरा	३ माशा	सोंठ	३ माशा
अरंड की जड़	३ ,,	कपूर	४ रत्ती

विधि—सब को पानी के साथ पीस कर ठंढा लेप मस्तक में लगावे।

रोग—मस्तक का दर्द।

---

६२० बालामृत ।

अतीस	१ तो०	नागर मोथा	१ तो०
छोटीपीपल	,,	काकड़ा सिंगी	,,
मौरेठी	,,	हंसराज	,,
मँजीठ	,,	शकर	२० तो०

विधि—सब दवाइयां कुचलकर १ सेर पानी में पकाना। १० तोला शेष रहने पर छान लेना। इसमें शकर मिलाकर शरबत की तरह पका लेना।

मात्रा—५ बूँद से लेकर ३ माशा तक, बालककी अवस्थानुसार। बड़े बालकोंको १ से २ तोला तक की मात्रा से देना।

समय—सुबह, शाम।

अनुपान—माता का दूध या गाय का दूध। दूध में मिला कर देना।

रोग—बालकों का अतिसार, दूध फेंकना, ज्वर।

---

६२१ कासांतक अवलेह।

कटेरी का पञ्चाङ्ग	२ सेर	बासा का पंचांग	२ सेर
शकर	१ ,,	काकड़ा सिंगी	१ तो०
सोंठ	१ तो०	बायबिडंग	,,
काली मिर्च	,,	कचूर	,,
छोटी पीपल	,,	अनार का छिलका	,,
पीपला मूल	,,	आँवला	,,

पोहकरमूल	१ तोला	बड़ीहरड़ का छिलका	१ तोला
मुलेहठी	,,	बहेड़े का छिलका	,,
लौंग	,,	भारङ्गी	,,
काला नमक	,,	जवाखार	,,
रूमी मस्तगी	,,	बंबूल का गोंद	,,
शहद	१ सेर	कायफल	,,

विधि—कटेरी और वासा को १६ सेर पानी में पकाना। ४ सेर शेष रहने पर छान लेना। इसी में काष्ठादिक औषधियां महीन पीस कर मिला देना। शकर मिलाकर फिर पकाना। गाढ़ा होजाने पर उतार लेना। ठंढा हो जाने पर शहद मिला देना।

मात्रा—६ माशा से लेकर १॥ तोला तक।

समय—सुबह, शाम और सोते समय, या जब आवश्यकता हो।

रोग—श्वास, हिचकी, खांसी।

६२२—जामुन का शरबत।

जामुन के पके हुये फलों का स्वरस	१ सेर
शकर	२ सेर

विधि—स्वरस को कपड़े से छान कर शकर मिला दे। कलईदार पात्र में पकावे। शरबत का पाक हो जाने पर उतार ले। इसे बोतलों में भर कर रक्खे। यह शरबत जितना पुराना होगा उतना ही अधिक लाभदायक होगा।

मात्रा—२ से ४ तोला तक।

अनुपान—दूना पानी मिलाकर।

समय—सुबह, शाम।

रोग—रक्तातिसार, रक्तवमन, रक्तप्रदर, स्त्रियों के ऋतु के समय अधिक रक्तगिरना, संग्रहणी, गले की सूजन, खूनी बवासीर, मूत्रका दाह, प्रमेह, रक्त और पित्त के विकार, प्लीहा, यकृत्।

९२३—जामुन का अवलेह।

जामुन की गीली छाल	१ सेर	जामुन की हरी पत्ती	१ सेर
जामुन के पके फल	१ „	शकर	१२ „

विधि—सबको जबकुट करके १२ सेर पानी में उबालना। ३ सेर शेष रहने पर ठंढा करके मलकर छान लेना। शकर मिलाकर फिर पकाना। गाढ़ी चाशनी हो जाने पर उतार लेना। कांच की चौड़े मुंह वाली शीशी में रखना। यह भी शरबत की भांति जितना पुराना होगा उतना ही उत्तम होगा।

मात्रा—१ से २ तोला।

समय—सुबह, शाम।

रोग—जामुन का शरबत जिन जिन रोगों में लाभदायक है उन उन रोगों में इसका भी व्यवहार करना। यह विशेष कर क्षय और अंत्रक्षयादि रोगों में विशेष लाभप्रद है।

९२४—जम्ब-बीजावलेह।

जामुन की साबुत गुठली १ सेर   शहद   २ सेर

विधि—साबुत गुठली को जवकुट करके ४ सेर पानी में पकाना। जब १ सेर पानी शेष रहे तब उतार कर छान लेना। इस छने हुये काढ़े को फिर पकाना। तीन हिस्सा जल जाने पर उतार लेना और १ सेर जामुन की गुठली का महीन चूर्ण करके मिला देना। ठंढा हो जाने पर शहद मिला देना। इसमें जो शहद मिलाया जाय वह ठीक और उत्तम होना चाहिये।

मात्रा—६ माशा। प्रतिदिन एक एक माशा बढ़ा के खाना चाहिये। ५ तोला से अधिक न खाना।

रोग—मधुमेह। मधुमेह की यह खास दवा है। एक सप्ताह में ही रोगी के शरीर का गुरुत्व बढ़ने लगेगा। दुर्बल नाड़ी बलवान होगी। पेशाब में मिठास कम हो जायगी। रोगी के गुरुत्व का बढ़ना बन्द हो जाने पर इसका प्रयोग बन्द कर देना चाहिये। रोगी को इसके सेवन से प्रथम हलका विरेचन लेकर पेट साफ कर लेना और हर १५ वें दिन विरेचन लेना चाहिए। इसके सेवन से मल का रंग काला हो जाता है। पर इसकी चिन्ता न करना चाहिये।

इसके अतिरिक्त जामुन का शरबत जिन सब रोगों में लाभ करता है उन सब रोगों में यह भी लाभ पहुंचाता है। रक्त को रोकने और मूत्र की मिठास कम करने की इसमें

अपूर्व शक्ति है । स्त्रियोंकी योनिसे अधिक रक्तस्राव होनेमें देने से यह तुरन्त फल दिखाता है। स्त्रियों के रक्त प्रदर आदि रोगों में एक छटांक चावल के धोवन में इसको घोलकर पीना चाहिये ।

९२५—जम्ब्वरिष्ट ।

जामुन की हरी छाल	१ सेर	जामुन की हरी पत्ती	१ सेर
जामुन की गुठली	१ सेर	जामुन के फूल	१ सेर
जामुनके फलों का रस	१ „	धाय के फूल	४० तोला
शहद	१० „	नागकेशर का चूर्ण	२० तोला

विधि—छाल, गुठली, पत्ती और फूल को ६४ सेर जल में पकाना आठ सेर शेष रहने पर ठंढा करके छान लेना। फलों का स्वरस, धायके फूल और शहद मिला देना। पात्रका मुख बन्द करके एक मास तक रक्खा रहने देना। बाद में छान कर और थिराकर बोतलों में भरलेना। यह जितना ही पुराना होगा उतना ही अधिक गुणकारी होगा।

मात्रा—२ से ४ तोला तक।

अनुपान—दूने जल में मिलाकर।

समय—सुबह, शाम।

रोग—जिन रोगों में जामुन का शरबत लाभ करता है उन रोगों में यह शरबत से अधिक लाभदायक है। पेट के रोग, मधुमेह, क्षय, रक्तप्रदर आदि रोगों में विशेष लाभ करता है।

९२६—विषमज्वरान्तकवटिका।

गोदंती हरताल भस्म	१ तोला	भुना सुहागा	१ तो०
भुनी गुलाबी फिटकरी	„	बुझाहुआ पत्थरका चूना	„
शुद्ध पारा	„	शुद्ध गन्धक	„

विधि—पारा गंधक एक साथ घोटकर कज्जली बना लेना। कज्जली में चमक न होना चाहिये। बाद में और चीजों को मिलाकर करेला के स्वरस में घोट लेना। और १।१ रत्ती की गोली बना लेना।

मात्रा—१ गोली।

समय—ज्वर आने के ३ घंटा प्रथम से घंटे घंटे भर में १।१ गोली रोगी को खिलाना।

अनुपान—शहद।

रोग—सब प्रकार के विषमज्वर और उसके उपद्रव।

९२७—अरिष्ठादिचूर्ण।

रीठे के फल का छिलका १ तोला उसारेरेवन १ तोला

विधि—दोनों को महीन चूर्ण करले।

मात्रा—४ रत्ती से १ माशा तक।

अनुपान—गाय का घी मिलाकर खिलाना।

समय—दिन में तीन चार बार।

रोग—सर्प विष।

९२८—केशराजतैल ।

बड़ी हरड़ का छिलका	१ तो०	अनार का छिलका	१ तो०
काले तिल	„	भिलावा	„
बबूल का गोंद	„	कतीरा	„
माजूफल	„	भांगरे का रस	१ सेर

विधि—औषधियां कूटकर लोहे के बरतन में भर दे। भांगरे का रस डालकर बन्द करदे। एक गज गहरे गढ़े में घोड़े की लीद भरदे, बीच में पात्र को गाड़ दे। २१ दिनके बाद निकालकर एक सेर काले तिलों को तेल में डालकर पाककरे। पाक के समय १ सेर भांगरे का रस और डालदे। तैल मात्र शेष रहने पर छानकर बोतल में भरले ;

सेवनविधि—इस तैल को सिरमें मालिश करे। मालिश के १५ मिनट बाद आँवलों की चटनी से बालों को धोकर तिल का तैल लगाना चाहिये।

रोग—इससे बालों का पकना दूर होता है। सफेद बाल काले होते हैं।

९२९—केशवधकतैल ।

मुलेठी	१ तोला	नीलोफर	१ तोला
चन्दन का वुरादा	१ तोला	इन्द्रायन के बीज	१ तोला
कमलगट्टे की गूदी	„	करंज की गिरी	„
चमेली के पत्ते	„	अनार की छाल	„

बिजयसार	१ तोला	कनेर की जड़	१ तोला
दंती	,,	निसोथ	,,
कड़वी तोरई के बीज	,,	हाथीदांत की भस्म	,,
घोड़े के नाखून की भस्म	,,	मुनक्का	,,
परबल के पत्तोंका रस	१ सेर	बेर की पत्ती	५ ,,
त्रिफला का काढ़ा	,,	भांगरे का रस	१ सेर

विधि—सूखी औषधियां कूटकर पत्तों के रस में घोलदे। तेल मिलाकर पकावे। इस तैल की सिरपर मालिश करे।

रोग-बाल गिरना, बाल न बढ़ना या कड़े होना, सिरदर्द।

६३०—मुंहासों की दवा।

नारियल की गिरी	नारंगी का छिलका
चिरोंजी	बादाम

विधि—पानी में पीसकर चटनी की तरह रखदे। ३ दिन के बाद मुँह में उबटन की तरह लगावे।

रोग—मुंह के मुंहासा।

६३१—त्रिफलाघृत।

त्रिफला	१ तोला	कटसरैया की जड़	१ तोला
पथरचटा की जड़	,,	गिलोय	,,
सिरस की छाल	,,	दारुहलदी	,,
हलदी	,,	रासन	,,
गाय का घी	१ सेर	दूध	४ सेर

विधि—सूखी औषधियां महीन पीसकर दूधमें घोलदेना। घी मिलाकर पकाना। पानी का अंश जल जाने पर ठंढा करके छान लेना।

मात्रा—१ या २ तोला।

अनुपान—गरम दूध में मिलाकर।

समय—सुबह शाम।

रोग—योनि के सब रोग।

९३२—जीरकाद्यवलेह।

सफेद जीरा	१ तोला	स्याह जीरा	१ तोला
छोटी पीपल	,,	सौंफ	,,
बालवच	,,	चीत की जड़	,,
अडूसा की जड़	,,	सेंधा नमक	,,
जवाखार	,,	अजवायन	,,
घी	५॥ तो०	शकर	२५ तो०

विधि—सूखी दवा महीन कूटकर घी शकर मिला कर १०० तो० पानी में पकावे। जब अवलेह तयार होजाय तब ठंढा करके चिकने पात्र में भरले।

मात्रा—१ तो०।

समय—सुबह शाम।

रोग—प्रदर, मूत्रातिसार, और योनि के समस्त राग।

६३३—सैंधवादि तैल।

सेंधा नमक	१ तोला	देवदारु	१ तोला
कूठ	”	तगर	”
बड़ी कटैया की जड़	”	तिलका तैल	२० तो०

विधि—विधि पूर्वक तैल पकाले। पाक करते समय औषधियों को एक सेर जल में घोल कर तैल मिलावे। इस तैल का फाहा योनि में रखना चाहिये।

रोग—वंध्या दोष, योनि के रोग, अधिक रक्तस्राव होना।

६३४—नहरुआरोग की दवा।

गुड	३ माशा	अफीम	२ माशा
रीठा	१ माशा	संभालू की पत्ती	३ माशा

विधि—सबको पानी से पीसकर धतूरा के पत्ते पर लगा कर रोग स्थान पर चिपका दे। ऊपर से कपड़ा की पट्टी बांध दे। तीन दिन बँधा रहने दे। इसके व्यवहार से नहरुआ जल जाता है। शोथ अच्छा हो जाता है।

६३५—अतिविषादि चूर्ण।

अतीस	१ तोला	नागर मोथा	१ तोला
भारंगी	१ तो०	सोंठ	१ तो०
पीपल	१ तो०	बहेड़ा का छिलका	१ तो०

विधि—सबको महीन चूर्ण कर ले।
मात्रा—२ या ४ माशा।
अनुपान—गरम जल।
समय—सुबह शाम।
रोग—नहरुआ रोग।

६३६—नहरुआ नाशक लेप।

विधि—बबूल के बीजों को महीन पीसकर पानी में सान ले और लेप करै।

समय—दिन में ३। ४ वार।

६३७—उपदंशहर चूर्ण।

घुंघची के पत्तोंका रस	४ रत्ती	सफेद जीरा	२ माशा
मिश्री	१ तो०	चोपचीनी	१ माशे

मात्रा—यह एक मात्रा है। सबको मिलाकर खाना।

समय—सुबह शाम। सात दिन तक।

६३८—खदिरादि मरहम।

सफेद कत्था	३ माशा	चिकनीसुपारीका कोयला	३ माशा
सफेद इलायची	३ माशा	मुरदासंख	३ माशा
संगजराव	३ माशा	भुना तूतिया	१ रत्ती

विधि—सबको महीन पीसकर घी में सान ले। घावों पर लगावे।

रोग—उपदंश के घाव।

६३६—कर्पूरादि घृत।

कपूर	१ तो०	सिंदूर	१ तो०
संगजराव	,,	अफीम	,,
माजूफल	,,	पारा	,,
मोम	२ तो०	घी	१० तो०

विधि—मोम और घी गरम करके मिलावे। अन्य चीजों को महीन पीसकर मिलादे। इस मरहम को गुदद्वार में लेप करना।

रोग—इससे बवासीर के मस्से सूखेंगे। उनका रक्त और दर्द बन्द होगा।

६४०—वातघ्नतैल।

खाने की तमाखू	४० तोला	लहसुन	५ तोला
सिंगिया विष	२॥ ,,	सरसों का तैल	१ सेर

विधि—दो सेर जल में तमाखू को कूटकर भिगो देना। शाम को भिगोकर सुबह मलकर छान लेना। इसी पानी में लहसुन और सींगिया को चटनी की तरह पीस कर मिला देना। तेल मिलाकर पका लेना। तेल मात्र रह जाने पर

छान लेना। इस तेल को बात की पीड़ा में मालिश करना चाहिये ।

रोग—गठियावात, जोड़ों का दर्द, लकवा ।

६४१—नासूर का मरहम ।

सरसों का तैल	५ तोला	सिर के बालों की भस्म	१ तो०
साबुन	२ ,,	फुकीहुई हड्डी	३ माशे

विधि—सरसों के तैल को आग पर रखकर गरम करना। इसमें साबुन डाल कर पिघलाना। बाद में बालों की भस्म और हड्डी डाल कर घोट लेना। इस मरहम की बत्ती नासूर में भर कर ऊपर से पट्टी बांध देना।

रोग—हर प्रकार का नासूर ।

६४२—लोध्रादि लेह ।

पठानी लोध्र	१० तोला	इन्द्रजौ	१० तोला
कुड़ा की छाल	,,	सोंठ	,,
गिलोय	,,	बेलपत्र	,,
कच्चा बेल	,,	अतीस	,,
धाय के फूल	,,	कौड़ी की भस्म	१ तो०

विधि—काष्ठादिक औषधियों को १६ सेर जल में कूटकर मिलावे और इनका काढ़ा बनावे। चार सेर पानी बच रहने पर मलकर छान ले। इस छने हुये काढ़े को कड़ाही में डाल

कर फिर पकावे। जब गाढ़ा हो जाय कलछी में चपकने लगे तब उतार कर कौड़ी की भस्म मिलादे।

मात्रा—४ माशा। बालक को एक से ४ रत्ती तक।

अनुपान—१ रत्ती सोंठ १ रत्ती जीरा मिलाकर।

समय—सुबह, शाम।

पथ्य—मूंग की दाल, चावल, मट्ठा।

रोग—संग्रहणी, अतिसार।

६४३—सूरणक्षार।

जिमीकन्द १। सेर गुलाबो फिटकरी २० तोला

विधि—जिमीकन्द को चटनी की तरह पीसकर फिटकरी के ढेले पर चढ़ा देना। या एक हाँड़ी में नीचे ऊपर जमीकन्द की पिट्ठी भर कर उसके बीच में फिटकरी भर देना। फिर तीव्र अग्नि में फूंक देना। इस भस्म को शीशी में भर लेना। जमीकन्द पीसने के समय हाथों में कड़ुवा तेल अवश्य लगा लेना।

मात्रा—१ माशा।

अनुपान—दही की मलाई या मक्खन।

समय—सुबह, शाम।

रोग—बवासीर।

६९४—अर्शकर्त्तरीवटी ।

सफेद संखिया	१ तो०	संगजराव	६ माशा
कपूर	३ माशा	त्रिशोत	६ माशा

विधि—पानी में घोट कर २ । २ रत्ती की गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली ।

अनुपान—पानी में चन्दन की तरह घिसकर गुद द्वार में लगाना ।

समय—शौच के बाद । ४ दिन तक

रोग—अर्श । (यह प्रयोग बहुत दृढ़ रोगी के ही करना चाहिये)

विशेष—इसके लगाने से मस्से फूलकर बाहर निकल आवेंगे । इससे गुदा मस्सों से भर जायगी । गरमी मालुम होगी । उस समय गोली का लेप बन्द करके आगे लिखी दही की पुलटिस बांध देना । औषधि का प्रयोग करने के प्रथम रोगी को विरेचन देकर ३ । ४ दस्त करा देना ।

पथ्य—पतली खिचड़ी, दलिया, साबूदाना, दूध ।

६९५—दही की पुलटिस ।

गाय का दही	३ तोला	चावलों का भात	३ तोला

विधि—दही को कपड़े में बांध कर पानी निचोड़ लेना । भात पीस कर मिला देना और अर्श के मस्सों पर बांध देना ।

रोग—अर्शकर्त्तरीवटी के प्रयोगसे जो मस्से बाहर निकल आये होंगे वे इससे मर जायँगे इसके बाद पीयूषघृत लगाना ।

९४६—पीयूष घृत ।

कपूर	१ तोला	अफीम	३ माशा
निंबोली	१ „	एलुवा	१ तोला
मोम	२ „	घी	१० „

विधि—घी को गरम करके उसमें मोम गला ले। बाकी सब चीजें महीन पीसकर मिला दे। इस मरहम को लगाने से गुदद्वार के घाव जो अर्शकर्त्तरी के प्रयोग से हो जाते हैं भर जांयगे।

९४७—निशादि वटी ।

हलदी	कड़वी तूम्बी के बीज
सेंधा नमक	निंबोली

विधि—सबको महीन पीसकर थूहर के दूध में घोटकर १।२ रत्ती की गोली बनावे। अर्श के मस्सों पर गोमूत्र के साथ गोली घिसकर लगाना चाहिये। इस से मस्से पक कर सूख जांयगे। इसका प्रयोग भी अर्शकर्त्तरी की तरह बड़ी सतर्कता से करना चाहिये।

रोग—बवासीर।

९४८—नागकेशरादि चूर्ण ।

नागकेशर	१ तोला	छोटी दुधी	१ तोला

जल पीपल	१ तोला	पाषाणभेद	१ तोला
रीठे की छाल	,,	सफेद कत्था	,,

विधि—सब को पीस कर रख छोड़े ।

मात्रा—३ माशा ।

अनुपान—गाय का मट्ठा ।

समय—सुबह शाम ।

रोग—खूनी बवासीर ।

९४९—त्रिरेचन विन्दु तैल ।

चोक की जड़	१० तोला	इन्द्रायन का गूदा	५ तोला
अनंतमूल	१ ,,	एरंड तैल	२० ,,
मुंडी का अर्क	१ बोतल	दंती मूल	४ ,,

विधि—तैलपाक की विधि से तैल पका लेना ।

मात्रा—६ माशा से २ तोला तक ।

अनुपान—गरम दूध में मिलाकर ।

रोग—उपदंश रोग । प्रतिदिन या एक एक दिन का अंतर देकर इसका सेवन करना चाहिये । यह सब प्रकृति के उपदंश रोगियोंके लिये अनुकूल पड़ता है । इससे पतले दस्त आते हैं ।

९५०—हिंगुलादि वटी ।

हिंगुल	१ तोला	लौंग	१ तोला

छोटी इलायची	६ माशा	अनार का बक्कल	१ छटांक
बेर की पत्ती	१ छटांक	चोपचीनी	१ तोला

विधि—सबको पानी से पीस कर बेर सी गोली बनावे। इसे चिलम में रखकर धूआं पिये।

मात्रा—१ गोली।

समय—सुबह, शाम।

रोग—उपदंश।

९५१—रसकपूरादि वटी।

शुद्ध रसकपूर	० माशा	अकरकरहा	१ तोला
नागकेसर	१ तोला	लौंग	६ माशा
इलायची	६ माशा	कत्था	१ तोला

विधि—अदरख के रस से सबको पीसकर चने बराबर गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली।

अनुपान—मलाई के भीतर रखकर निगल जाना।

समय—सुबह, शाम। तीन दिन तक।

रोग—उपदंश।

९५२—रक्तशोधक शरबत।

अनंतमूल	६० तोला	वेदमुश्क	४० तोला
उसवा	४० ,,	मजीठ	२० ,,

मकोय	२० तो०	ब्रह्मदंडी का पञ्चांग	१० तो०
पित्तपापड़ा	१० ,,	सौंफ	१० ,,
सनाय	१० तो०	बड़ी हरड	१० तो०
चिरायता	५ ,,	इन्द्रायन का गूदा	,,
गोरखमुंडी	१० तो०	कचनार की छाल	,,
बबूल की छाल	,,	हलदी	,,
कत्था	,,	मेंहदी के फूल	,,
लाल चन्दन	,,	सफेद चन्दन	,,
झाऊ के पत्ते	,,	गुलाब के फूल	२० तोला
चोपचीना	२० तोला	शकर	१० सेर

विधि—ओषधियां कूट कर दो मन जल में भिगो दे। २४ घंटा भीगने बाद मंदी आंच से सबको पकावे। बीस सेर शेष रहने पर उतार कर छानले। इस जल में शकर मिलाकर चाशनी कर ले। शहद की तरह गाढ़ा होने पर बोतलों में भर ले।

मात्रा—२॥ तोला से ५ तोला।

अनुपान—गाय का दूध।

समय—दोनों समय-सुबह, शाम।

रोग—सब प्रकार के उपदंश। विरेचनविन्दु तैल के बाद इस शरबत का सेवन करे।

पथ्य—गुड़, खटाई, तेल, नमक, लालमिर्च, शराब, पीना और दिन का सोना मना है। खाने के लिए सिर्फ चना, की रोटी और घी।

६५३—उपदंशारि मरहम।

फिटकरी	तूतिया
कसीस	छरीला
रसौत	मैन्सिल

विधि—सबको महीन पीस कर आठ गुने मक्खन में मिलाकर घाव में लगावे।

रोग—उपदंश के घाव।

६५४—कांचनार क्वाथ।

कचनार की छाल	२ तोला	चमेली के पत्ते	२ तोला

विधि—सेर भर पानी में पकाना। आधा सेर रह जाने पर छान लेना। इस जल से कुल्ली करना।

रोग—उपदंश रोग में पारदघटित औषधियों के खाने से जो मुंह आ जाता है, इसके प्रयोग से वह कष्ट दूर होता है।

६५५—दाड़िमादि कल्क।

कच्चा अनार	१ तोला	मोथा घास	१ तोला
हरी दूब	,,	हंसराज	,,

विधि—सबको पानी में पीस कर चटनी बनावे। पाव भर पानी में घोल कर कुल्ले करे।

रोग—उपदंश में पारद वाली दवाओं के खाने का विकार, मुंह से रक्त आना, मसूढ़ों का दर्द।

९५६—वज्रदंत मञ्जन।

मौलसिरी	१ तोला	त्रिफला	३ तोला
त्रिकुटा	३ „	अजवायन	१ तोला
माजूफल	१ „	सेंधा नमक	„
सांभर नमक	१ „	नवसादर	„
भुना तूतिया	६ माशा	चिकनी सुपारी	„

विधि—सबका चूर्ण करना और दांतों में मलना।

रोग—दांतों का हिलना, दर्द चीसना, मवाद आना, पानी लगना, मैलापन आदि दांतों के सभी विकार, उपदंश के कारण हुये दांतों के विकार।

९५७—तालूभेद की दवा।

सत्यानाशी की जड़	१। माशा	पुराना गुड़	२ तोला
जल	४ तोला	चिरौंजी	१ „

विधि—दोनों को सिल पर पानी से पीस ले। चटनी की तरह हो जाने पर शहद और जल में मिलाकर घूंट घूंट करके पी जाय। पीते समय तालू में लगकर औषधि पेट में जाय इस पर ध्यान रखना चाहिये। यह एक मात्रा है।

समय—प्रातःकाल।

रोग—उपदंश के कारण तालू में छिद्र हो जाता है वह इससे पुर जाता है।

पथ्य—हर समय चिरौंजी मुंह में डाले रहे और उसका रस चूसता रहे। १० तोला चिरौंजी दिन भर में चाब जावे।

६५८—गलितकुष्ठ की दवा।

चूने का पानी ५ तोला   रेंडी का तैल १० तोला

विधि—सबको मिलाकर फेंट ले और कुष्ठ पर लगावे।

६५९— गुडूच्यादि चूर्ण।

गिलोय का सत्व	४ तोला	करंज के पत्ते	३ तोला
गुलवनफशा	३ ,,	सुदर्शन चूर्ण	३ ,,
मुलेठी	२ ,,	वंशलोचन	२ ,,
छोटी पीपल	१ ,,	मूंगा भस्म	१ ,,
सीप की भस्म	१ ,,	अभ्रक भस्म	१ ,,

विधि—सबको पीस कर कपड़छन चूर्ण करे। बाद में भस्में मिलावे।

मात्रा—१ माशा।

अनुपान—शहद।

समय—सुबह, दोपहर, शाम।

रोग—पुराना बुखार, कुनैन खाने का विकार, श्वास, खांसी।

९६०—अर्कादि चूर्ण।

*आक के पत्ते	ऽ।	*लटजीरा का पंचांग	ऽ।
*कटेरी का पंचांग	ऽ।	*बासा का पंचांग	ऽ।
*धतूरे का पंचाग	ऽ।	पीपल छोटी	२ तो०
काकड़ासिंगी	२ तोला	कत्था	,,
कायफल	,,	बहेड़े का छिलका	,,
जवाखार	,,	मुलेठी	,,

विधि—*इस निशान वाली दवाइयां धूप में सुखाकर फूंक दे। राख न होने पावे, कोयला हो जाय। इन सब के मिश्रित कोयलों को वजन में ५ तोला लेना। अन्य औषधियां पीसकर इसी में मिला देना।

मात्रा—४ या ६ रत्ती।

अनुपान—शहद।

समय—दिन में ६ बार।

रोग—काली खांसी, पुरानी खांसी, श्वास।

९६१—उत्तम विरेचन ।

विलायती शीरखिस्त १ तोला बढ़िया गुलकन्द २ तोला
जुलाफे का चूर्ण ६ माशा नारङ्गीका शरबत ३ ,,

विधि—सबको एक में मिलाकर घोट ले और पी जाय ।

मात्रा—यह एक मात्रा है ।

अनुपान—ऊपर से सौंफ का अर्क या गरम जल पिये और बीच बीच में भी थोड़ा थोड़ा पीता रहे ।

रोग—कोठे की रूखती, कब्ज, पित्त के विकार ।

विशेष—यह क्रूरचोष्ठ दुर्बल कमजोर और नाजुक स्वभाव वालों के लिये बहुत ही उत्तम विरेचन है ।

९६२—विषघ्न कल्क ।

सिहोरा की जड़ २ तोला कालो मिर्च १ माशा

विधि—दोनों को सिल पर चटनी को तरह पीसले ।

मात्रा—यह एक मात्रा है ।

अनुपान—आधपाव पानी में घोल कर पिलावे ।

समय—दिन में एक वार ।

पथ्य—औषधि पिलाने के पीछे तुरंत ही बिना नमक के मीठा दही भात खिलावे ।

रोग—पागल कुत्ते के काटने का विष, पागल स्यार के काटने का विष ।

विशेष—दही भात खाने के बाद वमन होजाय तो समझ लेना कि विष अभी शरीर में शेष है। जब तक वमन होता रहे प्रति दिन एक बार औषधि खिलावे। वमन बन्द होने पर औषधि देना बन्द कर दे। आठ दिन या १५ दिन के अंतर से औषधि देकर विष की परीक्षा करता रहे। प्रायः देखा जाता है कि कुत्तेका विष कई मास बाद प्रकट होता है। इस औषधि के प्रयोग से भूकते हुये रोगी भी अच्छे हुये सुने हैं।

६६३—रक्तपित्त की दवा।

बौंड़ी घास	२ सेर	पानी	८ सेर

विधि—घासको कुचल कर पानी में पकाना, दो सेर पानी शेष रहने पर मलकर छानलेना। इस छने हुये जल को कड़ाही में डालकर फिर पकाना। पाव भर पानी शेष रहनेपर उतार कर ठंढा कर लेना। और शीशी में भरलेना।

मात्रा—१ माशा।

अनुपान—ताजे जल में घोलकर।

समय—दिन में ।४ वार।

रोग—खांसीके साथ आनेवाला रक्त।

विशेष—अनुपानभेद से अर्श, प्रमेह, रक्त प्रदर आदि में यह औषधि लाभ करती है। जौ और गेहूं के खेतों में यह घास विशेष करके पैदा होती है। पंजाब में इसे लहसी कहते

हैं। बेल की भांति फैलती है। पत्ते मेंहदी से कुछ बड़े और चौड़े होते हैं। कटे हुये घाव से बहता हुआ रुधिर इसकी पट्टी बांध देने से तुरंत बन्द हो जाता है।

९६४—बवासीर के मसों की दवा।

वन्दाल की ताजी पत्ती पीसकर एक टिकिया बनावे। इसमें थोड़ा सरसों का तेल चुपड़कर मस्सों पर बांधदे। कुछ दिन के प्रयोग से मस्से सूखकर गिर जाते हैं। कोई कष्ट नहीं होता।

९६५—बन्दाल क्षार।

वन्दाल के फल ५ तोला सेंधा नमक १ तोला

विधि—दोनों को मिलाकर कंडों की आँच में फूंकदे।

मात्रा—२ रत्ती।

अनुपान—शहद।

समय—दिनमें ५। ६ वार।

रोग—श्वास, खांसी, कफ, न्युमोनिया, बालकों की पँसुली चलना।

९६६—देवदाली तैल।

वन्दाल का स्वरस १ सेर तिलका तैल ऽ।

विधि—दोनों को मिलाकर पकावे । तैलमात्र शेष रहने पर छानले । यह तैल लगाने और सूंघने दोनों काममें आता है ।

रोग—मृगी, उन्माद, कामला रोग में इसकी नस्य देना चाहिये । कण्ठमाला और कुष्ठ में चुपड़ना चाहिये ।

९६७—हरीतक्यादि वटी ।

छोटी हरड़	६ माशा	त्रिकुटा	६ माशा
सेंधा नमक	१ तोला	भुनी हींग	३ माशा
गंधक का तेजाब	१ माशा	काला नमक	६ माशा

विधि—औषधियों का महीन चूर्ण करके पत्थर की खरल में तेजाब और पानी मिलाकर घोटना । छोटे बेर बराबर गोली बना लेना । इसे लोग साधी हुई हरड़ कह कर बेचते हैं ।

मात्रा—१ या २ गोली ।

समय—भोजन के बाद ।

रोग—अजीर्ण, अपच, पेट का भारीपन ।

९६८—पंचामृत रस ।

सोनागेरू	१ तोला	बंशलोचन	१ तोला
मोती की भस्म	„	शुद्ध प्रवाल	„
गिलोय का सत्व	„		

विधि—सबको पीसकर पत्थर की खरल में आँवले के स्वरस से ७ बार घोट घोट कर सुखाना। बाद में गुलाब के अर्क के साथ एक बार घोटकर सुखालेना।

मात्रा—२। ३ रत्ती।

अनुपान—मुरब्बे का एक आँवला मिलाकर खाना। ऊपर से दूध पीना।

समय—सुबह, शाम।

रोग—पित्त के विकार, वमन, मस्तक-शूल, अस्वस्थता, रक्तपित्त, पुरानी खांसी, श्वास, क्षय, जीर्ण ज्वर, श्वेत प्रदर, मूत्र विकार। यह उष्ण प्रकृति वालों को विशेष लाभप्रद है।

९६९—शुक्रसंजीवनी वटी।

वंगभस्म	२ तोला	चांदी के वर्क	१॥ तोला
वंशलोचन	१ तोला	शिलाजीत	६ तोला
प्रवालभस्म	१ तोला	गिलोय का सत	१ तोला

विधि—पत्थर की खरल में घोट कर सबको मिलाले। आँवला के स्वरस की तीन भावना दे। बाद में खरेहटी, मूसली और शतावर के स्वरस या काढ़े की ३। ३ भावना दे। ३। ३ रत्ती की गोली बनाकर सुखाले। इन गोलियों को साफ कपड़े में लपेट कर ढीली ढीली पोटली बनाले। इस पोटली को फुलपतिया बूटी के स्वरस में २ घंटे दोलायंत्र की विधि

से स्वेदन करे। (फूलपतिया नदी के किनारे जमीन में छैलती है। इसकी पत्ती गुलाबी रङ्ग के फूल के समान होती है। कीमिया लोग इसका व्यवहार विशेष रूप से करते हैं। स्वेदन के बाद गोलियों को ठंढे पानी से धोकर रखले।

मात्रा—१ गोली।

समय—सुबह, शाम।

अनुपान—गोली खाकर ऊपर से मिश्री मिला दूध अथवा २ तोला द्राक्षारिष्ट जल मिलाकर पिये।

रोग—वीर्य सम्बन्धी सभी रोग इसके सेवन करने से दूर होते हैं।

६७०—बद बैठने की दवा।

गूलर के दूध में कपड़ा भिगोकर बद पर चपका दे। जब कपड़ा अपने आप उखड़ जाय तब फिर उसी तरह चपका दे।

६७१—पौष्टिक अवलेह।

मीठा सेव	४० तोला	खट्टा सेव	४० तोला
खट्टा अनार	,,	मीठा अनार	,,
नींबू	,,	अंगूर	,,
मीठी नारङ्गी	,,	खट्टी नारङ्गी	,,
शक्कर	१ सेर	अगर	२ तोला

सफेद चन्दन	१ तोला	बादरंज बोया	६ माशा
गुलाब के फूल	६ माशा	मस्तंगी	६ ,,
लौंग	६ ,,	बालछड़	६ ,,
केशर	६ ,,	छोटी इलायची	६ ,,
तगर	६ ,,	जावित्री	६ ,,
तज	६ ,,	पत्रज	६ ,,

विधि—गीली दवाइयोंको पीसकर रस निचोड़ले। सूखी दवाइयां महीन पीसकर मिला दे। शक्कर मिलाकर चाशनी की तरह पकाले। पक जाने पर कांच के पात्र में रखले। ठंढा होने पर १४।१४ रत्ती अम्बर और कस्तूरी गुलाब के अर्क में घोटकर मिला दे।

मात्रा—१ तोला से २ तोला तक।

अनुपान—दूध या जल में मिलाकर।

समय—सुबह, शाम।

रोग—हृदय, यकृत, दिमाग की निर्बलता, वमन होना, मन्दाग्नि, पेट और सिर का दर्द, अजीर्ण, अरुचि।

६७२—आम्रपुष्पादि चूर्ण।

आम का बौर	२० तोला	काली मुसली	६ तोला
कोकनार	३ ,,	सफेद मुसली	,,
अफीम	३ माशा	केवांच के बीज	,,

सेमर के बीज	४ तोला	मोचरस	६ तोला
भाँग	२ ,,	बालछड़	,,

विधि—सबको पीसकर कपड़े से छान ले।

मात्रा—१ तोला।

अनुपान—चूर्ण खाकर ऊपर से गाय का गरम दूध पिये।

समय—सुबह, शाम।

रोग—निर्बलता, शीघ्र पतन। यह चूर्ण पौष्टिक और स्तम्भक है।

६७३—पान का अवलेह।

पान का रस	२० तो०	मिश्री	४० तो०
वंशलोचन	६ माशा	छोटी पीपल	६ माशा
सोंठ	६ माशा	छोटी इलायची	६ माशा
केशर	३ माशा	लौंग	३ माशा

विधि—सूखी दवाइयों को कपड़छन चूर्ण तथा मिश्री और पान का रस मिलाकर चाशनी की तरह पकाले। तयार हो जाने पर बोतलों में भर ले।

मात्रा—१ से छः माशा तक।

समय—दिन में ३। ४ वार।

रोग—श्वास, कास, कफ के रोग, हृदय और मस्तिष्क की निर्बलता, अरुचि।

९७४— शर्बत पोदीना ।

पोदीना का रस	४० तोला	शक्कर	४० तोला
सोंठ	१ तोला	भुना सुहागा	६ माशा
काली मिर्च	,,	छोटी इलायची	,,
छोटी पीपल	,,	पत्रज	,,
सेंधा नमक	६ माशा	तुलसी के पत्तों का रस	५ तो०

विधि—सूखी दवायें महीन करके पीस ले । शक्कर पका कर शर्बत की विधि से शर्बत बना ले । कपड़े से छानकर बोतल में भर ले । पकते वखत पानी की जगह पोदीना का रस मिलादे ।

मात्रा—३ माशा से छः माशा तक ।

समय—दिन में ३ । ४ वार ।

रोग—हैज़ा, शूल, संग्रहणी, आँव के दस्त, कब्ज़, मंदाग्नि, पेट का दर्द ।

९७५—वृन्दाद्यवलेह ।

तुलसी के पत्तों का रस १ सेर केले के वृक्ष का रस १ सेर

विधि—दोनों को मिलाकर गाढ़े कपड़े से छान ले । कड़ाही में डालकर पकावे । जब कड़ाही में लगने लगे तब उतार ले ।

मात्रा—१ तोला सर्प विष पर । साधारणतः ४ रत्ती ।

अनुपान—सर्पविष दूर करने के लिये इसे २ तोला सरसों

के तेल में घोलकर पिलाना। साधारणतः शहद मिलाकर या थोड़े पानी में घोलकर देना।

समय—सर्पकाटे रोगोको हर आधघंटे पर। साधारणतः भोजन के बाद।

रोग—अजीर्ण, मंदाग्नि, सर्प का विष, हैजा।

९७६—व्रणराक्षस तैल।

संभालू की पत्ती	ऽ॥।	चमेली की पत्ती	ऽ॥।
तूतिया	६ माशा	राल	६ माशा
सफेदा	६ माशा	तिल का तैल	ऽ॥

विधि—दोनों पत्तियों को कूटकर १२ सेर पानी में औटाना। ३ सेर शेष रहने पर छान लेना। इस जल में तैल और सूखी दवाइयां मिलाकर तैल पका लेना। यह तैल घाव में लगाया जाता है।

रोग—सड़ा घाव। इसके लगाने से घाव के भीतर कांटा या हड्डी का टुकड़ा आदि जो कुछ होगा वह निकल जायगा।

९७७—षोड़शांग चूर्ण।

निंबोली	३ माशा	भुनी फिटकरी	३ माशा
भुना सुहागा	"	सुर्ख बहमन	"

सफेद बहमन	२ माशा	इन्द्र यव	३ माशा
वंशलोचन	,,	अजवायन	,,
चिरायता	,,	अतीस	,,
सफेद जीरा	,,	अभ्रक भस्म	,,
मोती की सीप की भस्म	,,	काली मिर्च	,,
सच्चे मोती	,,	स्वर्ण माक्षिक भस्म	,,

विधि—सबको महीन पीसकर तुलसी को पत्ती के रस में घोटकर सुखाले।

मात्रा—१ माशा।

अनुपान—शहद।

समय—सुबह, शाम।

रोग—मन्थर ज्वर (मोती झरा)

९७८—तिलाद्यवलेह।

कालेतिल	ऽ।	इन्द्रायन की जड़	ऽ।
मूली के बीज	ऽ।	गाजर के बीज	ऽ।
वायविडंग	५ तो०	मूली का स्वरस	ऽ।

बिधि-सबको कुचलकर मूली के रस में पीस ले और पाँच सेर पानी में मिलाकर पकावे। एक सेर शेष रहने पर छान ले। इस छने हुये काढ़े में एक सेर पुराना गुड़ मिला कर फिर पकावे। गाढ़ा होने पर उतार ले।

मात्रा—२ तोला ।

समय—सुबह, शाम ।

रोग—स्त्रियों को कष्ट के साथ मासिक होना । मासिक बन्द हो जाना । ठीक समय में मासिक न होना । मासिक में बहुत कम रक्त निकलना ।

६७६—पेठा का शरबत ।

पेठा का रस	ऽ।	शक्कर	ऽ।

विधि—दोनों को पकाकर शहद की तरह गाढ़ा करले ।

मात्रा—१ तोला ।

समय—३ । ४ बार ।

रोग—मुंह से रक्त गिरना, नकसीर फूटना, श्वास का दौरा ।

६८०—निर्गुण्डी-सत्व ।

विधि—संभालू के एक सेर हरे पत्ते लेकर इमामजस्ते में कूट ले । ४ सेर पानी में पकावे । १ सेर शेष रहने पर छानले और इस छने हुये पानी को फिर कड़ाही में पकावे । लपसी की तरह होजाने पर उतार ले ।

मात्रा—४ रत्ती ।

अनुपान—जल।

समय—ज्वर आने के ३ घंटा प्रथम से घंटे २ भर में छै मात्रा देना।

रोग—जाड़ा देकर आने वाला ज्वर।

६८१—सैंधवाञ्जन।

सैंधानमक	३ माशा	पीपल	३ माशा
भीमसेनी कपूर	३ माशा	इमली का बीज	३ माशा
करंज का बीज	३ माशा	काला सुरमा	३ माशा

विधि—सबको गुलाब के अर्क के साथ खूब घुटाई करै। सुखाकर महीन पीस ले। सुरमें की तरह लगावे।

रोग—नेत्र रोग, दृष्टि की निर्बलता, धुंध, जाला।

६८२—गोक्षुरादि चूर्ण।

बड़ी गोखरू	२ तोला	कमलगट्टा की गिरी	२ तोला
सफेद मुसली	४ तोला	सेमल का मुसला	४ तोला
मिश्री	१६ तोला	केवाँच के बीज	४ तोला

विधि—सबको एक में पीसकर चूर्ण बनाले।

मात्रा—१ तोला।

समय—सुबह, शाम।

अनुपान—गरम दूध ।

रोग—स्वप्नदोष, प्रमेह ।

६८३—आधा शीशी का प्रयोग ।

शकर	५ तोला	बासी जल	ऽ॥

विधि—दोनों को एक में मिलाकर शरबत बनाले और पीजाय ।

समय—सूर्योदय से १ घंटा प्रथम । एक सप्ताह तक पिये ।

६८४—यवान्यादि वटी ।

खुरासानी अजवायन	६ माशा	लौंग	१ माशा
सिंगरफ	४ माशा	जावित्री	४ माशा
शीतल चीनी	२ माशा	देशी अजवायन	२ तो०

विधि—सबको पीसकर शहद में सानकर ३ । ३ माशा की गोली बनावे ।

मात्रा—१ गोली ।

अनुपान—गोली खाकर मिश्री मिला दूध पीना ।

रोग—शीघ्र पतन । यह गोली स्तम्भक है ।

---

६८५ — चन्दनादि चूर्ण ।

लाल चन्दन	१ तोला	सफेद चन्दन	१ तोला

कचूर	१ तोला	मुलेठी	१ तोला
इन्द्रयव	,,	अड़ूसे की पत्ती	,,
कटीली चौलाई की जड़	,,	पीपल की लाख	,,

विधि—सबको महीन पीसकर कपड़े से छान ले।

मात्रा—१ से ३ माशा तक।

समय—दिनमें तीन बार।

अनुपान—ताजा जल।

रोग—मुँह से रक्त की कय होना, नकसीर फूटना।

९८६—अतिविषादि बटी।

अतीस	नागर मोथा
काकड़ा सिंगी	छोटी पीपल
कपूर कचरी	इन्द्रयव
कंजा की भुनी गिरी	गिलोय का सत्व

विधि—सबको बराबर पीसकर तुलसी को पत्ती के रस के साथ घोट ले। २। २ रत्ती की गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली।

समय—सुबह, शाम।

अनुपान—माता का दूध।

रोग—छोटे बालकों की खाँसी, श्वास, अतिसार, ज्वर।

६८७—निम्बसत्वादि वटी।

नीम की छाल	५ तोला	काली मिर्च	५ तोला
लटजीरा की पत्ती	,,	अतीस	,,
वायविडंग	,,	काकड़ासिंगी	,,
नागर मोथा	,,	जवासा	,,
छोटी पीपल	,,	धाई के फूल	,,
गिलोय	,,	अजवायन	,,

विधि—सबको कुचलकर ४ सेर पानी में पकाना । १ सेर शेष रहने पर मलकर छान लेना । इस छने हुये काढ़े को कड़ाही में डालकर फिर पकाना । पकते समय पाँच तोला अतीस पीसकर मिला देना । गाढ़ा होने पर २ । २ रत्ती की गोली बना लेना ।

मात्रा—१ गोली । एक दिन में ६ गोली से ज्यादा न खाना । छोटे बालकों को चौथाई गोली देना ।

अनुपान—जल । बालकों को माँ के दूध में घोलकर देना ।

समय—ज्वर चढ़ने के पूर्व १ घंटा पहले । फिर प्रति घंटा १ । १ गोली ।

रोग—पारी से आने वाला ज्वर, अतिसार, खाँसी, मंदाग्नि ।

---

६८८ शतावरी का शर्बत ।

शतावरी का रस	१ सेर	सौंफका अर्क	५ सेर
नींबू का रस	१० तो०	अर्क गुलाब	१ सेर
मिर्च सफेद	६ मा०	गिलोयका सत्व	१ तो०
पिपर मेंट	६ मा०	सतअजवायन	६ मा०
अफीम	[illegible] मा०	मिश्री	[illegible] सेर

विधि—रस और मिश्री को कड़ाहो में पकावे। पकते समय गाढ़ा होने पर अन्य चीज़ें अलग अलग पीस कर मिलादे। दो तार को चाशनी बन जाने पर उतार ले।

मात्रा—१ वर्ष के बालकों ५ बूंद। दो से दस वर्ष के बालक को १० बूंद अधिक आयुवाले को ६ मासे १ तो० तक

अनुपान—ठंडे जल में मिलाकर पिलावे।

समय—दिन में दो बार।

रोग—अतिसार, संग्रहणी, शूल, कास, श्वास, वमन, मंदाग्नि, अम्ल पित्त बालकों के हरे पीले दस्त आना।

६८६—कंटकारी सत्व।

कटेरीका पंचांग	२ सेर	पानी	१६ सेर

विधि— कटेरी को अच्छी तरह से कुचलकर आठ सेर पानी में पकावे। जब १ सेर पानी शेष रह जाय तब आठसेर

पानी और डालदे और पकावे। ४ सेर शेष रहने पर छानले। इस छने हुये जल को कड़ाही में डालकर फिर पकावे। गाढ़ा होने पर ६ माशा जैतून का तैल मिलाई और गाढ़ा पाक करले।

मात्रा—आधी रत्ती से २ रत्ती तक।

अनुपान—शहद में मिलाकर चटावे।

समय—सुबह, शाम।

रोग—श्वास, कास।

विशेष—व्रणपर इसका लेप करने से व्रण जल्दी भरता है।

९६०—दाद की दवा।

अफीम	१ तोला	पंवाड़के बीज	१० तो०
नवसादर	१ तोला	कत्था	१ तोला
नीबू का रस	८ तोला	गंधक	६ मा०

विधि—नीबू के रसमें सब को घोटकर गोली बनावे और नीबू के रस में घिसकर दाद पर लगावे।

९६१—नासूर का मरहम।

सफेदा कासकारी	१ तोला	मुरदा शंख	१ तोला
मोम	२ तोला	तूतिया	१ तोला
चोपचीनी	२ तोला	बादामका तैल	७ तोला

विधि—तैल में मोम गलाकर बाकी औषधियों का चूर्ण मिलाकर घोटले। घाव पर लगावे ।

रोग—आतशक के घाव, नासूर, फोड़ा, कुष्ठ ।

९९२-कर्ण रोगान्तक तैल ।

आमा हलदी	५ तोला	सरसों का तेल	२० तोला
धतूरेकी पत्तीका रस	१ सेर	सुदर्शन के पत्तोंका रस	२ तो०

विधि—आमा हलदी पीसकर रस मिलाकर तैल के साथ पका ले । तैल मात्र शेष रहने पर छान कर शीशी में भरले । कान को धोकर इस तैल को कान में डाले ।

रोग—कान के भीतर से मवाद बहना ।

९९३—चोपचीनी का मरहम ।

भीगा हुआ सफेद चूना	१ तोला	चोप चीनी	४ तो०
मुरदा शंख	६ माशा	मेहदीकी फली	४ तो०

विधि—चूने को कपड़े में बांध कर निचोड़ लेना। सब दवायें महीन पीसकर मिला देना। जैतून के तैल में खरल करके मरहम बना लेना। घाव में लगाना ।

रोग—आतशक के घाव, फुड़िया, फुन्सी, कुष्ट,

६६४—रक्तशोधक शरवत ।

चोप चीनी ४० तोला सफेद चंदन ४० तोला
शीतल चीनी ५ तोला उन्नाव ५ तोला

विधि—सबको जवकुट कर १६ सेर जल में भिगो देना। २४ घंटा भीगने के बाद पकाना। दो सेर शेष रहने पर मल कर छान लेना। एक सेर मिश्री मिलाकर कड़ाही में पका कर शरबत बना लेना।

मात्रा—६ माशा से १ तोला तक।

समय—सुबह शाम।

रोग—सुजाक, आतशक, कुष्ट, गठिया, पीनस, फोड़ा फुन्सी।

६६५—चोपचीनीसत्त्व ।

एक सेर चोप चीनी को कूटकर चलनी से छानलेना। १६ सेर पानी में उबालना। ४ सेर पानी शेष रहने पर मलकर कपड़े से छान लेना। इस छने हुये काढ़े को फिर पकाना। गाढ़ा होने पर डिब्बियों में भर लेना।

मात्रा—२ रत्ती से १ माशा तक।

समय—सुबह शाम।

अनुपान—थोड़े दूध में घोलकर।

रोग—उपदंश, सुजाक और इनसे होनेवाले रक्त विकार।

९९६—लशुनादि तैल।

लहसुन का स्वरस ५ तोला तिल का तैल १० तोला
हीरा हींग १ माशा स्याह जीरा १ तोला

विधि—तैल में मिलाकर पकाले। तैल मात्र शेष रहने पर उतार कर छानले।

मात्रा—२ से ५ बूंद।

अनुपान—गरम दूध में मिलाकर।

समय—सुबह शाम।

रोग—संधि अस्थि और मज्जागत वायु की पीड़ा, क्षय।

९९७—वातारि तैल।

पारा १० तोला गंधक १० तोला
मैनसिल १० तोला सरसों का तेल ४० तोला

विधि—सबको खरल में क्रम से घोटकर कजली बनावें। ३ सेर सरसों के तैल में सानकर मरहम जैसा बनाले। एक हाथ भरके सफेद मलमल के कपड़े में फैलादे। इस कपड़े को लोहे की लम्बी सींक में लपेट कर अग्नि लगादे। किसी पात्र में इसका तैल टपकाले। यह तैल मालिश किया जायगा।

रोग—कंपवात वात की पीड़ा, खुजली।

६९८—लहसुन का पाक ।

लहसुन	१२	तोला	गाय का दूध	२०	तोला
सोंठ	२५	तोला	छोटी पीपल	२५	तोला
त्रिफला	२५	तोला	पिपरामूल	२८	तोला
गाय का घृत	१	सेर	पुराना गुड़	१	सेर

विधि—लहसुन को पीसकर दूधमें पकावे। खोश्रा होजाने पर थोड़े घी में भून ले। अन्य सूखी दवायें महीन पीसकर घी में भूनले। गुड़ को पानी में गलाकर चाशनी बनावे। इसी चाशनी में सबको मिलाकर एक एक तोला के लड्डू बनाले।

मात्रा—१ तोला ।

अनुपान—दवा खाकर ऊपर से गरम दूध पिये।

समय—सुबह शाम ।

रोग—पक्षाघात, बातजन्य सब प्रकार की पीड़ा।

६९९—चित्रकादि वटी ।

चीत की जड़	हरड़ का छिलका
सोंठ	शुद्ध गंधक
काला नमक	त्रिफला
पिपरामूल	भुना सोहागा
पुराना गुड़	शुद्ध कुचला
भुनी हींग	शंख भस्म
नवसादर	इमली का क्षार

विधि—सबको कूट कर कपड़ेसे छान लेना। नीबू के रस से घोटकर १।१ माशा की गोली बनाना।

मात्रा—१ गोली।

समय—सुबह, शाम।

अनुपान—ऊपर से गरम दूध पीवे।

रोग—मंदाग्नि, संग्रहणी, अतिसार, शूल, वायुके विकार।

१००० — शुंठी अवलेह।

सोंठ	५ तोला	नींबू का रस	२० तोला
मुनक्का	५ तोला	मिश्री	४० तोला

विधि—सोंठ का महीन कपड़छन चूर्ण करले। मुनक्का नींबू के रस में खूब बारीक पीसकर छानले। मिश्री की चाशनी बनाले। चाशनी में सोंठ, मुनक्का, नींबू का रस डालकर शर्बत पकाले।

मात्रा—६ मासे से एक तोला तक।

समय—सुबह, शाम।

अनुपान—जल।

रोग—अरुचि, मंदाग्नि, आँव पेचिश, पेट फूलना।

दसवाँ शतक समाप्त।

प्रयोग-साहस्री समाप्त।



वैद्यों के काम की कुछ चीज़ें ।

नोट—ये चीज़ें पुस्तकों से अलग ही भेजी जाती हैं ।

थर्मामीटर ।

कितना बुखार है? कब बुखार बढ़ता घटता है? यह बात इस यन्त्र द्वारा अनाड़ी भी जान लेता है। यह मज़बूत है और मोटी लकीर का है। नं० १ का २) डाक महसूल ।=)

कांटा बांट ।

इन कांटों में आप चावल भर दवा भी बड़ी आसानी से तोल सकते हैं। बढ़िया पक्के जँचेहुये काँटे हम भेजसकते हैं। मू० छोटा कांटा ॥।) मझला कांटा १।) बड़ा कांटा २) डाक म० पेकिंग खर्च अलग लगेगा। बाटों का सेट १ रत्ती से ५ ताले तक ॥।) सब बांट पीतल के बड़े सुन्दर बने हैं और उन में नम्बर पड़े हैं ।

स्टेथिसकोप।

इसे कान में लगाकर सुनने से छाती के कफ़, क्षय रोग, न्यूमोनिया रोग, श्वास और सरदी, जकड़ा का कुल हाल आवाज़ से स्पष्ट जाना जाता है। कहां पर कफ़ जकड़ा है? कहां सांस रुकती है? कहां पर बिकार है, ये सब बातें डाक्टर इसीसे जान लेते हैं। यह छाती और पीठ पर लगाने से फेफड़े का हाल बताता है। मूल्य दोनों कानों में लगाकर देखने का ४) डाक महसूल ॥)
